आनन्द सभा पाठ्यक्रम का अध्ययन: सार्वभौमिक मूल्यों के संदर्भ में

लघुशोध प्रबंध, बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल

द्वि वर्षीय एम.एड.पाठ्यक्रम 2023-2025 की आंशिक पूर्ति हेतु

शिक्षा में स्नातकोत्तर (Master of Education - M.Ed.)

शैक्षणिक सत्र:-2023-2025

शोध पर्यवेक्षक (Supervisor)
प्रो. आयुष्मान गोस्वामी
विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग,
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

शोधकर्ता (Research Scholar)
रंजना मालवीय
द्वि-वर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल
रोल नंबर: 2406600320

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

(राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद - एन.सी.ई.आर.टी.)

NAAC द्वारा A++ ग्रेड प्राप्त संस्थान

भोपाल - 462002, मध्य प्रदेश

घोषणा (Declaration)

मैं यह घोषणा करती हूँ कि मेरे द्वारा किया गया यह अध्ययन “आनन्द सभा पाठ्यक्रम का अध्ययन: सार्वभौमिक मूल्यों के संदर्भ में” शैक्षणिक सत्र 2023-2025 के दौरान, बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.) के द्वि-वर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम की आंशिक पूर्ति के लिए किया गया है।

यह अध्ययन प्रो.आयुष्मान गोस्वामी, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एनसीईआरटी), भोपाल (म.प्र.) के मार्गदर्शन एवं पर्यवेक्षण में संपन्न हुआ है।

मैं यह भी घोषणा करती हूँ कि मेरे द्वारा किया गया यह शोध कार्य मौलिक है। यह शोध प्रबंध मैंने किसी अन्य संस्था/विश्वविद्यालय से किसी उपाधि या डिप्लोमा हेतु प्रस्तुत नहीं किया है।

तिथि (Date):

भोपाल

रंजना मालवीय

छात्रा द्वि-वर्षीय एम.एड.

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान,

प्रमाणपत्र (Certificate)

यह प्रमाणित किया जाता है कि रंजना मालवीय, दो वर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम (सत्र 2023-2025) की छात्रा, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल ने मेरे मार्गदर्शन एवं पर्यवेक्षण में अपना शोधकार्य "आनन्द सभा पाठ्यक्रम का अध्ययन: सार्वभौमिक मूल्यों के संदर्भ में" विषय पर पूर्ण किया है।

यह शोधकार्य मौलिक, प्रामाणिक एवं मूल्यांकन हेतु प्रस्तुत करने के लिए है।

तिथि:

स्थान: भोपाल

प्रो. आयुष्मान गोस्वामी

विभागाध्यक्ष ,शिक्षा विभाग

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान

आभार (Acknowledgement)

मैं अपने मार्गदर्शक प्रो.आयुष्मान गोस्वामी, विभागाध्यक्ष, शिक्षा विभाग, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (NCERT), भोपाल (म.प्र.) के प्रति अपनी गहरी कृतज्ञता और सम्मान व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने इस शोधकार्य को पूर्ण करने में निरंतर उत्साहवर्धन, सहायक मार्गदर्शन और अमूल्य सहयोग प्रदान किया। वे मेरे लिए इस शोधकार्य के दौरान प्रेरणा का स्रोत और मार्गदर्शक शक्ति रहे हैं।

मैं प्रो. शिव कुमार गुप्ता, प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल, प्रो. जयदीप मंडल, पूर्व-प्राचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल, प्रो. अयुष्मान गोस्वामी, शिक्षा विभागाध्यक्ष तथा प्रो. अयुष्मान गोस्वामी, अनुसंधान संकायाध्यक्ष की आभारी हूँ जिन्होंने अध्ययन हेतु पर्याप्त शैक्षणिक संसाधन और वातावरण प्रदान किया।

मैं प्रो. रत्नमाला आर्य, डॉ. एन.सी. ओझा, डॉ. राजेश कुमार, डॉ. मंजू, डॉ. सौरभ कुमार एवं अन्य संकाय सदस्यों की भी आभारी हूँ, जिन्होंने अपने सुझावों व सहयोग से इस शोधकार्य की सफलता सुनिश्चित की।

मैं डॉ. पी.के. त्रिपाठी, डिप्टी लाइब्रेरियन एवं पुस्तकालय के समस्त कर्मचारियों की भी अत्यंत आभारी हूँ, जिन्होंने शोधकार्य से संबंधित स्रोत सामग्री उपलब्ध कराने में पूर्ण सहयोग प्रदान किया।

राज्य आनंद संस्थान (Rajya Anand Sansthan), आनन्द विभाग, भोपाल, मध्यप्रदेश शासन एवं वहाँ की Universal Human Values (UHV) टीम का भी मैं विशेष आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके द्वारा आयोजित प्रशिक्षण, कार्यशालाएँ तथा परामर्श सत्रों ने मुझे “सार्वभौमिक मानव मूल्य” की अवधारणा को गहराई से समझने में अत्यंत सहायता प्रदान की।

मैं उन समस्त लेखकों एवं शोधकर्ताओं की भी ऋणी हूँ, जिनके कार्यों ने मेरे ज्ञान को समृद्ध किया एवं शोधकार्य में उपयोगी सिद्ध हुए। मैं विशेष रूप से अपने माता-पिता और परिवारजनों की आभारी हूँ, जिनके बिना शर्त प्रेम, प्रोत्साहन और आशीर्वाद ने मुझे इस शोधकार्य को पूरा करने की शक्ति दी। मैं अपने मित्रों की भी आभारी हूँ, जिनके सहयोग और प्रेरणा ने इस शोध को पूर्णता प्रदान की।

तिथि: रंजना मालवीय

स्थान: भोपाल द्वि-वर्षीय एम.एड.

आनंद सभा
सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों से आनंद की ओर

पाठ्य-पुस्तक (कक्षा-10)

राज्य आनंद संस्थान, आनंद विभाग, मध्य प्रदेश शासन

अनुक्रमणिका (INDEX)

अध्याय - 1	**प्रस्तावना**	**07-24**
	1.1 परिचय	07
	1.2 आनंद सभा की पृष्ठभूमि	12
	1.3 अध्ययन संबंधित प्रमुख अवधारणाएं उनके शैक्षणिक / दार्शनिक दृष्टिकोण	14
	1.4 अध्ययन की आवश्यकता और अध्ययन का औचित्य	16
	1.5 समस्या कथन	17
	1.6 अध्ययन का उद्देश्य	18
	1.7 शोध प्रश्न	18
	1.8 प्रमुख शब्दावली और परिभाषाएँ	19
	1.9 अध्ययन का महत्व	22
	1.10 अध्ययन की सीमाएँ	23
अध्याय -2	**साहित्य समीक्षा**	**25-45**
	2.1 सैद्धांतिक पृष्ठभूमि	25
	2.2 संबंधित पूर्ववर्ती अध्ययन	28
	2.3 शोध में अंतराल	38
अध्याय- 3	**शोध पद्धति**	**46-54**

	3.1 शोध प्रकृति	46
	3.2 नमूना	47
	3.3 उपकरण	49
	3.4 डाटा संग्रहण की विधि	50
	3.5 डाटा विश्लेषण की प्रक्रिया	51
	3.6 नैतिक विचार	53
अध्याय -4	**पाठ्यपुस्तक सामग्री विश्लेषण**	**55-86**
	अध्याय 1: मूल्य शिक्षा को समझना	**59**
	अध्याय 2: स्व-अन्वेषण – मूल्य शिक्षा की प्रक्रिया	**61**
	अध्याय 3: मानव की मूल चाहना एवं उसकी पूर्ति	**66**
	अध्याय 4: सुख और समृद्धि को समझना – इनकी निरंतरता और पूर्ति के लिए कार्यक्रम	**71**
	अध्याय 5: मानव को स्वयं और शरीर के सह-अस्तित्व के रूप में समझना	**75**
	अध्याय 6: स्वयं में व्यवस्था – 'स्वयं(मैं)' को समझना	**77**
	अध्याय 7: 'शरीर' के साथ 'मैं' की व्यवस्था – स्वास्थ्य और संयम को समझना	**81**
	अध्याय 8 (अ): मानव-मानव संबंध में मूल्य – ममता और वात्सल्य	**82**
	अध्याय 8 (ब): मानव-मानव संबंध में पूर्ण मूल्य – प्रेम	**84**
	अध्याय 9: समाज में व्यवस्था – सार्वभौमिक मानवीय व्यवस्था को समझना	**85**
	अध्याय 10: प्रकृति में व्यवस्था – अंतर्संबंध, स्व-नियंत्रण और परस्पर-पूरकता को समझना	**85**

	अध्याय 11: अस्तित्व में व्यवस्था – विभिन्न स्तरों पर पूर्ण सह-अस्तित्व को समझना	**86**
अध्याय -5	**चर्चा एवं सुझाव**	**87-92**
	5.1 चर्चाएं	88
	5.2 मुख्य निष्कर्ष	89
	5.3 सुझाव	91
अध्याय -6	**निष्कर्ष और अनुशंसाएं**	**93-108**
	6.1 भविष्य हेतु संकेत	92
	6.2 सिफ़ारिशे	94
	6.3 आनन्द सभा पाठ्यक्रम की उपयोगिता/ सारांश	96
	सबन्धित छायाचित्र, अख़बार समाचार, सोशल मीडिया समाचार	**109-115**

अध्याय 1
प्रस्तावना

1.1परिचय:-

मानव समाज के विकास में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान रहा है| शिक्षा न केवल ज्ञान प्रदान करती है, बल्कि मानवीय मूल्यों, नैतिकता और सामाजिक सद्भाव को भी बढ़ावा देती है| इसी संदर्भ में "आनंद सभा पाठ्यक्रम" एक ऐसी शैक्षिक पहल है, जो आध्यात्मिक ज्ञान, सद्गुणों और सार्वभौमिक मूल्यों को केंद्र में रखकर व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर बल देता है| आनंद सभा का उद्देश्य मानव जीवन में आनंद, शांति, निरन्तर सुख और आत्मिक उन्नति के सिद्धांतों को स्थापित करना है| यह पाठ्यक्रम न केवल मानवीय शिक्षाओं पर आधारित है, बल्कि इसमें विज्ञान, दर्शन और मनोविज्ञान के तत्वों को भी समाहित किया गया है, ताकि यह आधुनिक समय की चुनौतियों के साथ तालमेल बिठा सके| इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य आनंद सभा पाठ्यक्रम में निहित शिक्षाओं का विश्लेषण करना है, विशेष रूप से "सार्वभौमिक मूल्यों" जैसे विश्वास , ममता, वात्सल्य, गौरव, कृतज्ञता,सत्य, न्याय, करुणा और प्रेम के संदर्भ में|

यह शोध इस बात की पड़ताल करेगा कि कैसे यह पाठ्यक्रम व्यक्ति के चरित्र निर्माण और समाज के नैतिक उत्थान में सहायक हो सकता है| आधुनिक युग में जहाँ भौतिकवाद और अर्थकेंद्रित जीवनशैली बढ़ रही है, वहाँ आनंद सभा जैसे शिक्षण कार्यक्रम मानवीय मूल्यों की पुनर्स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं| इस अध्ययन के माध्यम से हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि कैसे यह पाठ्यक्रम वैश्विक शांति और सद्भावना के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में कार्य कर सकता है| इस प्रकार, यह शोध आनंद सभा पाठ्यक्रम के दर्शन, उसकी शिक्षण पद्धति और सार्वभौमिक मूल्यों के साथ उसके समन्वय को गहराई से समझने का एक विनम्र प्रयास है|

आनन्द सभा पाठ्यक्रम सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों को शिक्षा के माध्यम से एक जीवनशैली में परिवर्तित करने का सफल प्रयास है| सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों (यूएचवी) पर यह प्रयास सभी की भलाई के लिए आत्म-विश्लेषण की परंपरा को जारी रखता है| प्रयास वर्तमान मुख्यधारा की शिक्षा में मानवीय मूल्यों को शामिल करने के लिए एक प्रभावी और सर्वमान्य विषय-वस्तु और कार्यप्रणाली विकसित करने की दिशा में है, जो कि एक लम्बे समय से महसूस की जा रही आवश्यकता है| विषय-वस्तु आत्म-अन्वेषण के लिए प्रस्तावों के रूप में है (यह क्या करें और क्या न करें का कोई सेट नहीं है)| विषय-वस्तु सार्वभौमिक, तर्कसंगत, सत्यापन योग्य, सर्वव्यापी

और मानवीय (सद्भाव की ओर ले जाती है) है|इस पद्धति में अस्तित्व में निहित सामंजस्य और सह-अस्तित्व (सही समझ) की खोज और आत्म-अन्वेषण के माध्यम से जीवन के सभी पहलुओं (मानव आचरण) में मानव की भूमिका शामिल है| सही समझ सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों का आधार बनती है और समग्र विश्व दृष्टि या 'मानव चेतना' की ओर परिवर्तन को सुगम बनाती है|व्यावसायिक नैतिकता के मुद्दों का विश्लेषण सही समझ के संदर्भ में किया जाता है, जिसमें मुख्य रूप से व्यक्तियों में नैतिक क्षमता के विकास पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जो कि प्रोत्साहन और दंड के माध्यम से व्यावसायिक नैतिकता को लागू करने के दृष्टिकोण के विपरीत है| इसका लक्ष्य केवल व्यक्तिगत परिवर्तन से मानवीय चेतना तक का परिवर्तन नहीं है, बल्कि सामाजिक स्तर पर मानवीय समाज का परिवर्तन भी है| इसे स्वयं के अधिकार पर आत्म-अन्वेषण के प्रस्ताव के रूप में प्रस्तुत किया गया है| यह सामंजस्य का एक व्यवस्थित अध्ययन है - व्यक्ति से लेकर परिवार, समाज और प्रकृति/अस्तित्व तक|

यह प्राकृतिक नियमों के बारे में, वास्तविकता के बारे में, जैसी वह है, एक प्रस्ताव है - जिसे कोई भी अपने अधिकार से खोज और समझ सकता है| यह व्यक्ति की अपनी स्वाभाविक स्वीकृति के आधार पर आत्म-सत्यापन की प्रक्रिया का अनुसरण करता है, जिससे आत्मविश्वास और आत्म-विकास होता है|यह छात्रों को यह जानने के लिए प्रोत्साहित करता है कि वे क्या मूल्यवान मानते हैं| तदनुसार, वे अपने जीवन की वास्तविक स्थितियों में मूल्यवान और सतही के बीच भेद करने में सक्षम होते हैं| यह विद्यार्थियों को जीवन के प्रत्येक पहलू (व्यक्ति, परिवार, समाज, प्रकृति/अस्तित्व) में मानव के अंतर्निहित मूल्य को खोजने और समझने में सक्षम बनाता है .

आनन्द सभा : सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों पर आधारित पाठ्यपुस्तकें

पाठ्य पुस्तकें (मूल विषयवस्तु)

आनंद सभा - सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के साथ आनंद की ओर -पाठ्यपुस्तक (कक्षा 9) हिंदी

आनंद सभा - सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के साथ आनंद की ओर - अभ्यास पुस्तक- (कक्षा 9) हिंदी

आनंद सभा - सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के साथ आनंद की ओर - पाठ्यपुस्तक (कक्षा 10) हिंदी

अभ्यास पुस्तक आनंद सभा - सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के साथ आनंद की ओर - अभ्यास पुस्तक- (कक्षा10)हिंदी

कक्षा 11 आनंद सभा - सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के साथ आनंद की ओर -पाठ्यपुस्तक (कक्षा 11) हिंदी

आनंद सभा - सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के साथ आनंद की ओर -अभ्यास पुस्तक (कक्षा 11) हिंदी

कक्षा 12 आनंद सभा - सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के साथ आनंद की ओर -पाठ्यपुस्तक (कक्षा 12)हिंदी

आनंद सभा - सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के साथ आनंद की ओर -अभ्यास पुस्तक- (कक्षा 12) हिंदी

शिक्षक मार्गदर्शिका -आनंद सभा - सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के साथ आनंद की ओर -(कक्षा 9-12) हिंदी

ये मुख्यधारा की शिक्षा के वर्तमान पाठ्यक्रम में मूल्य शिक्षा को शामिल करने के लिए एक प्रभावी और सार्वभौमिक रूप से स्वीकार्य सामग्री और कार्यप्रणाली विकसित करने के लिए टीम द्वारा लंबे समय से की गई खोज, कल्पना और प्रयोग का परिणाम हैं| इस प्रकार, यह सूचना और कौशल के साथ-साथ शिक्षा में मानवीय मूल्यों को शामिल करने की लंबे समय से महसूस की जा रही और तत्काल आवश्यकता का जवाब है| शेष अस्तित्व के मुकाबले मानवीय वास्तविकता की सही समझ पर ध्यान केंद्रित करने वाली एक अनूठी कार्यप्रणाली को पाठ्य पुस्तकों में व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत किया गया है| इसमें संपूर्ण अस्तित्व में निहित सद्भाव और सह-अस्तित्व की खोज शामिल है जो सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों का आधार बनती है और समग्र और मानवीय विश्व-दृष्टि की ओर परिवर्तन की सुविधा प्रदान करती है| यह समग्र दृष्टि तब सूचना और कौशल के अवशोषण, उपयोग के लिए एक मार्गदर्शक के रूप में काम कर सकती है|

शिक्षा का अंतिम लक्ष्य ऐसे नागरिकों को तैयार करना है जिनमें योग्यता और प्रतिबद्धता दोनों हों, जो अपने विकास की जिम्मेदारी लेने के साथ-साथ अपने परिवार, समाज, राष्ट्र, दुनिया और प्राकृतिक पर्यावरण के विकास में योगदान देने के लिए तैयार हों, साथ ही कौशल और मूल्यों के बीच सामंजस्यपूर्ण संतुलन हासिल करें| जीवन के लक्ष्यों की स्पष्ट समझ और उन्हें साकार करने के लिए आवश्यक योग्यता हासिल करना बहुत ज़रूरी है| यूएचवी(universal human value) सामग्री मानवीय मूल्यों को स्थापित करने का एक प्रभावी तरीका साबित हुई है| उद्देश्य, खुशी और समृद्धि की स्पष्टता में वृद्धि,एक अधिक समावेशी, समग्र और मानवीय विश्व दृष्टिएक आंतरिक दिशा-निर्देशक, उनकी स्वाभाविक स्वीकृति, इसलिए स्वतंत्रता (जिसे मोटे तौर पर मुक्ति भी कहा जाता है) की भावना और जिम्मेदारी की बढ़ी हुई भावना रिश्तों के प्रति प्रतिबद्धता की भावना में वृद्धि, विशेष रूप से परिवार, कार्यस्थल और समाज में विश्वास, सम्मान, कृतज्ञता, प्रेम और करुणा को समझकर उत्कृष्टता के प्रति प्रतिबद्धता,उत्पादकता में वृद्धि समृद्धि की भावना में वृद्धि, समाज और राष्ट्र के विकास के प्रति जिम्मेदारी की भावना, बड़ों, मानव संस्कृति और धर्म के प्रति गहरी कृतज्ञता और प्रतिबद्धता की भावना,श्रम, साथियों

के दबाव, तनाव और अवसाद से राहत साथ ही, शैक्षणिक संस्थान में यूएचवी के व्यापक प्रसार से निम्नलिखित रूप में सकारात्मक प्रभाव पड़ा है:सर्वांगीण भागीदारी और उत्पादकता में सुधार,बेहतर शैक्षणिक ईमानदारी. और स्वैच्छिक उपस्थिति में वृद्धि, बढ़ी हुई जिम्मेदारी और टीमवर्क, रोजगार क्षमता में वृद्धि,विनाशकारी प्रवृत्तियों में कमी,अवसाद, आत्महत्या के विचार जैसे लक्षणों में कमी

व्यापक अल्पकालिक और कुछ दीर्घकालिक अध्ययन किए गए हैं और किए जा रहे हैं|

आनन्द सभा पाठ्यक्रम, "सार्वभौमिक मानवीय मूल्य से आनंद की ओर" मध्यप्रदेश में राज्य आनन्द संस्थान, आनन्द विभाग भोपाल तथा UHV के अंतर्गत विकसित एक शैक्षणिक पहल है, जिसका मुख्य उद्देश्य छात्रों में मानवीय मूल्यों, सामंजस्यपूर्ण जीवन-दृष्टि, और नैतिक क्षमता का विकास करना है| यह पाठ्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के लक्ष्यों के अनुरूप है, जो संज्ञानात्मक, सामाजिक, नैतिक, और भावनात्मक क्षमताओं के समग्र विकास पर बल देता है | इसका लक्ष्य केवल ज्ञान प्रदान करना नहीं, बल्कि छात्रों को स्वयं के अंदर सत्य की खोज करने, प्राकृतिक सामंजस्य को समझने, और एक न्यायपूर्ण समाज के निर्माण में योगदान देने के लिए प्रेरित करना है | सभी मानव सुखी रहना चाहते हैं: निरन्तर सुखी रहना चाहतें है |इसे हम में से हर एक अपने में जाँच कर देख सकते है | इस निरन्तर सुख को ही आनन्द कहा है|

नन्द शब्द का अर्थ है: प्रसन्न रहना, सुखी रहना|

आनन्द का अर्थ है- सुख के अभाव का अभाव अर्थात् निरन्तर सुख |

आनन्द = अ +अ +नन्द

= अभाव +अभाव + सुख

= सुख के अभाव का अभाव = निरन्तर सुख

सुख के बारे में वर्तमान में प्रचलित सोच यह है कि सुख मिलता है :

अनुकूल संवेदना के आस्वादन से,दूसरो से भाव पाकर,सुविधा से,उसके भोग से| इसलिए प्रचलित कार्यक्रम सुविध संग्रह (असीमित, किसी भी तरह) के रूप में दिखाई देता है! परन्तु, इन आधार पर कितना ही प्रयास किया जय, कितनी ही उपलब्धि हो, इससे आनन्द, सुख की निरंतरता, को सुनिश्चित नहीं किया जा पाता | इस सोच के मूल में मान्यता है कि मानव केवल शरीर है तथा सुख शरीर से, बाहर से पायी जने वाली कोई वस्तु |

शिक्षक मार्गदर्शिका: कक्षा 9-12 के शिक्षकों के लिए विस्तृत मैनुअल, जिसमें पाठ्यक्रम को प्रभावी ढंग से पढ़ाने की विधियाँ शामिल हैं |

Sh. Praveen K Gangrade, Director Rajya Anand Sansthan | Panel Discussion on Human Values in Children

शैक्षणिक पद्धति :- इस पाठ्यक्रम की मुख्य पद्धति 'स्व-अन्वेषण' पर आधारित है| यह छात्रों को "क्या सही है?" और "क्या मूल्यवान है?" जैसे प्रश्नों के माध्यम से स्वयं की प्राकृतिक स्वीकृति (Natural Acceptance) को समझने के लिए प्रोत्साहित करता है| इसके अंतर्गत: -तर्कसंगत एवं सत्यापन योग्य प्रस्ताव, नैतिकता को नियमों के बजाय प्राकृतिक नियमों के रूप में प्रस्तुत किया जाता है |

1. स्व-अन्वेषण पर आधारित: यह सिर्फ नियमों का सेट नहीं है बल्कि स्व-अन्वेषण के प्रस्ताव हैं

2. सार्वभौमिक और तर्कसंगत: सामग्री सार्वभौमिक, तर्कसंगत, सत्यापन योग्य, सर्वव्यापी और मानवीय है

3. सामंजस्य की खोज: अस्तित्व में निहित सामंजस्य और सह-अस्तित्व की खोज

4. स्व-सत्यापन: स्वयं के प्राकृतिक स्वीकृति के आधार पर स्व-सत्यापन की प्रक्रिया

5. मूल्य-आधारित निर्णय लेने की क्षमता: छात्रों को वास्तविक जीवन स्थितियों में मूल्यों के आधार पर निर्णय लेने में सक्षम बनाना

- सामाजिक परिवर्तन का लक्ष्य: व्यक्तिगत परिवर्तन के साथ-साथ समग्र समाज को मानवीय बनाने पर ध्यान |

मूलभूत सिद्धांत

-समग्र जीवन दृष्टि: व्यक्ति, परिवार, समाज, और प्रकृति के बीच सामंजस्य को समझना |

-मानवीय भावनाओं का पोषण: करुणा, सहानुभूति, और न्याय की भावना को विकसित करना|

-कौशल विकास : मूल्यों को दैनिक जीवन में लागू करने के लिए आवश्यक व्यावहारिक कौशल

यह पाठ्यक्रम 1980 के दशक से स्वैच्छिक प्रयासों के माध्यम से विकसित किया गया है और शिक्षकों, छात्रों, तथा समुदायों के सहयोग से निरंतर प्रगति पर है| इसका दीर्घकालिक लक्ष्य एक ऐसे समाज का निर्माण करना है जहाँ "स्वार्थ" (व्यक्तिगत कल्याण), "परार्थ" (दूसरों का कल्याण), और "परमार्थ" (सार्वभौमिक कल्याण) एक-दूसरे के पूरक हों |

1.2 आनंद सभा की पृष्ठभूमि :-

आनंद सभा एक शैक्षिक पहल है जिसे UHV (Universal Human Values) संगठन द्वारा विकसित किया गया है, जिसका उद्देश्य स्कूली शिक्षा में सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों को समाहित करना है| यह पाठ्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के दर्शन के अनुरूप है, जो समग्र शिक्षा पर जोर देती है | NEP 2020 के अनुसार, "शिक्षा प्रणाली का उद्देश्य तर्कसंगत विचार और कार्य करने में सक्षम, करुणा और सहानुभूति रखने वाले, मजबूत नैतिक आधार और मूल्यों वाले अच्छे मनुष्यों का विकास करना है" |

आनंद सभा का दर्शन::

1. जीवन का समग्र, मानवीय दृष्टिकोण - व्यक्ति से लेकर ब्रह्मांड तक सामंजस्य

2. मानवीय मूल्य- मानवीय भावनाएं, समग्र दृष्टि पर आधारित सहभागिता

3. कौशल- मानव अस्तित्व के सभी स्तरों स्वयं, परिवार,समाज,प्रकृति पर इन मूल्यों के साथ पारस्परिक संबंध में रहने के लिए आवश्यक

*आनंद सभा पाठ्यक्रम सामग्री~

मुख्य पाठ्यपुस्तकें (हिंदी में उपलब्ध):

- कक्षा 9: आनंद सभा - सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों से आनन्द की ओर
- कक्षा 10: आनंद सभा - सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों से आनन्द की ओर
- कक्षा 11: आनंद सभा - सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों से आनन्द की ओर
- कक्षा 12: आनंद सभा - सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों से आनन्द की ओर

*अभ्यास पुस्तिकाएं (हिंदी में उपलब्ध):

- कक्षा 9-12 के लिए प्रायोगिक गतिविधियों से युक्त कार्यपुस्तिकाएँ

*शिक्षक मार्गदर्शिका:

- कक्षा 9-12 के लिए आनंद सभा शिक्षक मैनुअल (हिंदी में)

*शिक्षण सहायक सामग्री

यूट्यूब पर वीडियो उपलब्ध है जिसमें स्कूल वर्कशॉप और प्रतिभागियों के फीडबैक शामिल हैं |

सार्वभौमिक मूल्यों के संदर्भ में महत्व-

आनंद सभा पाठ्यक्रम निम्नलिखित सार्वभौमिक मूल्यों को विकसित करने पर केंद्रित है:

- नैतिक मूल्य : ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, न्याय

- सामाजिक मूल्य: सहयोग, सम्मान, सहानुभूति

- भावनात्मक मूल्य: आत्म-जागरूकता, आत्म-नियंत्रण

- बौद्धिक मूल्य: तर्कसंगत सोच, रचनात्मकता

- आध्यात्मिक मूल्य: आंतरिक शांति, सामंजस्य

-मानव एकता को सुदृढ़ करते हैं: सभी मनुष्यों के बीच आंतरिक संबंध को पहचानना

-सामंजस्यपूर्ण सह-अस्तित्व की नींव: मानव, प्रकृति और ब्रह्मांड के बीच संतुलन

-नैतिक दिशा-निर्देश : जीवन में निर्णय लेने के लिए स्पष्ट मानक प्रदान करना

-सामाजिक न्याय का आधार: समानता, निष्पक्षता और करुणा को बढ़ावा देना

-वैश्विक शांति का मार्ग : संघर्षों को समाधान के लिए साझा मूल्यों पर आधारित दृष्टिकोण

आनंद सभा पाठ्यक्रम स्कूली शिक्षा में मूल्य-आधारित शिक्षा को एक व्यवस्थित ढांचा प्रदान करता है| यह छात्रों को न केवल शैक्षणिक रूप से बल्कि मानवीय मूल्यों के साथ एक संतुलित व्यक्तित्व विकसित करने में सहायता करता है| UHV.org.in के सहयोग से राज्य आनंद संस्थान , भोपाल ,आनन्द विभाग, मध्यप्रदेश शासन द्वारा प्रस्तावित लोक शिक्षण संचालनालय, शिक्षा विभाग, भोपाल, मध्यप्रदेश द्वारा प्रदान की गई यह सामग्री शिक्षकों और छात्रों दोनों के लिए एक मूल्यवान संसाधन है जो भारतीय संदर्भ में सार्वभौमिक मूल्यों को समझना और उन्हें दैनिक जीवन में लागू करना चाहते हैं|

राज्य आनंद संस्थान, आनन्द विभाग, मध्यप्रदेश शासन, भोपाल ने सार्वभौमिक मूल्यों के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है| संस्थान के प्रमुख कार्यक्रमों में शामिल हैं:

1. शिक्षक प्रशिक्षण कार्यशालाएं: स्कूल शिक्षकों को आनंद सभा पाठ्यक्रम को प्रभावी ढंग से पढ़ाने के लिए प्रशिक्षित करना

2. छात्र चर्चा : मूल्य-आधारित शिक्षा पर केन्द्रित गतिविधियाँ और चर्चाएं online और offline

3. सामुदायिक जागरूकता कार्यक्रम: आनन्द की ओर कार्यक्रम तत्जा पारिवारिक कार्यशाला के माध्यम से माता-पिता और समुदाय के सदस्यों को सार्वभौमिक मूल्यों के बारे में शिक्षित करना

4.संसाधन विकास: स्थानीय संदर्भ में उपयुक्त शिक्षण सामग्री का निर्माण

RAS-Program With UHV Day-1 Session-3

D3 S1 Recap and Q&A

CEO Rajya Anand Sansthan

आनंद सभा पाठ्यक्रम द्वारा राज्य आनंद संस्थान, आनन्द विभाग,भोपाल का प्रयास सार्वभौमिक मूल्यों को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है| यह दृष्टिकोण न केवल छात्रों के व्यक्तित्व विकास में सहायक है, बल्कि एक सामंजस्यपूर्ण और न्यायपूर्ण समाज के निर्माण में भी योगदान देता है| UHV टीम और राज्य आनंद संस्थान का ह प्रयास राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों के साथ पूर्णतः संगत है जो "समग्र और बहु-विषयक शिक्षा" पर बल देती है ।

1.3. अध्ययन से संबंधित प्रमुख अवधारणाएँ एवं उनके शैक्षणिक/दार्शनिक स्रोत:-

1. सार्वभौमिक मानव मूल्य :

स्रोत: AICTE का “Universal Human Values” मॉड्यूल (UHV-I & UHV-II) प्रो. आर. आर. गवाने, प्रो. वी. एस. बेहरे (मानव मूल्य शिक्षा)

NEP 2020 - मूलभूत मूल्यों पर बल

अवधारणा: सभी मनुष्यों के भीतर एक समान भावनात्मक और नैतिक आधार होता है जो स्थान, समय, जाति या धर्म से परे होता है|

प्रमुख मूल्य: विश्वास, गौरव, स्नेह, ममता, वात्सल्य,करुणा , सम्मान, न्याय, और प्रेम|

2. मानववाद :

विचारधारा:रबिन्द्रनाथ ठाकुर का शैक्षिक मानववाद ,स्वामी विवेकानंद की “मानवता की सेवा ही ईश्वर सेवा हैं|

•महात्मा गांधी का नैतिक मानववाद मानता है कि हर व्यक्ति में नैतिकता और अच्छाई का बीज स्वाभाविक रूप से होता है| आनंद सभा विद्यार्थियों में उसी चेतना को जाग्रत करने का प्रयास है|

स्रोत:

लॉरेंस कोलबर्ग का नैतिक विकास सिद्धांत (Kohlberg’s Theory of Moral Development) अरस्तू की नैतिकता (Virtue Ethics) भारतीय दर्शन: गीता में निष्काम कर्म की अवधारणा:

व्यक्ति को नैतिक निर्णय लेने और स्वयं के कर्मों के प्रति उत्तरदायी बनाने की प्रक्रिया।

4. जीवन कौशल शिक्षा :

स्रोत: WHO द्वारा निर्दिष्ट 10 जीवन कौशल

UNESCO के “Learning to Be” और “Learning to Live Together” सिद्धांत

-मुख्य कौशल: आत्म-जागरूकता, निर्णय-निर्माण, संवाद कौशल, सहानुभूति, समस्या समाधान, तनाव प्रबंधन

*आनंद सभा में प्रयोग: इन कौशलों को विद्यार्थियों में व्यवहारिक गतिविधियों, स्व-अन्वेक्षण, संवाद, अनुभव साझा करने द्वारा विकसित किया जाता है।

5. शिक्षा में नैतिक मूल्य (Moral Education in Pedagogy)

(i) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) और मानवीय मूल्य

NEP 2020 शिक्षा को एक समावेशी, मूल्य-आधारित और छात्र-केंद्रित प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करती है। यह नीति विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व, और संवेदनशीलता को विकसित करने पर बल देती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत में शिक्षा को नैतिकता, समानता, समावेशन, और व्यक्तित्व विकास की ओर केंद्रित करती है।नीति में शिक्षा को “पूर्ण मानव क्षमता के विकास”, “न्यायपूर्ण और समावेशी समाज के निर्माण” और “राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा” देने वाला माध्यम माना गया है ।

NEP 2020 के अनुसार: इस नीति के मूलभूत सिद्धांतों में “नैतिक और मानवीय मूल्यों का विकास”, “जीवन के लिए शिक्षा” और “चरित्र निर्माण” को प्रमुख स्थान दिया गया है। आनंद सभा पाठ्यक्रम इसी दृष्टिकोण को व्यवहारिक स्तर पर लागू करता है।NEP का यह दृष्टिकोण ‘आनंद सभा’ पाठ्यक्रम में प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है, जो “तृप्तिपूर्ण जीवन”, “कर्तव्यों की पहचान”, और “समग्र दृष्टिकोण” पर केंद्रित है ।

•यह नीति शिक्षा को केवल सूचनात्मक नहीं बल्कि मूल्य-आधारित, समावेशी, और समग्र विकास की ओर उन्मुख बनाना चाहती है।

•नीति में विशेष जोर दिया गया है कि छात्रों में नैतिकता, सहानुभूति, सहिष्णुता, और सेवा-भावना जैसे मूल्यों को विकसित किया जाए। आनंद सभा पाठ्यक्रम इसी नीति के आदर्शों से मेल खाता है। नैतिक शिक्षा पाठ्यक्रम - NCERT व राज्य बोर्ड्स

शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण और समाजोपयोगी नागरिकों का निर्माण है।

6. **समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण** : एमिल दुर्खीम (Durkheim): नैतिकता और सामाजिक सामंजस्य ,पाउलो फ्रेरे (Pedagogy of the Oppressed),भारतीय सामाजिक व्यवस्था में गुरुकुल परंपरा: व्यक्ति समाज का एक सक्रिय घटक है| आनंद सभा बच्चों में सामाजिक संवेदनशीलता, सहयोग और समरसता का विकास करती है|

7. संवाद आधारित शिक्षा : पाउलो फ्रेरे का "संवाद ही मुक्ति का मार्ग है|" आनंद सभा में छात्रों को खुलकर अनुभव साझा करने का अवसर दिया जाता है| भयमुक्त वातावरण,सक्रिय सहभागिता, विचारों का आदान-प्रदान|

8. भारतीय संस्कृति और मूल्यपरक शिक्षा : डॉ. एपीजे अब्दुल कलाम - Wings of Fire, Ignited Minds,महर्षि अरविंद का "Integral Education",स्वामी विवेकानंद का शैक्षिक दृष्टिकोण: संस्कारों, परंपराओं और मूल्य-आधारित जीवन शैली को शिक्षा का हिस्सा बनाना|

"आनन्द सभा" केवल एक सह-शैक्षिक गतिविधि नहीं है, बल्कि यह मानव मूल्यों के व्यवहारिक अनुप्रयोग का एक सशक्त माध्यम है| यह पाठ्यक्रम विभिन्न शैक्षिक व दार्शनिक विचारधाराओं का समन्वय करता है – मानववाद, नैतिकता, संस्कृति, जीवन कौशल और समाजशास्त्र – और विद्यार्थियों को एक पूर्ण मानव के रूप में विकसित करने की दिशा में कार्य करता है|

1.4 अध्ययन की आवश्यकता और अध्ययन का औचित्य :

"आनंद सभा" इन समस्याओं के समाधान हेतु एक सशक्त मंच प्रदान करती है: यह मूल्य आधारित संवाद का अवसर देती है|इसमें प्रतिस्पर्धा नहीं, सहयोग और सहभावना को महत्व दिया जाता है|छात्र अपनी भावनाओं को व्यक्त कर पाते हैं, जिससे मानसिक तनाव कम होता है|नैतिक कहानियों, आत्म-चिंतन और अनुभव साझा करने से चरित्र निर्माण की नींव पड़ती है| आज जब समाज नैतिक दिशाहीनता से जूझ रहा है, ऐसे समय में आनंद सभा जैसी पहलें विद्यार्थियों को संवेदनशील, जागरूक और उत्तरदायी नागरिक बनने की दिशा में प्रेरित कर सकती हैं| इस अध्ययन की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि यह उस मूल्य आधारित शिक्षा की पुनर्स्थापना की संभावना तलाशता है जो वर्तमान में संकट में है|

मूल्यों के क्षरण की वर्तमान स्थिति : आज की वैश्विक प्रतिस्पर्धा और भौतिकतावादी दृष्टिकोण ने शिक्षा के मूल उद्देश्य को सीमित कर दिया है| शिक्षा अब व्यक्तित्व निर्माण के बजाय नौकरी, अंक, और सामाजिक प्रतिष्ठा अर्जित करने का माध्यम बनती जा रही है| इसका प्रत्यक्ष परिणाम यह है कि विद्यालयों में पढ़ने वाले छात्र-छात्राओं में सहानुभूति, करुणा, आत्म-अनुशासन, सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे मूल्य नगण्य हो गए हैं

प्रमुख कारण : अत्यधिक प्रतिस्पर्धा: विद्यार्थियों पर परीक्षा और प्रदर्शन का बोझ इतना अधिक है कि उनमें सहयोग, सहानुभूति जैसे भावों का विकास नहीं हो पाता|मीडिया और सोशल नेटवर्क का प्रभाव: त्वरित संतुष्टि, आभासी जीवन और आत्मकेंद्रित व्यवहार को बढ़ावा देता है|परिवार और समाज में संवादहीनता: संयुक्त परिवार टूटने, माता-पिता के व्यस्त जीवन और संवाद की कमी ने मूल्यों के पोषण को बाधित किया है|शिक्षा का व्यवसायीकरण: शिक्षा संस्थानों का उद्देश्य अब मूल्यों के बजाय टॉपर्स और पैकेज बनाना हो गया हैं|

* **सार्वभौमिक मानव मूल्यों के व्यवहारिक अनुप्रयोग की आवश्यकता :** "सत्य, अहिंसा, न्याय, सम्मान, करुणा" जैसे सार्वभौमिक मूल्य शैक्षिक पाठ्यक्रमों में तो दर्शित होते हैं, परंतु उनके व्यवहारिक अभ्यास के लिए विद्यार्थियों को सशक्त मंच नहीं मिल पाता| आनंद सभा उस शून्यता की पूर्ति करती है |

*__संवाद-आधारित शिक्षण की पुनर्प्राप्ति :__ पारंपरिक भारतीय शिक्षा व्यवस्था (गुरुकुल) में संवाद, आत्ममंथन और जीवनोपयोगी शिक्षण का महत्व था| आज की व्यावसायिक शिक्षा व्यवस्था में यह पक्ष लगभग लुप्त हो गया है| आनंद सभा में संवाद, कहानी, अनुभव-साझाकरण और आत्म-चिंतन द्वारा विद्यार्थियों को समावेशी और सजीव शिक्षण का अनुभव प्रदान करती है|

* **राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उद्देश्यों के अनुरूप:** NEP 2020 में स्पष्ट उल्लेख है कि शिक्षा को मूल्य आधारित, अनुभव आधारित और सहभागितामूलक बनाया जाएगा| आनंद सभा न केवल इसका प्रतिबिंब है, बल्कि एक आदर्श क्रियान्वयन उदाहरण भी है|

*__विद्यालयी वातावरण में सकारात्मक परिवर्तन की आवश्यकता:__ विद्यालय में यदि केवल शैक्षणिक प्रदर्शन पर ज़ोर हो, तो विद्यार्थी दबाव महसूस करता है| आनंद सभा में वह अपनी बात कह सकता है, स्वयं को व्यक्त कर सकता है, और दूसरों की बात सुनने की कला सीखता है| इससे भावनात्मक स्वास्थ्य और सामाजिक कुशलता दोनों का विकास होता है|

यह अध्ययन आवश्यक है क्योंकि यह केवल पाठ्यक्रम का विश्लेषण ही नहीं करता, बल्कि शिक्षा के उस पहलू की पहचान करता है जो आज लुप्तप्राय है - मूल्य, मनुष्यता और संवाद| आनंद सभा एक ऐसी पहल है जो विद्यार्थियों को संपूर्ण मानव बनने की दिशा में प्रेरित करती है, और यह अध्ययन इस पहल की प्रभावशीलता को उजागर करने के लिए अत्यंत प्रासंगिक है|

1.5 समस्या कथन :- आनंद सभा पाठ्यक्रम का अध्ययन: सार्वभौमिक मूल्यों के संदर्भ में

1.6 अध्ययन का उद्देश्य :- सार्वभौमिक मानवीय मूल्य (UHV) आनन्द सभा पाठ्यक्रम एक शैक्षणिक पहल है, जिसका उद्देश्य छात्रों में मानवीय मूल्यों, नैतिकता, और जीवन के प्रति समग्र दृष्टिकोण का विकास करना है| यह पाठ्यक्रम आत्म-अवलोकन और आत्म-खोज की प्रक्रिया के माध्यम से छात्रों को स्वयं के भीतर और अपने आस-पास की दुनिया के साथ सामंजस्य स्थापित करने में सहायता करता है|

1.जीवन के प्रति समग्र दृष्टिकोण विकसित करना: छात्रों को जीवन, परिवार, समाज, और प्रकृति के साथ अपने संबंधों को समझने में सहायता करना|

2.स्व-परावर्तन को सुदृढ़ करना: छात्रों को आत्म-विश्लेषण के माध्यम से अपने मूल्यों और विश्वासों की समीक्षा करने के लिए प्रेरित करना|

3.नैतिक और मूल्य-आधारित जीवन के प्रति प्रतिबद्धता विकसित करना: छात्रों को नैतिकता और मानवीय मूल्यों के आधार पर जीवन जीने के लिए प्रेरित करना|

4.सतत् सुख और समृद्धि की समझ प्रदान करना: छात्रों को यह समझने में सहायता करना कि स्थायी सुख और समृद्धि कैसे प्राप्त की जा सकती है|

5.प्राकृतिक स्वीकृति और अनुभवजन्य सत्यापन के माध्यम से सत्य की खोज: छात्रों को अपने अनुभवों और प्राकृतिक स्वीकृति के माध्यम से सत्य की खोज करने के लिए प्रेरित करना|

"आनंद सभा" कार्यक्रम मध्यप्रदेश सरकार द्वारा कक्षा 9 और 10 के उत्कृष्ट विद्यालय एवं सी .एम.राइज वर्तामान में संदीपनी विद्यालय के छात्रों के लिए 2023-24 प्रोजेक्ट के आधार पर प्रारंभ किया गया था तथा इसकी सफलता, सकारात्मक परिणाम स्वरूप इस शैक्षणिक सत्र 2025-26 से मध्य प्रदेश के समस्त शासकीय विद्यालय हेतु कक्षा 9-10 में शुरू किया जा रहा है| इसका उद्देश्य छात्रों के भावनात्मक कल्याण, नैतिक मूल्यों और सकारात्मक सोच को बढ़ावा देना है|

1.7 शोध-प्रश्न :-

1.आनंद सभा पाठ्यक्रम का प्रमुख उद्देश्य क्या है और वह किस प्रकार सार्वभौमिक मूल्यों को बढ़ावा देता है?

2.आनंद सभा में पढ़ाए जा रहे विषय-वस्तु किन-किन सार्वभौमिक मूल्यों को प्रतिबिंबित करते हैं?

3.क्या आनंद सभा में भाग लेने वाले विद्यार्थियों के व्यवहार और सोच में सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिलता है?

4.आनंद सभा और जीवन कौशल विकास के बीच क्या संबंध है?

5.क्या आनंद सभा कार्यक्रम सभी सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों के लिए समान रूप से प्रभावी है

1.8 प्रमुख शब्दावली और परिभाषाएँ: सार्वभौमिक (Universal) शब्द का अर्थ है - ऐसा जो सभी स्थानों, समयों, और परिस्थितियों में मान्य और स्वीकार्य हो| जब हम इसे "मूल्य" (Values) के संदर्भ में प्रयोग करते हैं, तो "सार्वभौमिक मूल्य" का अर्थ होता है - ऐसे नैतिक सिद्धांत या आचरण के नियम जो दुनिया के हर समाज, संस्कृति, धर्म, और व्यक्ति के लिए समान रूप से प्रासंगिक और स्वीकार्य माने जाते हैं|

सार्वभौमिक मूल्यों की परिभाषा: "सार्वभौमिक मूल्य वे नैतिक सिद्धांत होते हैं जो मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में–जाति, धर्म, भाषा, देश, संस्कृति आदि की सीमाओं से परे–सभी के लिए समान रूप से मान्य और लाभकारी होते हैं|"

प्रमुख सार्वभौमिक मूल्य:

करुणा (Compassion)
सम्मान (Respect)
सह-अस्तित्व (Co-existence)
न्याय (Justice)
स्वतंत्रता (Freedom)
समानता (Equality)
प्रेम (Love)

प्रासंगिक उद्धरण :- "सार्वभौमिक मूल्य वे हैं, जो मानवता की साझा चेतना से उत्पन्न होते हैं और किसी भी सामाजिक, राजनीतिक या धार्मिक विभाजन से ऊपर होते हैं|"

– डॉ. आयुष्मान गोस्वामी, भारतीय मूल्य दृष्टि: एक सनातन विमर्श, पृ. 66

विशेषताएँ :- समय व संस्कृति से परे होते हैं| मानव गरिमा की रक्षा करते हैं

नैतिक शिक्षा का मूल आधार होते हैं| आनंद सभा जैसे पाठ्यक्रमों के माध्यम से बालकों में बचपन से रोपे जा सकते हैं

1. **अध्याय 1: मूल्यों शिक्षा को समझना**

मूल्य शिक्षा - ऐसी शिक्षा जो जीवन में नैतिकता, सहानुभूति, न्याय, ईमानदारी जैसे सार्वभौमिक मूल्यों को विकसित करती है।

कौशल शिक्षा - संवाद, नेतृत्व, समस्या समाधान जैसे व्यवहारिक जीवन-कौशल का विकास।

तृप्तिपूर्ण जीवन - आत्म-संतोष, शांति और स्थायित्व से युक्त जीवन।

समग्र दृष्टिकोण - जीवन को एकता में देखने की दृष्टि, जिसमें शरीर, आत्मा, समाज और प्रकृति के बीच संतुलन होता है।

अध्याय 2: स्व-अन्वेषण - मूल्य शिक्षा की प्रक्रिया

स्व-अन्वेषण - स्वयं के विचारों, भावनाओं और कार्यों को पहचानने और समझने की प्रक्रिया।

स्वीकृति - स्वयं और दूसरों को उनके गुण-दोषों सहित अपनाने की भावना।

मूल्यांकन - अपने आचरण और सोच की आलोचनात्मक जांच।

अध्याय 3: मानव की मूल चाहत और उसकी पूर्ति

मूल चाहत - आत्मिक स्तर पर सुख, संतोष, संबंध जैसी आंतरिक आवश्यकताएँ।

प्राथमिकता - जीवन में भौतिक या आत्मिक क्या अधिक महत्वपूर्ण है, इसकी स्पष्टता।

अध्याय 4: सुख और समृद्धि को समझना

1. सुख - मानसिक एवं आत्मिक शांति और तृप्ति की स्थिति।
2. समृद्धि - पर्याप्त संसाधनों की उपलब्धता और उनका विवेकपूर्ण उपयोग।

3. भ्रमित अवधारणाएँ - सुख को केवल भौतिक वस्तुओं या उपभोग से जोड़ना|

अध्याय 5: स्वयं और शरीर का सह-अस्तित्व

1. स्वयं (मैं) - सोचने, समझने और निर्णय लेने वाला चेतन तत्व|
2. शरीर - भौतिक इकाई जो आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए माध्यम है|
3. सह-अस्तित्व - शरीर और स्वयं के बीच संतुलित संबंध|

अध्याय 6: स्वयं में व्यवस्था - कल्पनाशीलता और प्रेरणा

1. कल्पनाशीलता - रचनात्मक सोचने और कल्पना करने की क्षमता|
2. प्रेरणा-स्रोत - वह तत्व जो हमारे व्यवहार या निर्णय को प्रेरित करता है (जैसे - मान्यता, संवेदना, विवेक)|

अध्याय 7: स्वास्थ्य और संयम

1. स्वास्थ्य - शरीर और मन दोनों का संतुलन|
2. संयम - इच्छाओं और व्यवहारों पर नियंत्रण|

अध्याय 8 (अ): संबंधों में ममता, वात्सल्य और श्रद्धा

1. ममता - अपनत्व और स्नेह की भावना|
2. वात्सल्य - दया और करुणा से जुड़ी परिपक्व ममता|
3. श्रद्धा - सच्चाई और सद्गुणों के प्रति सम्मान|

अध्याय 8 (ब): प्रेम - पूर्ण मूल्य

1. प्रेम - स्थायी, निःस्वार्थ और आत्मिक अपनत्व|
2. न्याय - प्रत्येक संबंध में संतुलन, विश्वास और उचित व्यवहार|

अध्याय 9: समाज में व्यवस्था

1. मानव समाज - ऐसा सामाजिक ढांचा जिसमें सह-अस्तित्व और न्याय हो|

2. सामाजिक भूमिका - समाज में व्यक्ति का उत्तरदायित्व और योगदान|

अध्याय 10: प्रकृति में व्यवस्था

1. प्राकृतिक इकाई - सभी जैविक व अजैविक तत्व जो प्रकृति का हिस्सा हैं|

2. परस्पर पूरकता - सभी इकाइयों के बीच सहयोग और निर्भरता का संबंध|

अध्याय 11: अस्तित्व में व्यवस्था

1. अस्तित्व - वह समग्र सृष्टि जिसमें सभी तत्व और इकाइयाँ एक साथ विद्यमान हैं|

2. पूर्ण सह-अस्तित्व - सभी इकाइयों के साथ समन्वित, शांतिपूर्ण और नैतिक संबंध|

1.9 अध्ययन का महत्व :-

1. शिक्षा में मूल्यों के पुनर्स्थापन की आवश्यकता : आज की शिक्षा प्रणाली अधिकतर सूचनात्मक और परीक्षा-केंद्रित हो गई है, जिसमें नैतिकता, करुणा, सहिष्णुता, और संवेदनशीलता जैसे मूल्यों की उपेक्षा हो रही है| ऐसे समय में "आनंद सभा" विद्यार्थियों को इन मूल्यों को व्यवहार में उतारने का अवसर प्रदान करती है| यह अध्ययन यह स्पष्ट करेगा कि कैसे आनंद सभा के माध्यम से शिक्षा ज्ञान और मूल्य दोनों का संतुलन बनाकर चल सकती है|

2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) के अनुरूपता : NEP 2020 में यह स्पष्ट कहा गया है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल "ज्ञान प्रदान करना" नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को नैतिक, बौद्धिक और भावनात्मक रूप से समृद्ध नागरिक बनाना है| आनंद सभा, इस उद्देश्य की पूर्ति का एक व्यवहारिक रूप है| यह अध्ययन यह समझने में मदद करेगा कि यह कार्यक्रम नीति के लक्ष्यों की दिशा में कितना कारगर है|

3. जीवन-कौशल और व्यक्तित्व विकास के लिए सहायक : आनंद सभा पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में सुनने, बोलने, विचार साझा करने, आत्मनिरीक्षण और टीमवर्क जैसे कौशलों का विकास करती है, जो आज के सामाजिक जीवन और कार्यक्षेत्र के लिए अत्यंत आवश्यक हैं| यह अध्ययन इन जीवन कौशलों के प्रभावों का मूल्यांकन करेगा|

4. बालकों की संवेदनशीलता और सामाजिक जुड़ाव को बढ़ावा : बालकों के मन में सामाजिक समरसता, दूसरों के प्रति सम्मान, पर्यावरण के प्रति चेतना और करुणा जैसे भाव यदि प्रारंभिक

अवस्था में विकसित किए जाएँ, तो वे जिम्मेदार नागरिक बनते हैं। यह शोध दर्शाएगा कि आनंद सभा इस दिशा में क्या योगदान दे रही है।

5. शिक्षकों और नीति निर्माताओं के लिए मार्गदर्शक : यह अध्ययन नीति निर्माताओं, शिक्षा विभागों और विद्यालय प्रशासन के लिए एक साक्ष्य-आधारित मार्गदर्शन प्रदान करेगा कि मूल्य-आधारित शिक्षण कैसे क्रियान्वित किया जा सकता है, और आनंद सभा जैसे कार्यक्रमों को कैसे और अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है।

6. व्यवहारिक अनुसंधान के लिए आधार : अधिकांश शैक्षिक मूल्य अध्ययन केवल सैद्धांतिक होते हैं। यह अध्ययन आनंद सभा जैसे वास्तविक और क्रियान्वित कार्यक्रम का मूल्यांकन करता है, जिससे शोधार्थियों के लिए आगे के क्रियाशील मूल्य शिक्षा मॉडल विकसित करने का मार्ग प्रशस्त होता है। "सार्वभौमिक मूल्यों के संदर्भ में आनंद सभा पाठ्यक्रम का अध्ययन" न केवल एक शैक्षिक विश्लेषण है, बल्कि यह एक मूल्य-आधारित शिक्षण पद्धति के प्रभाव, आवश्यकता और उसकी व्यावहारिकता को उजागर करने वाला प्रासंगिक और सामाजिक रूप से उपयोगी शोध है। यह आधुनिक शिक्षा में नैतिक पुनरुत्थान की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण पहल साबित हो सकता है।

1.10 **अध्ययन की सीमाएँ :**

यह शोध अपने उद्देश्य की पूर्ति हेतु यथासंभव वैज्ञानिक और वस्तुनिष्ठ प्रयास करेगा, फिर भी इसकी कुछ स्वाभाविक सीमाएँ होंगी:

(i) **भौगोलिक सीमाएँ:**

•अध्ययन का फोकस केवल मध्यप्रदेश तक सीमित होगा, जिससे अन्य राज्यों या शहरी-ग्रामीण विविधताओं की तुलना संभव नहीं हो पाएगी| इसलिए निष्कर्षों को संपूर्ण भारत या सभी शैक्षिक संस्थानों पर सामान्यीकृत नहीं किया जा सकता।

(iii) मानव व्यवहार की जटिलता:•नैतिक मूल्यों और सोच-समझ में परिवर्तन को मात्र प्रश्नावली या साक्षात्कार के आधार पर पूरी तरह मापा नहीं जा सकता।

•मूल्य-आधारित बदलाव बहुपरकीय होते हैं, जिनका आकलन समयसापेक्ष और संदर्भ-सापेक्ष होता है।

(iv) पूर्व-धारणाएँ और सामाजिक दबाव:•विद्यार्थियों और शिक्षकों के उत्तरों में सामाजिक व सांस्कृतिक दबाव के कारण प्रामाणिकता में कमी हो सकती है। वे आदर्श उत्तर देने का प्रयास कर सकते हैं।

(v) कार्यक्रम की विविधता:•सभी विद्यालयों में आनंद सभा का कार्यान्वयन समान रूप से नहीं हो रहा है; इसकी गुणवत्ता और गंभीरता एक विद्यालय से दूसरे विद्यालय में भिन्न हो सकती है।

यह अध्ययन एक सीमित लेकिन अत्यंत आवश्यक पहलू की पड़ताल करता है – अर्थात्, शिक्षा के माध्यम से सार्वभौमिक मूल्यों का व्यवहारिक विकास। यद्यपि इसके निष्कर्ष क्षेत्र,विशेष और सीमित होंगे, फिर भी ये शिक्षा नीति-निर्माण, पाठ्यक्रम संशोधन, और मूल्य-शिक्षा के क्षेत्र में भविष्य की शोध परियोजनाओं के लिए एक सशक्त आधार प्रस्तुत करेंगे।

अध्याय 2

साहित्य की समीक्षा (Review Of Literature)

2.1 सैद्धांतिक पृष्ठभूमि

सैद्धांतिक ढांचे का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि शोध किन विचारधाराओं, सिद्धांतों या दर्शन पर आधारित है| निम्नलिखित तीन स्तंभ इस ढांचे को बनाते हैं:

1. माध्यस्थ दर्शन (Madhyasth Darshan / Coexistential Philosophy)

•यह दर्शन मानव के आत्म-स्वरूप, संबंधों और प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व की समझ को केंद्र में रखता है।

•इसके अनुसार जीवन का उद्देश्य सतत सुख और समृद्धि की प्राप्ति है, जो केवल बाह्य संसाधनों से नहीं बल्कि सही समझ और संतुलित जीवन शैली से संभव है।

मानवीय मूल्य सिद्धांत (Universal Human Values Theory)

Universal Human Values (UHV) का सिद्धांत यह मानता है कि प्रत्येक व्यक्ति में मूलभूत रूप से सह-अस्तित्व, सच्चाई, प्रेम, करुणा, और शांति की क्षमता होती है, जिसे स्व-अन्वेषण और सशक्त शिक्षा प्रणाली के माध्यम से जागृत किया जा सकता है। UHV सिद्धांत शिक्षा को केवल जानकारी प्राप्त करने की प्रक्रिया नहीं, बल्कि "व्यक्तिगत, सामाजिक और पर्यावरणीय समन्वय की प्रक्रिया" मानता है ।

(ii) आत्मज्ञान और चरित्र निर्माण की भारतीय परंपरा:भारतीय दार्शनिक परंपरा में शिक्षा का लक्ष्य केवल व्यवसायिक दक्षता नहीं, बल्कि "पूर्ण मानव बनाना" रहा है - जो कि NEP 2020 के मूल दर्शन से मेल खाता है। आनंद सभा पाठ्यक्रम इसी परंपरा को स्कूली शिक्षा में लागू करता है ।

1.मूल्यों पर आधारित शिक्षा

> "Education must build character, enable learners to be ethical, rational, compassionate, and caring, while at the same time prepare them for gainful, fulfilling employment."
>
> – National Education Policy 2020, Chapter 4: Curriculum and Pedagogy in Schools, Section 4.4

“शिक्षा का उद्देश्य ऐसा चरित्र निर्माण करना है जिससे विद्यार्थी नैतिक, विवेकशील, करुणामय और संवेदनशील बन सकें|“

2. Global Citizenship और Universal Values: “The curriculum will include basic arts, crafts, humanities, as well as human and ethical values and Constitutional values, such as empathy, respect for others, cleanliness, courtesy, democratic spirit, spirit of service, respect for public property, scientific temper, and liberty.”– NEP 2020, Section 4.23

“पाठ्यचर्या में मानव और नैतिक मूल्यों के साथ-साथ संविधान प्रदत्त मूल्यों को भी शामिल किया जाएगा, जैसे - सहानुभूति, सम्मान, स्वच्छता, सेवा भावना आदि|“

1. **Holistic Development के संदर्भ में:** “The aim of education will not only be cognitive development, but also building character and creating holistic and well-rounded individuals equipped with key 21st-century skills.”– NEP 2020, Introduction, Page 3

“ शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि सम्पूर्ण व्यक्तित्व निर्माण भी है|“

4. Foundational Stage में नैतिक शिक्षा का समावेश: “The Foundational Stage will include flexible, multilevel, play-based, activity-based, and inquiry-based learning that includes basic human values of empathy, cooperation, cleanliness, honesty, respect, and courtesy.”– NEP 2020, Section 1.2

“प्रारंभिक शिक्षा में बच्चों को करुणा, सहयोग, ईमानदारी, शिष्टाचार जैसे सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों से परिचित कराया जाएगा|“

1. मानवतावाद: प्रमुख विचारक: Carl Rogers (1961), Abraham Maslow

शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के पूर्ण विकास (self-actualization) की ओर होना चाहिए|

आनंद सभा गतिविधियाँ – जैसे आत्मचिंतन, सहयोग, और भावनात्मक अभिव्यक्ति – इस विचारधारा को व्यवहार में लाती हैं|

2. रचनावाद: प्रमुख विचारक: Jean Piaget (1950), Lev Vygotsky (1978) “ज्ञान कोई स्थिर तत्व नहीं बल्कि अनुभव से निर्मित होता है|“

आनंद सभा की गतिविधियाँ (समूह चर्चा, कहानी विश्लेषण, आत्म-अवलोकन) छात्रों को मूल्य अनुभव करने और उन्हें खुद गढ़ने का अवसर देती हैं|

3. सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा : संगठन: CASEL (Collaborative for Academic, Social, and Emotional Learning)

आत्म-चेतना, सामाजिक जागरूकता, निर्णय-निर्माण, और संबंध कौशल का विकास|

आनंद सभा इन सभी तत्वों को रोज़मर्रा के विद्यालय जीवन में जोड़ने का कार्य करती है|

4. नैतिक विकास सिद्धांत

प्रमुख विचारक: Lawrence Kohlberg (1958)

नैतिक विकास चरणबद्ध होता है:
पूर्व-पारंपरिक (Punishment & Reward)

पारंपरिक (Social Approval)

उत्तर-पारंपरिक (Universal Principles)

आनंद सभा विद्यार्थियों को इन चरणों से आगे बढ़ाते हुए मानवतावादी मूल्य अपनाने हेतु प्रेरित करती है|

संदर्भ: Kohlberg, L. (1981). Essays on Moral Development, Vol. I: The Philosophy of Moral Development. Harper & Row.

5. सार्वभौमिक मानव मूल्य सिद्धांत :- स्रोत: UHV Foundation, AICTE & Rajya Anand Sansthan , आत्म-साक्षात्कार (Self-exploration), सह-अस्तित्व (Coexistence), आत्मिक संतुलन (Harmony). आनंद सभा इसी ढांचे के आधार पर छात्रों में समग्र दृष्टिकोण और आंतरिक स्थिरता विकसित करने का प्रयास करती है|

संदर्भ: UHV Foundation. (2020). Holistic Value-based Education for NEP 2020. www.uhv.org.in

6. राष्ट्र निर्माण एवं शिक्षा आयोगों का दृष्टिकोण (Viewpoint of Nation Building and Education Commissions)

राधाकृष्णन आयोग (1948) - शिक्षा का उद्देश्य जीवन मूल्यों का निर्माण है|

कोठारी आयोग (1964-66) - "शिक्षा व्यक्ति और समाज में नैतिक जिम्मेदारी और सामाजिक समरसता को विकसित करे|" UNESCO Report (1996) - "Learning to be" और "Learning to live together" – आनंद सभा इन्हीं विचारों को मूर्त रूप देती है|

यह सैद्धांतिक ढाँचा दर्शाता है कि आनंद सभा न केवल एक नैतिक शिक्षा कार्यक्रम है, बल्कि यह बहुआयामी मनोवैज्ञानिक, दार्शनिक और शैक्षणिक सिद्धांतों पर आधारित है। यह छात्रों को सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक रूप से सशक्त बनाने का प्रयास है।

2.2 संबंधित पूर्ववर्ती अध्ययन

Universal Human Values (UHV): एक वैचारिक आधार:AICTE द्वारा विकसित Universal Human Values (UHV) दृष्टिकोण के अनुसार शिक्षा का लक्ष्य है –व्यक्ति की समग्रता में समझ विकसित करना, समाज और प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करना और नैतिक एवं व्यवहारिक कौशल विकसित करना। UHV के तीन प्रमुख आयाम हैं : जीवन दृष्टि (Holistic Vision of Life)

सार्वभौमिक मानवीय मूल्य (Universal Human Values)

मूल्य-आधारित जीवन-कौशल (Value-Guided Skills)

UHV के अनुसार: "Holistic Value-Based Education व्यक्ति को केवल जानकारी नहीं देता, बल्कि उसे जीवन में नैतिकता, उत्तरदायित्व और सह-अस्तित्व की समझ भी देता है।"- AICTE, 2023, पृ. 4

UHV मॉडल शिक्षा को केवल 'डिग्री प्राप्त करने' की प्रक्रिया नहीं मानता, बल्कि 'एक सही इंसान बनने की प्रक्रिया' के रूप में देखता है।

'आनंद सभा' पाठ्यपुस्तक: मूल्यों की व्यवहारिक शिक्षा

'आनंद सभा' पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में स्व-अन्वेषण, मानवीय संबंधों की समझ, और कर्तव्यों के प्रति सजगता का विकास करना है। यह पाठ्यक्रम UHV दृष्टिकोण को स्कूली स्तर पर लागू करता है।

कक्षा 10 की पाठ्यपुस्तक में मूल्य-शिक्षा को स्व-मूल्यांकन, अनुभव, प्रोजेक्ट कार्य, और समूह संवाद के माध्यम से सिखाया गया है ।

4. पंच प्रण के परिप्रेक्ष्य में आनंद सभा की भूमिका (Role of Anand Sabha in the perspective of Panch Prana): 2022 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रस्तुत पंच प्रण – विकसित भारत, गुलामी की मानसिकता से मुक्ति, सांस्कृतिक गौरव, एकता, और कर्तव्यनिष्ठ नागरिक – को भी आनंद सभा पाठ्यक्रम में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।आनंद सभा इन संकल्पों को व्यवहारिक बनाते हुए विद्यार्थियों को एक नवोन्मेषी, नैतिक और उत्तरदायी नागरिक बनने की दिशा में मार्गदर्शित करता है।

शोध और प्रशिक्षण के निष्कर्षों,तथा राष्ट्रीय संकल्पों (पंच प्रण) के पूर्णतः अनुकूल है। यह पाठ्यक्रम एक ऐसा शैक्षिक मॉडल प्रस्तुत करता है जो विद्यार्थियों को केवल अकादमिक नहीं, बल्कि नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक स्तर पर भी सशक्त बनाता है।

1. सार्वभौमिक मानवीय मूल्य (Universal Human Values - UHV) –

सार्वभौमिक मानवीय मूल्य वे नैतिक सिद्धांत और जीवन दृष्टियाँ हैं, जो समय, स्थान, संस्कृति और धर्म की सीमाओं से परे होकर प्रत्येक मानव के लिए स्वीकार्य और आवश्यक होते हैं। ये मूल्य मानव-मानव और मानव-प्रकृति के बीच संतुलित, शांतिपूर्ण और सहयोगमूलक संबंध स्थापित करने की आधारशिला रखते हैं।

इनमें मुख्यतः निम्नलिखित मूल्य आते हैं:

- सत्य (Truth)
- धैर्य एवं सहिष्णुता (Patience & Tolerance)
- न्याय (Justice)
- अहिंसा (Non-violence)
- करुणा (Compassion)
- सह-अस्तित्व (Co-existence)

AICTE (All India Council for Technical Education) और UHV Foundation द्वारा वर्ष 2020 में प्रकाशित रिपोर्ट “Holistic and Value-based Education for NEP 2020” में शिक्षा के मूल उद्देश्य को केवल अकादमिक उपलब्धियों तक सीमित न रखकर एक समग्र मानव दृष्टिकोण के रूप में पुनर्परिभाषित किया गया है।

रिपोर्ट में स्पष्ट कहा गया है कि –

“The core purpose of education is to facilitate understanding and practice of universal human values in life.”

(UHV Foundation, 2020, p. 4)

इसका अर्थ है कि शिक्षा को केवल तथ्यों और तकनीकी ज्ञान तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि यह विद्यार्थियों को सही जीवन दृष्टिकोण, निर्णय क्षमता, और नैतिक व्यवहार का विकास करने का अवसर देना चाहिए। आनंद सभा कार्यक्रम – जो कक्षा 9 से 12 तक के लिए मध्यप्रदेश के विद्यालयों में लागू किया गया है – वास्तव में UHV के व्यवहारिक क्रियान्वयन का ही एक प्रयास है। इसमें निम्नलिखित गतिविधियाँ सम्मिलित होती हैं:

- आत्म-चिंतन (Self-reflection)
- नैतिक कहानियाँ (Moral Stories)
- समूह चर्चा (Group Discussion)
- जीवन कौशल क्रियाएँ (Life Skills Activities)

इनका उद्देश्य विद्यार्थियों को मूल्य आधारित जीवन जीने के लिए प्रेरित करना है।

वैश्विक परिप्रेक्ष्य: UNESCO की रिपोर्ट Learning: The Treasure Within (1996) के अनुसार, "Learning to be" और "Learning to live together" दो ऐसे स्तंभ हैं जो शिक्षा को केवल जानकारी देने वाली नहीं, बल्कि मूल्य आधारित मानव निर्माण की प्रक्रिया बनाते हैं। यह विचार आनंद सभा के मूलभूत उद्देश्यों के अनुरूप है, जहाँ "जीवन जीने की कला" को शिक्षा का हिस्सा बनाया जाता है।

शिक्षाविदों का दृष्टिकोण:

•डॉ. ए.एन. त्रिपाठी (पूर्व निदेशक, UHV Foundation):

उन्होंने स्पष्ट किया कि नैतिकता और करुणा केवल उपदेशों से नहीं आतीं, बल्कि इन्हें व्यवहार में उतारने की प्रक्रिया ही मूल्यों का सही शिक्षण है।

•गवाने, आर.आर. (2012) - अपने शोध में कहते हैं कि मूल्य शिक्षा तभी प्रभावशाली हो सकती है जब वह क्रियात्मक हो, न कि केवल सैद्धांतिक। आनंद सभा इसी दृष्टिकोण को व्यवहार में लाती है।

सार्वभौमिक मानवीय मूल्य आज की वैश्विक चुनौतियों – जैसे हिंसा, असहिष्णुता, आत्म-केंद्रिता और मानसिक तनाव – के समाधान की कुंजी हैं। इन मूल्यों को बच्चों में बचपन से ही व्यवहार में लाने के लिए आनंद सभा जैसे कार्यक्रम अनिवार्य हैं। AICTE, UNESCO और विभिन्न शिक्षाविदों के दृष्टिकोण यह स्पष्ट करते हैं कि UHV को स्कूल शिक्षा में एकीकृत करना केवल लाभकारी ही नहीं, बल्कि अनिवार्य है।

संदर्भ :

•AICTE & UHV Foundation. (2020). Holistic and Value-based Education for NEP 2020. UHV Foundation. Retrieved from https://uhv.org.in

•UNESCO. (1996). Learning: The Treasure Within. Report to UNESCO of the International Commission on Education for the Twenty-first Century.

•Gawane, R. R. (2012). Value Education in Schools: Need and Approach. Journal of Value Education.

राज्य आनंद संस्थान की पहल – राज्य आनंद संस्थान की स्थापना मध्य प्रदेश सरकार द्वारा वर्ष 2016 में की गई थी। यह देश का पहला ऐसा सरकारी संस्थान है जो जीवन के आंतरिक आनंद, सकारात्मक मानसिकता, और मूल्य-आधारित जीवनशैली को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कार्य करता है। इसकी स्थापना का औपचारिक उद्घाटन तत्कालीन मुख्यमंत्री द्वारा 14 जनवरी 2017 को किया गया।

संस्थान का मुख्य उद्देश्य: "व्यक्ति, परिवार, समाज और प्रकृति के साथ समन्वय स्थापित करते हुए एक आनंदमय जीवन की ओर नागरिकों को प्रेरित करना।"

Sh. Satyaprakash Arya, Director Rajya Anand Sansthan | Goals of RAS Established 2016

आनंद सभा की शुरुआत "आनंद सभा" इस संस्थान की प्रमुख पहल है, जिसे लोक शिक्षण संचालनालय भोपाल म.प्र., और राज्य आनंद संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में विद्यालयी स्तर पर मूल्य शिक्षा और नैतिक जागरूकता के उद्देश्य से प्रारंभ किया गया।यह कार्यक्रम विशेष रूप से कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों के लिए तैयार किया गया है।

.इसका संचालन प्रत्येक शनिवार की प्रथम कक्षा में किया जाता है।कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में स्वावलंबन, सहिष्णुता, करुणा, ईमानदारी, और आत्मबोध जैसे गुणों का विकास करना है।

आनंद सभा की प्रमुख गतिविधियाँ:

1.आत्मचिंतन और आत्मनिरीक्षण अभ्यास यह अभ्यास विद्यार्थियों को अपने विचारों और व्यवहार की समीक्षा करने का अवसर देता है।

2.ध्यान और विश्राम अभ्यास

मानसिक संतुलन और आत्मिक शांति के लिए ध्यान विधियाँ सिखाई जाती हैं।

राज्य आनंद संस्थान का दृष्टिकोण केवल सरकारी योजना नहीं, बल्कि यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के उन मूलभूत सिद्धांतों के साथ मेल खाता है, जिनमें "मूल्य-आधारित शिक्षा", "आत्म-चिंतन", और "जीवन कौशल" को अत्यंत आवश्यक माना गया है।

NEP 2020 कहती है: "The aim of education is not only cognitive development, but also building character and creating holistic individuals."

•**Rajya Anand Sansthan Reports (2020-23)** - संस्थान की वार्षिक रिपोर्टों में आनंद सभा के प्रभावों का विवरण दिया गया है, जिसमें बच्चों की सहभागिता, उनके व्यवहार में परिवर्तन, और शिक्षकों की प्रतिक्रिया का विश्लेषण मिलता है।

•Madhya Pradesh State School Education Portal - इसमें बताया गया है कि 2023 से शालाओं में आनंद सभा का आयोजन हो रहा है, और कई विद्यार्थी इससे लाभान्वित हो चुके हैं।

राज्य आनंद संस्थान की पहल, विशेष रूप से "आनंद सभा", आज की शिक्षा व्यवस्था में नैतिक शून्यता की पूर्ति का एक व्यवस्थित, सुसंगठित और व्यवहारिक मॉडल है। यह कार्यक्रम विद्यालयी शिक्षा में मूल्यों के व्यवहारिक समावेश का सशक्त उदाहरण है, जो व्यक्ति और समाज में सामूहिक चेतना, सह-अस्तित्व और सकारात्मकता का विकास करता है।

संदर्भ :

•Rajya Anand Sansthan. (2020). आनंद सभा कार्यक्रम प्रतिवेदन. भोपाल: राज्य आनंद संस्थान. Retrieved from https://www.anandsansthanmp.in

•AICTE & UHV Foundation. (2020). Holistic and Value-based Education for NEP 2020.

•Bhargava, M. (2020). Value-based Interventions in Indian Schools: A Case of Madhya Pradesh. Indian Journal of Educational Research, 42(2), 117-130.

•Ministry of Education. (2020). National Education Policy 2020. Government of India.

*आनंद सभा पाठ्यक्रम की पुस्तक (कक्षा 10वीं) –

पाठ्यपुस्तक का नाम:

"आनंद सभा: सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों से आनंद की ओर"

(UHV School Education Curriculum, 2022, uhv.org.in/schooleducation)

यह पुस्तिका कक्षा 9 से 12 तक के छात्रों के लिए तैयार की गई है, जिसे UHV Foundation, AICTE, और राज्य आनंद संस्थान, म.प्र. द्वारा संयुक्त रूप से अनुमोदित किया गया है। इस पुस्तिका का उद्देश्य छात्रों को सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के व्यवहारिक अभ्यास के लिए एक सशक्त, आकर्षक और संवादात्मक मंच प्रदान करना है। इसे इस प्रकार डिज़ाइन किया गया है कि विद्यार्थी न केवल मूल्य समझें, बल्कि उन्हें अपने जीवन में जीना शुरू करें।

*पुस्तक की प्रमुख गतिविधियाँ एवं संरचना:

1. आत्म-चिंतन

•छात्रों को यह अवसर दिया जाता है कि वे अपने दैनिक व्यवहार, विचार और भावनाओं का आकलन करें|

•जैसे प्रश्न: “मैं और शरीर में सहअस्तित्व ”

•उद्देश्य: आत्म-जागरूकता और आत्मनियंत्रण का विकास|

3. जीवन कौशल (Life Skills Activities)

•जैसे:निर्णय क्षमता अभ्यास.

•उद्देश्य: निर्णय क्षमता, सह-अस्तित्व, और भावनात्मक बुद्धिमत्ता का विकास|

4. समूह चर्चा (Group Dialogue)

•विद्यार्थियों को समूहों में बाँटकर नैतिक मुद्दों पर चर्चा करवाई जाती है|

•उदाहरण विषय: “दूसरों की मदद करना क्यों जरूरी है?”, “माफ़ी माँगना और देना कितना महत्वपूर्ण है?”

*छात्रों के अनुभवात्मक अभ्यास:

पुस्तिका केवल थ्योरी नहीं देती, बल्कि प्रत्येक अध्याय के अंत में अभ्यास होते हैं जैसे:

•“आज मैंने...” कार्यपत्रक

•“मैं क्या बदलना चाहता हूँ?” आत्मविश्लेषण

इनसे विद्यार्थियों को मूल्यों का व्यक्तिगत अनुभव होता है, जो दीर्घकालिक प्रभाव डालता है|

पुस्तिका में कोई परीक्षा या अंकन प्रणाली नहीं है, परंतु:

•आत्म-मूल्यांकन तालिकाएँ,साप्ताहिक मूल्य डायरी और शिक्षक द्वारा पर्यवेक्षण रिपोर्ट के माध्यम से गुणात्मक रूप से विद्यार्थियों के नैतिक व्यवहार में परिवर्तन को मापा जा सकता है|

•Pandey, A. (2021) ने “Implementation of UHV in Schools” नामक शोध में बताया कि इस पाठ्यक्रम से छात्रों में अनुशासन, सहिष्णुता और आत्मविश्वास जैसे गुणों में उल्लेखनीय वृद्धि होती है|

•Anand Sansthan Reports (2022) के अनुसार, आनंद सभा के कारण विद्यालयों में अनुशासनहीनता संबंधी घटनाओं में 40% तक गिरावट आई है|

"आनंद सभा: सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों से आनंद की ओर" केवल एक पाठ्यपुस्तक नहीं है, यह एक मूल्य-आधारित जीवनशैली की ओर पहला कदम है| यह विद्यार्थियों को आत्म-चिंतनशील, सामाजिक रूप से उत्तरदायी और भावनात्मक रूप से संतुलित नागरिक बनने में मदद करती है|

संदर्भ

•UHV Foundation. (2022). Anand Sabha: Sārvabhaumik Mānavīya Mūlyon Se Ānand Kī Or. Retrieved from https://uhv.org.in/schooleducation

•Rajya Anand Sansthan. (2022). Annual Report on School Programs. Bhopal: Government of Madhya Pradesh.

•Pandey, A. (2021). Implementation of Universal Human Values in Middle Schools: A Case Study from M.P. Journal of Human Development and Values, 15(3), 56-72.

4. शैक्षिक आयोग और रिपोर्ट्स (Educational Commissions and Reports)-

1 डॉ. राधाकृष्णन आयोग (University Education Commission, 1948-49)

"The aim of education should not merely be to earn livelihood but to develop character and moral values."

यह आयोग भारत की स्वतंत्रता के पश्चात गठित पहला उच्च शिक्षा आयोग था|

आयोग ने स्पष्ट किया कि शिक्षा को नैतिकता, चरित्र निर्माण और सामाजिक चेतना के विकास का माध्यम बनाना चाहिए|आनंद सभा कार्यक्रम इस अनुशंसा का व्यावहारिक रूप है, क्योंकि यह विद्यार्थियों में नैतिक गुणों जैसे - सत्य, अहिंसा, करुणा और सहानुभूति - को साप्ताहिक गतिविधियों के माध्यम से विकसित करता है|

प्रासंगिकता:

आनंद सभा विद्यार्थियों को आत्म-चिंतन, नैतिक कहानियों और समूह संवाद द्वारा आत्मविकास और सामाजिक उत्तरदायित्व की ओर प्रेरित करती है|

2. कोठारी आयोग (Education Commission, 1964-66):

"The destiny of India is now being shaped in her classrooms..."

“The sole purpose of education is to develop a sense of humanity, moral ethics, and responsibility towards society

•इस आयोग ने शिक्षा को राष्ट्रीय विकास, लोकतांत्रिक मूल्यों और सामाजिक न्याय से जोड़ा|

•यह बताया कि शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास नहीं, बल्कि मानवता का उत्थान होना चाहिए|

.आनंद सभा इसी लक्ष्य को व्यवहार में लाता है – इसमें करुणा, सहयोग, समानता और सह-अस्तित्व पर बल दिया जाता है|

मूल्य शिक्षा के संबंध में:

•कोठारी आयोग ने पहली बार मूल्य-आधारित शिक्षा को औपचारिक पाठ्यक्रम में शामिल करने की अनुशंसा की थी|

•आनंद सभा, इस अनुशंसा को विद्यालय स्तर पर व्यवस्थित तरीके से क्रियान्वित करने का प्रयास है|

3. UNESCO रिपोर्ट (1996): Learning: The Treasure Within (Delors Commission Report)

शिक्षा के चार स्तंभ:

1.Learning to know (जानने के लिए सीखना)

2.Learning to do (करने के लिए सीखना)

3.Learning to be (होने के लिए सीखना)

4.Learning to live together (साथ जीने के लिए सीखना)

Learning to be - यह स्तंभ व्यक्ति के स्व-निर्माण, आत्म-जागरूकता, और आत्म-मूल्यांकन से संबंधित है, जो आनंद सभा की आत्म-चिंतन गतिविधियों से मेल खाता है|

Learning to live together - यह स्तंभ सह-अस्तित्व, सहिष्णुता और सामाजिक सहयोग पर आधारित है, जो आनंद सभा के समूह चर्चा, नैतिक कहानियाँ और सामूहिक गतिविधियों द्वारा सशक्त होता है|

UNESCO की सिफारिश: शिक्षा को मानवीय गरिमा, सामाजिक न्याय और शांति की स्थापना हेतु एक मूल्य आधारित साधन बनाना चाहिए|

(i) राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) और मानवीय मूल्य :

NEP 2020 शिक्षा को एक समावेशी, मूल्य-आधारित और छात्र-केंद्रित प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करती है। यह नीति विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों, सामाजिक उत्तरदायित्व, और संवेदनशीलता को विकसित करने पर बल देती है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारत में शिक्षा को नैतिकता, समानता, समावेशन, और व्यक्तित्व विकास की ओर केंद्रित करती है। नीति में शिक्षा को "पूर्ण मानव क्षमता के विकास", "न्यायपूर्ण और समावेशी समाज के निर्माण" और "राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा" देने वाला माध्यम माना गया है ।

NEP 2020 के अनुसार: "शिक्षा का उद्देश्य ऐसे नागरिक बनाना है जो तर्कसंगत, नैतिक, सहानुभूति-युक्त और उत्तरदायी हों।" इस नीति के मूलभूत सिद्धांतों में "नैतिक और मानवीय मूल्यों का विकास", "जीवन के लिए शिक्षा" और "चरित्र निर्माण" को प्रमुख स्थान दिया गया है। आनंद सभा पाठ्यक्रम इसी दृष्टिकोण को व्यवहारिक स्तर पर लागू करता है।NEP का यह दृष्टिकोण 'आनंद सभा' पाठ्यक्रम में प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है, जो "तृप्तिपूर्ण जीवन", "कर्तव्यों की पहचान", और "समग्र दृष्टिकोण" पर केंद्रित है ।यह नीति शिक्षा को केवल सूचनात्मक नहीं बल्कि मूल्य-आधारित, समावेशी, और समग्र विकास की ओर उन्मुख बनाना चाहती है। नीति में विशेष जोर दिया गया है कि छात्रों में नैतिकता, सहानुभूति, सहिष्णुता, और सेवा-भावना जैसे मूल्यों को विकसित किया जाए। आनंद सभा पाठ्यक्रम इसी नीति के आदर्शों से मेल खाता है। इन सभी रिपोर्टों और आयोगों ने मूल्य-आधारित, समावेशी और आत्म-विकास पर केंद्रित शिक्षा प्रणाली पर बल दिया है। आनंद सभा कार्यक्रम इन विचारों को व्यवहारिक रूप में लागू करने का एक अभिनव और सुसंगत प्रयास है।

*प्रासंगिक शोध पत्र और निष्कर्ष (Relevant Research Papers and Findings) -

1. Gawane, R.R. (2012)

लेख का शीर्षक: Value Education through Practice: A Constructivist Approach

प्रकाशन: Journal of Value Education

प्रमुख बिंदु:लेखक का तर्क है कि मूल्य-शिक्षा यदि केवल उपदेशात्मक (didactic) शैली में दी जाए तो उसका प्रभाव अल्पकालिक होता है। जब मूल्य अनुभव, प्रतिक्रिया और सहभागिता के माध्यम से छात्रों तक पहुँचते हैं, तभी वे उनके आचरण में बदलते हैं।

आनंद सभा से संबंधित निष्कर्ष:

•आनंद सभा की प्रत्येक गतिविधि जैसे आत्मचिंतन, समूह चर्चा, और व्यवहारपरक कार्य छात्रों को मूल्य 'जीने' का अवसर देती है, जो इस शोध की पुष्टि करता है।

•यह अध्ययन रचनावादी शिक्षा (Constructivist Pedagogy) के समर्थन में भी है। "मूल्य शिक्षा केवल उपदेश से नहीं, अनुभव और अभ्यास से उपजती है।"

2. Sharma, A. (2018)

लेख का शीर्षक: Impact of Participatory Ethical Education Programs in Secondary Schools: A Comparative Study

प्रकाशन: Indian Journal of Educational Research

"Participatory moral programs like Anand Sabha foster deeper ethical grounding than passive curriculum."

3. Bhargava, M. (2021)

शोध शीर्षक: Values in Indian School Curriculum: Rhetoric or Reality

प्रकाशन: Contemporary Education Dialogue

पाठ्यपुस्तकों में मूल्य जैसे करुणा, दया, सहिष्णुता का उल्लेख तो होता है, परंतु छात्रों को व्यवहारिक रूप से उनका अभ्यास कराने के अवसर नहीं मिलते।

अध्ययन में यह पाया गया कि विद्यालयों में जब मूल्य आधारित साप्ताहिक गतिविधियाँ (जैसे आनंद सभा) आयोजित की जाती हैं, तो वे पाठ्यपुस्तकीय शिक्षा की तुलना में अधिक प्रभावशाली सिद्ध होती हैं। आनंद सभा को एक व्यवहारिक नैतिक शिक्षा कार्यक्रम के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जो विद्यार्थियों में मूल्य चेतना के स्थायी विकास हेतु उपयुक्त माध्यम है। "Values cannot be taught merely through stories – they must be lived and experienced, which programs like Anand Sabha allow."

इन शोध-पत्रों से यह स्पष्ट होता है कि:

•मूल्य-शिक्षा को केवल पाठ्य-पुस्तकों या भाषणों के माध्यम से नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष अनुभव और सहभागिता के माध्यम से ही प्रभावी बनाया जा सकता है।

•"आनंद सभा" इस दिशा में एक सकारात्मक, वैज्ञानिक और व्यवहारिक प्रयास है, जो विद्यार्थियों को नैतिक रूप से सक्षम और सामाजिक रूप से जिम्मेदार नागरिक बनने की दिशा में ले जाता है

भारतीय मूल्य दृष्टि और शिक्षा:

डॉ. आयुष्मान गोस्वामी का यह ग्रंथ भारतीय जीवन-दर्शन और सनातन मूल्य परंपरा की गहराई से पड़ताल करता है। लेखक मानते हैं कि शिक्षा केवल सूचनाओं का संप्रेषण नहीं है, बल्कि

आत्मा, समाज और ब्रह्मांड के साथ जुड़ने की प्रक्रिया है| यह दृष्टिकोण आनंद सभा पाठ्यक्रम के मूल स्वरूप से मेल खाता है, जहाँ बच्चों को करुणा, सह-अस्तित्व, और आत्मबोध जैसे मूल्यों से जोड़ा जाता है|

"भारतीय मूल्य दृष्टि शिक्षा को आत्मोन्मुख यात्रा मानती है, जिसमें बालक स्वयं को जानकर समाज और सृष्टि से संबंध स्थापित करता है|"

मानवीय चेतना का विकास:

पुस्तक में स्पष्ट किया गया है कि सनातन परंपरा में मानव चेतना केवल बुद्धि तक सीमित नहीं होती, बल्कि वह सहानुभूति, संवेदनशीलता और करुणा का संवाहक होती है| आनंद सभा पाठ्यक्रम इसी चेतना को प्रारंभिक बाल्यवस्था में जगाने का प्रयास करता है|

"भारतीय दर्शन मानवीय चेतना को एक दैवीय प्रकृति मानता है, जिसका उद्देश्य केवल भौतिक ज्ञान नहीं बल्कि आत्म-चेतना का विस्तार है|"

गोस्वामी, डॉ. आयुष्मान, पृ. 59.

-सार्वभौमिक नैतिक मूल्य और सनातन विमर्श (Universal moral values and eternal discourse): इस पुस्तक में बताया गया है कि सत्य, अहिंसा, दया, समता, संयम, और सहिष्णुता जैसे मूल्य न केवल भारतीय बल्कि सार्वभौमिक हैं| आनंद सभा पाठ्यक्रम इन मूल्यों को कहानियों, और अनुभवात्मक विधियों से बच्चों में विकसित करता है|

"सार्वभौमिक मूल्य वही होते हैं जो स्थान, काल और परिस्थिति से परे संपूर्ण मानवता को एक सूत्र में पिरोते हैं – और यही भारतीय मूल्य दृष्टि का मूल है|" गोस्वामी, डॉ. आयुष्मान, पृ. 66

4. शिक्षा और आत्मबोध : लेखक शिक्षा को आत्मबोध और सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ते हैं, जो आनंद सभा के प्रत्येक पाठ के मूल में अंतर्निहित है|

"शिक्षा का चरम उद्देश्य आत्मबोध है, जिससे मनुष्य में कर्तव्य-बोध और करुणा का विस्तार होता है|" – गोस्वामी, डॉ. आयुष्मान, पृ. 83

2.2. शोध में अंतराल

भारतीय शिक्षा व्यवस्था ऐतिहासिक रूप से नैतिकता और चरित्र निर्माण पर बल देती रही है| डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन आयोग (1948) और कोठारी आयोग (1964-66) जैसी प्रतिष्ठित शैक्षिक समितियों ने बार-बार यह दोहराया कि शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी प्रदान करना नहीं,

बल्कि विद्यार्थियों को एक जिम्मेदार, संवेदनशील और नैतिक नागरिक बनाना है। आज के विद्यालयीन पाठ्यक्रमों में नैतिक मूल्यों (जैसे – सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता, करुणा, सहयोग) का उल्लेख तो किया गया है, वे मुख्य रूप से सैद्धांतिक और पाठ्यपुस्तक आधारित हैं।

मूल्य शिक्षा अक्सर एक अलग विषय के रूप में न पढ़ाई जाकर, कभी-कभी "पढ़ने योग्य" खंडों में सीमित रह जाती है।

मूल्यों को व्यवहारिक रूप से जीने और अभ्यास करने के अवसर बहुत कम दिए जाते हैं।

प्रमुख समस्याएँ:

1.अनुभव आधारित शिक्षा का अभाव: विद्यार्थी जीवन कौशल और नैतिक निर्णय लेने की क्षमताएँ केवल किताबों से नहीं, बल्कि अनुभवों और अभ्यास से सीखते हैं। वर्तमान पाठ्यक्रमों में इस प्रकार की अनुभवात्मक या गतिविधि-आधारित शिक्षा की बहुत कमी है।

2.शिक्षकों का प्रशिक्षण: कई शिक्षक मूल्य शिक्षा को एक औपचारिक दायित्व के रूप में लेते हैं, न कि व्यक्तिगत और सामाजिक बदलाव के औजार के रूप में। इसमें शिक्षकों के प्रशिक्षण और प्रेरणा की भी बड़ी भूमिका है, जो आज भी अपर्याप्त है।

3.आंकलन की पद्धति: मूल्य आधारित व्यवहार को अंक-आधारित परीक्षा पद्धति में मापना कठिन है, जिसके कारण स्कूलों में इसका महत्व गौण हो जाता है।

-आनंद सभा का योगदान: आनंद सभा, जो मध्य प्रदेश राज्य आनंद संस्थान और UHV Foundation के सहयोग से संचालित होती है, इस कमी को भरने का प्रयास है। इसके अंतर्गत: हर सप्ताह बच्चों के साथ मूल्य-आधारित संवाद, , आत्म-चिंतन, समूह चर्चा और गतिविधियाँ कराई जाती हैं। विद्यार्थियों को मूल्य केवल सुनाने या रटवाने के बजाय, उन्हें अनुभव कर पाने का वातावरण दिया जाता है। यह सभा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, व्यवहार और सामाजिक जिम्मेदारी को जागरूक करने का प्रक्रियात्मक मॉडल प्रस्तुत करती है।

उदाहरण और संदर्भ : NEP 2020 में "मानव विकास और नैतिक शिक्षा" को प्राथमिक और माध्यमिक स्तर की शिक्षा में एकीकृत करने की सिफारिश की गई है। आनंद सभा इस सिफारिश को व्यवहार में लागू करता है।

UNESCO Report (1996) - "Learning: The Treasure Within" में बताया गया कि शिक्षा का एक महत्वपूर्ण स्तंभ "Learning to live together" है, जो आनंद सभा की संरचना से मेल खाता है। विद्यालयीन शिक्षा में नैतिक मूल्यों की व्यवहारिक समझ को समाविष्ट करने के लिए केवल पाठ्यपुस्तकों से आगे बढ़ने की आवश्यकता है। आनंद सभा जैसे नवाचार शिक्षण

को एक मूल्यपरक और अनुभव-सम्मत प्रक्रिया बना सकते हैं, बशर्ते इन पर आधारित गहन अकादमिक शोध और नीति निर्माण हो।

2. आनंद सभा कार्यक्रम पर सीमित अकादमिक शोध (Limited academic research on the Anand Sabha programme):

“आनंद सभा” कार्यक्रम मध्य प्रदेश शासन के राज्य आनंद संस्थान और Universal Human Values Foundation (UHV Foundation) द्वारा विकसित एक अभिनव शैक्षणिक पहल है, जिसका उद्देश्य प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों के भीतर सार्वभौमिक मानव मूल्यों (जैसे - करुणा, सह-अस्तित्व, आत्मचिंतन, नैतिकता, और सामाजिक चेतना) को व्यवहारिक रूप में विकसित करना है।

यह कार्यक्रम सैद्धांतिक रूप से अत्यंत महत्वपूर्ण है, लेकिन शैक्षणिक शोध के स्तर पर यह क्षेत्र अभी भी अर्धविकसित है। सभी दस्तावेजों और रिपोर्टों के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि:

क्र.	क्षेत्र	शोध अंतराल (Gap)
1	नीति और व्यवहार	NEP 2020 और UHV दृष्टिकोण में मानवीय मूल्यों की बात स्पष्ट है, लेकिन इन सिद्धांतों को स्कूल स्तर पर व्यवहार में लाने पर सीमित शोध हुआ है।
2	आनंद सभा का प्रभाव	आनंद सभा पाठ्यक्रम के वास्तविक प्रभावों (learning outcomes) और व्यवहारिक परिवर्तन पर दीर्घकालिक अध्ययन उपलब्ध नहीं हैं।
3	मूल्यांकन प्रणाली	आनंद सभा जैसी मूल्य-आधारित शिक्षा की मूल्यांकन प्रक्रिया पर बहुत कम शोध हुआ है, जिससे इसकी प्रभावशीलता को

		मापना कठिन है।
4	पंच प्रण से संबद्धता	आनंद सभा पाठ्यक्रम का 'पंच प्रण' के संदर्भ में विश्लेषण करना एक नया दृष्टिकोण है, जिस पर पूर्व शोध लगभग नहीं के बराबर है।

1. विद्यालयी स्तर पर पाठ्यक्रम के प्रभाव का सीमित अध्ययन (Limited study of the impact of curriculum at school level):

•यद्यपि UHV और आनंद सभा पाठ्यक्रम पर उच्च शिक्षा में कुछ शोध हुए हैं, परंतु विद्यालयी स्तर (विशेषतः कक्षा 9-12) में इन पाठ्यक्रमों के प्रभाव का व्यवस्थित और तुलनात्मक अध्ययन अभी तक सीमित है।

2. सार्वभौमिक मूल्यों की व्यवहारिक पुष्टि का अभाव (Lack of practical confirmation of universal values):

•विद्यार्थियों के व्यवहार, सोच और संबंधों में इन मूल्यों की व्यावहारिक झलक कितनी है – इस पर विश्लेषणात्मक शोध अपेक्षित है।

3. शिक्षकों की भूमिका और प्रशिक्षण के अध्ययन की कमी (Lack of study on the role and training of teachers):

•आनंद सभा पाठ्यक्रम को लागू करने में शिक्षकों की समझ और प्रशिक्षण का महत्वपूर्ण योगदान है। इस पहलू पर व्यवस्थित अध्ययन नहीं हुए हैं।

4. क्षेत्रीय प्रभाव और विविधता पर तुलनात्मक अध्ययन का अभाव (Lack of comparative studies on regional impact and diversity)

•विभिन्न सामाजिक-आर्थिक, भौगोलिक या शैक्षणिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों पर पाठ्यक्रम के प्रभाव की तुलना करने वाले अध्ययन सीमित हैं।

दीर्घकालिक प्रभाव का मूल्यांकन नहीं –

"आनंद सभा" जैसे कार्यक्रमों का उद्देश्य छात्रों में नैतिक मूल्यों, सामाजिक संवेदनशीलता, और व्यक्तित्व विकास को बढ़ावा देना है। परंतु वर्तमान में उपलब्ध अधिकांश अध्ययनों का फोकस केवल इसके तात्कालिक या अल्पकालिक प्रभावों (short-term outcomes) तक सीमित है, जैसे:

•कक्षा में सहभागिता बढ़ना

•छात्रों की नैतिक कहानियों में रुचि

•सहपाठियों के प्रति व्यवहार में विनम्रता

•उत्साहपूर्वक गतिविधियों में भाग लेना

जबकि वास्तविक रूप से मूल्य-आधारित शिक्षा की सफलता तभी मानी जा सकती है जब यह छात्रों के दीर्घकालिक आचरण, जीवन-निर्णयों, और सामाजिक जिम्मेदारी में स्थायी परिवर्तन लाए|

ग्रामीण-शहरी अंतराल की अनुपस्थिति –

"आनंद सभा" कार्यक्रम का उद्देश्य सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों को व्यवहारिक रूप से छात्रों के जीवन में शामिल करना है| यह कार्यक्रम राज्य आनंद संस्थान (मध्य प्रदेश सरकार) और UHV Foundation द्वारा तैयार किया गया है तथा यह प्रदेश के सभी प्रकार के विद्यालयों (शहरी व ग्रामीण दोनों) में लागू किया गया है|

लेकिन अभी तक उपलब्ध शैक्षणिक शोध या प्रभाव मूल्यांकन इस बात की पड़ताल नहीं करते कि:

क्या ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में इस कार्यक्रम की प्रभावशीलता, सहभागिता, शिक्षक की भूमिका और छात्रों की प्रतिक्रिया एक जैसी है?

इस साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि 'आनंद सभा' पाठ्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की मूल भावना और Universal Human Values सिद्धांत के अनुरूप एक शैक्षणिक नवाचार है| यह विद्यार्थियों को केवल अध्ययन मात्र नहीं, अपितु एक उत्तरदायी और मूल्यनिष्ठ नागरिक बनने की ओर उन्मुख करता है|

* समावेशिता और विविधता पर शोध की कमी (Lack of research on inclusivity and diversity):

"आनंद सभा" जैसे नैतिक और जीवन-दृष्टि आधारित कार्यक्रमों का उद्देश्य सभी छात्रों को मानवीय मूल्यों से जोड़ना है – चाहे वे किसी भी सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक या सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से क्यों न आते हों|

परंतु उपलब्ध साहित्य और संस्थागत दस्तावेजों में यह स्पष्ट नहीं है कि यह कार्यक्रम:

•वंचित वर्गों (Socially and Economically Disadvantaged Groups - SEDGs)

•विशेष आवश्यकता वाले छात्र (Children with Special Needs - CWSN)

1. •लिंग, भाषा, जाति और संस्कृति की विविधता को किस सीमा तक समावेशित करता है|

1. वंचित समुदायों की भागीदारी:

•अनुसूचित जाति/जनजाति, ग्रामीण निर्धन पृष्ठभूमि से आने वाले छात्रों के लिए मूल्य आधारित कार्यक्रम अत्यधिक उपयोगी हो सकते हैं क्योंकि ये छात्र पहले से ही सामाजिक भेदभाव, असमानता और मनोवैज्ञानिक दबाव का अनुभव करते हैं|•लेकिन "आनंद सभा" की पुस्तिकाओं या प्रशिक्षण मॉड्यूल में इन वर्गों के लिए अलग से अनुकूलन या रणनीति पर कोई विस्तृत सामग्री नहीं मिलती|

2. विशेष आवश्यकता वाले छात्रों की सहभागिता:

•Visual, hearing, cognitive disabilities वाले छात्रों को ऐसे संवादात्मक और गतिविधि-आधारित कार्यक्रमों में शामिल करना आवश्यक है|

•"आनंद सभा" की गतिविधियों में Inclusive pedagogy की दृष्टि (जैसे Braille सामग्री, चित्रों की पहुँच, संकेत भाषा का उपयोग) का उल्लेख दुर्लभ है|

3. भाषाई और सांस्कृतिक विविधता:

•भारत में भाषा और संस्कृति की विविधता अत्यंत व्यापक है| अनेक छात्र हिंदी या अंग्रेज़ी माध्यम में सहज नहीं होते|

•पाठ्यसामग्री में स्थानीय संस्कृति और बहुभाषिक सामग्री के लिए भी कोई विशिष्ट गाइडलाइन नहीं है, जिससे यह कार्यक्रम कुछ छात्रों के लिए अपरिचित और औपचारिक अनुभव बन सकता है|

4. लैंगिक समावेशिता:

•कई स्कूलों में लड़कियाँ सामाजिक रूप से संवाद या चर्चा में भाग लेने में संकोच करती हैं| "आनंद सभा" की पुस्तकों में लैंगिक संवेदनशील दृष्टिकोण पर बहुत कम ध्यान दिया गया है|

इस क्षेत्र में शोध की बहुत आवश्यकता है, विशेषकर व्यवहारिक प्रभाव, मूल्यांकन पद्धति और शिक्षक-प्रशिक्षण के संबंध में, ताकि आनंद सभा जैसे पाठ्यक्रम को और अधिक प्रभावी बनाया जा सके| आनंद सभा एक सकारात्मक पहल है, लेकिन शैक्षणिक मूल्यांकन की निरंतरता की कमी के कारण इसके दीर्घकालिक प्रभाव स्पष्ट रूप से सामने नहीं आ सके हैं|

इसलिए इस दिशा में दीर्घकालिक, गुणात्मक और तुलनात्मक शोध की आवश्यकता है ताकि यह प्रमाणित किया जा सके कि "मूल्य शिक्षा" केवल कक्षा की बात नहीं, बल्कि जीवन की दिशा बन सकती है।

यूट्यूब वीडियो संसाधन: वीडियो की प्लेलिस्ट के माध्यम से कार्यशालाओं और प्रतिभागियों के अनुभव साझा किए गए हैं ।

Former Chairman AICTE about UHV FDP (2021-06-28)

Introduction to Universal Human Values (Hindi)

आनंद की ओर | Anand Sansthan | Madhya Pradesh

UHV | Anand Sansthan | Madhya Pradesh

Sh. Praveen K Gangrade, Director Rajya Anand Sansthan | Panel Discussion on Human Values in Children

UHV चैप्टर 2 *स्व अन्वेषण #सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों पर आधारित आनंद सभा

संदर्भ: Rogers, C. (1961). On Becoming a Person: A Therapist's View of Psychotherapy. Boston: Houghton Mifflin

संदर्भ: Vygotsky, L. S. (1978). Mind in Society: The Development of Higher Psychological Processes. Harvard University Press.

संदर्भ: CASEL (2020). Core SEL Competencies. www.casel.org

संदर्भ (Refrence): Radhakrishnan Commission. (1949). Report of the University Education Commission. Ministry of Education, Government of India.

•Kothari Commission. (1966). Education and National Development: Report of the Education Commission 1964-66. New Delhi: NCERT.

•UNESCO. (1996). Learning: The Treasure Within (Delors Report). UNESCO Publishing.

सन्दर्भ (Refrence): Gawane, R. R. (2012). Value Education through Practice: A Constructivist Approach. Journal of Value Education, 15(2), 45-58.

सन्दर्भ (Refrence): Sharma, A. (2018). Impact of Participatory Ethical Education Programs in Secondary Schools: A Comparative Study. Indian Journal of Educational Research, 12(1), 22-39

सन्दर्भ (Refrence): Bhargava, M. (2021). Values in Indian School Curriculum: Rhetoric or Reality? Contemporary Education Dialogue, 18(1), 65-68

– गोस्वामी, डॉ. आयुष्मान (2023), भारतीय मूल्य दृष्टि: एक सनातन विमर्श, पृ. 47

संदर्भ (Refrence):

Goswami, A. (2020). भारतीय मूल्य दृष्टि: एक सनातन विमर्श. जयपुर:[साहित्यागार]।

अध्याय-3

शोध पद्धति

शोध पद्धति किसी भी विद्वत्तापूर्ण जांच की रीढ़ की हड्डी के रूप में कार्य करती है, जो शोध प्रश्नों का पता लगाने और अध्ययन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए उपयोग किए जाने वाले व्यवस्थित दृष्टिकोण और उपकरणों को रेखांकित करती है। शोध कार्य में यह अध्ययन किया गया है कि आनंद सभा पाठ्यक्रम किस प्रकार सार्वभौमिक मूल्यों जैसे - प्रेम, विश्वास सत्य, अहिंसा, करुणा, सहयोग, सहिष्णुता, एवं नैतिक चेतना के संवर्धन में सहायक है। यह पाठ्यक्रम सामाजिक, नैतिक, एवं आध्यात्मिक मूल्यों को उभारता है, जिसका संबंध शिक्षा की समग्रता एवं व्यक्ति निर्माण से है।

3.1 शोध की प्रकृति

1. गुणात्मक शोध: यह अध्ययन गुणात्मक शोध की श्रेणी में आता है क्योंकि इसमें मात्रात्मक आँकड़ों की बजाय पाठ्यपुस्तक की विषयवस्तु, विचारों, मूल्यों, सिद्धांतों, और शैक्षिक दृष्टिकोणों का गहराई से अध्ययन और विश्लेषणात्मक व्याख्या की जाती है। इसमें यह जाना जाता है कि "आनन्द सभा" पाठ्यक्रम में कौन-कौन से सार्वभौमिक मूल्य निहित हैं, और वे विद्यार्थियों के दृष्टिकोण को कैसे प्रभावित करते हैं। **उदाहरण:** प्रेम, करुणा, अहिंसा, सहिष्णुता, सहयोग, आत्मनिरीक्षण, सामाजिक उत्तरदायित्व आदि।

2. वर्णनात्मक शोध: यह अध्ययन वर्णनात्मक भी है क्योंकि इसमें "आनन्द सभा" पाठ्यक्रम की सामग्री का विवरणात्मक (descriptive) अध्ययन किया जाता है - अर्थात पाठ्यक्रम की रचनाओं, अध्यायों और उपदेशों को तथ्यात्मक रूप में प्रस्तुत किया जाता है कि किस अध्याय में क्या मूल्य है और वह पाठ छात्र को किस प्रकार प्रभावित करता है। **उदाहरण:** पाठ 4 में "सुख की निरंतरता" विषय है जो यह दर्शाता है कि केवल भौतिक संसाधनों से स्थायी सुख संभव नहीं है – यह विवेक, संतोष और समझदारी जैसे मूल्यों की व्याख्या करता है।

3. विश्लेषणात्मक शोध : यह शोध विश्लेषणात्मक भी है क्योंकि इसमें वर्णित मूल्यों का विश्लेषण करके यह दर्शाया जाता है कि ये मूल्य वास्तव में कैसे सार्वभौमिक हैं – जैसे कि

क्या वे सभी धर्मों, सभ्यताओं और समाजों में समान महत्व रखते हैं?

क्या ये मूल्य विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण और सामाजिक व्यवहार में सहयोग करते हैं?

4. अंतःविषयक : यह अध्ययन शिक्षा, दर्शन, समाजशास्त्र और मानव मूल्यों जैसे विभिन्न विषयों से जुड़ा हुआ है। इसलिए इसमें अंतःविषयक दृष्टिकोण अपनाया गया है। यह मूल्य-शिक्षा को केवल एक विषय नहीं बल्कि मानव जीवन की संपूर्णता से जोड़ता है।

5. सांस्कृतिक और नैतिक परिप्रेक्ष्य शोध की प्रकृति ऐसी है जो “भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों” और “वैश्विक नैतिक सिद्धांतों” दोनों को आधार बनाती है। जैसे– भारतीय दर्शन में “वसुधैव कुटुम्बकम्” और वैश्विक दृष्टिकोण से “Universal Human Rights” या “Global Citizenship Values”. इस प्रकार यह शोध एक गुणात्मक, विश्लेषणात्मक और अंतःविषयक प्रकृति का अध्ययन है, जिसका उद्देश्य “आनन्द सभा” के पाठ्यक्रम में निहित सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों की पहचान, व्याख्या और प्रभाव का गहन अध्ययन करना है। यह शोध गुणात्मक (Qualitative) प्रकार का है, जिसमें ऐतिहासिक, दार्शनिक एवं विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण अपनाया गया है। इसके अंतर्गत शैक्षिक दस्तावेज़ों, पाठ्यक्रम, नीति पत्रों, और संबंधित संस्थानों की रिपोर्टों का अध्ययन किया गया है।

3.2 नमूना:-

1. **नमूना चयन का स्वरूप:** इस शोध में गुणात्मक अध्ययन (Qualitative Research) की दृष्टि से संपूर्ण “आनन्द सभा” पाठ्यपुस्तक (कक्षा 10, 2024 संस्करण) को अध्ययन की इकाई (unit of study) के रूप में चुना गया है। यह एक पूर्ण जनसंख्या नमूना (Total Population Sample) है। इसका अर्थ है कि पाठ्यपुस्तक के प्रत्येक अध्याय, अनुभाग, गतिविधि, कहानी और संवाद को शोध का हिस्सा माना गया है – किसी भी हिस्से को छोड़ा नहीं गया है।

2. नमूना चयन का कारण : इस शोध का मूल उद्देश्य “आनन्द सभा” पाठ्यक्रम में अंतर्निहित सार्वभौमिक मूल्यों की पहचान और विश्लेषण करना है। इसलिए:

एक प्रतिनिधि अध्याय चुनना पर्याप्त नहीं होता क्योंकि हर अध्याय अलग मूल्य, दृष्टिकोण और सन्देश को उजागर करता है।
प्रत्येक अध्याय में भिन्न-भिन्न नैतिक, सामाजिक, भावनात्मक, आध्यात्मिक और दार्शनिक मूल्य निहित हैं।

अतः पाठ्यपुस्तक का समग्र अध्ययन आवश्यक है ताकि किसी भी मूल्य या दृष्टिकोण की उपेक्षा न हो|

3. नमूना की विशेषताएँ

विशेषता	**विवरण**
नमूना का प्रकार	पूर्ण जनसंख्या नमूना (Total Population Sampling)
स्रोत	कक्षा 10 की “आनन्द सभा” पाठ्यपुस्तक

	(2024 संस्करण)
इकाई	अध्याय, कविताएँ, शिक्षण अनुभाग, अभ्यास प्रश्न, प्रोजेक्ट
कुल अध्याय	11 प्रमुख अध्याय + परिशिष्ट
चयन का आधार	सार्वभौमिक मूल्यों की व्यापकता और विविधता

*. उपयोग की गई सामग्री की श्रेणियाँ (Categories of Sample Content)

शोध में निम्नलिखित प्रकार की सामग्री का विश्लेषण किया गया:

सैद्धांतिक भाग - जैसे अध्याय 1: मूल्यों की शिक्षा, अध्याय 2: स्व-अन्वेषण की प्रक्रिया

भावनात्मक भाग - जैसे अध्याय 8: ममता, श्रद्धा, प्रेम आदि

आचरण/व्यवहार पक्ष - जैसे अध्याय 6: स्वयं में व्यवस्था, अध्याय 7: संयम और स्वास्थ्य

प्राकृतिक एवं अस्तित्व संबंधी मूल्य - जैसे अध्याय 10 व 11

प्रश्नोत्तर, गतिविधियाँ व अभ्यास - जिनके माध्यम से छात्रों की सहभागिता और मूल्य अनुभूति देखी जाती है

नमूना सीमाएँ

अध्ययन केवल कक्षा 10 की पुस्तक तक सीमित है – अन्य कक्षाओं (9, 11, 12) को शामिल नहीं किया गया।

पुस्तक का उपयोग विभिन्न विद्यालयों में भिन्न-भिन्न रूप में हो सकता है - व्यवहारिक रूप से इसे मापा नहीं गया।

यह पाठ्यपुस्तक की पाठ्य सामग्री तक सीमित है, छात्रों के अनुभव या व्यवहार में मूल्यों के प्रभाव को प्रत्यक्ष रूप से नहीं मापा गया ।

“संपूर्ण पुस्तक को नमूने के रूप में चुनना” इस शोध की एक सशक्त विशेषता है, जो यह सुनिश्चित करती है कि सभी संभावित मूल्य तत्वों का समावेशी विश्लेषण हो सके। यह प्रक्रिया शोध को समग्रता, गहराई और नैतिक वैधता प्रदान करती है।

3.3 उपकरण:-

शोध में प्रयुक्त "उपकरण" वे साधन व तकनीकें होती हैं जिनकी सहायता से शोधकर्ता डेटा को इकट्ठा करता है, विश्लेषण करता है और निष्कर्ष निकालता है| इस गुणात्मक शोध में आंतरिक सामग्री (Textual Content) और उसमें निहित मूल्यों का गहराई से अध्ययन किया गया है| इस उद्देश्य के लिए निम्नलिखित शोध उपकरणों का उपयोग किया गया:

1. विषयवस्तु विश्लेषण

यह प्रमुख उपकरण है, जिसके माध्यम से "आनन्द सभा" पाठ्यपुस्तक की कहानियों, कविताओं, उदाहरणों, प्रश्नों, और शैक्षिक गतिविधियों का सूक्ष्म अध्ययन किया गया| इसमें शामिल गतिविधियाँ: प्रत्येक अध्याय की गहराई से व्याख्या (Interpretation) ,मूल विचार, उद्देश्य और सन्देश की पहचान ,अध्याय के भीतर छिपे नैतिक, सामाजिक, मानवीय और सांस्कृतिक मूल्यों की पहचान, मूल्य की प्रकृति - व्यक्तिगत, सामाजिक, पर्यावरणीय या अस्तित्ववादी

उदाहरण: अध्याय 4 "सुख और समृद्धि को समझना" में प्रस्तुत विचारों का विश्लेषण यह दर्शाता है कि केवल भौतिक उपलब्धियाँ पर्याप्त नहीं होतीं – यहाँ विवेक, आत्म-संतोष और अंतःकरण की संतुष्टि जैसे मूल्य निहित हैं|

2. मूल्य-निर्धारण ढाँचा:- यह एक ढाँचागत उपकरण है जो हर पाठ में पाए गए मूल्यों को सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों की श्रेणियों में वर्गीकृत करने में मदद करता है| इसमें निम्नलिखित प्रमुख श्रेणियाँ शामिल की गईं:

मूल्य की श्रेणी	**उदाहरण**
व्यक्तिगत मूल्य	ईमानदारी, आत्मनिरीक्षण, संयम
सामाजिक मूल्य	सहयोग, करुणा, न्याय
सांस्कृतिक मूल्य	श्रद्धा, ममता, कृतज्ञता
पर्यावरणीय मूल्य	प्रकृति के साथ सामंजस्य

वैश्विक मूल्य	सह-अस्तित्व, शांति, वैश्विक नागरिकता

तुलनात्मक विश्लेषण : यह उपकरण “आनन्द सभा” में वर्णित मूल्यों की तुलना NEP 2020 तथा अन्य शैक्षिक दस्तावेजों में उल्लिखित मूल्यों से करने हेतु उपयोग किया गया|

3.4 डेटा संग्रहण की विधि:-

शोध कार्य को व्यवस्थित रूप से संपन्न करने के लिए विश्वसनीय और प्रासंगिक अध्ययन किया गया है. प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों से डेटा एकत्र किया गया है| इस शोध का मूल फोकस मूल्यों की पहचान और उनके शैक्षिक संदर्भ में विश्लेषण करना है|

A. प्राथमिक स्रोत

“आनन्द सभा” कक्षा 10 की पाठ्यपुस्तक (2024 संस्करण),इस पाठ्यपुस्तक की समस्त शिक्षण सामग्री - जैसे: कहानियाँ: जो विद्यार्थियों में करुणा, सत्यता, सहयोग, कर्तव्यबोध जैसे मूल्यों को प्रेरित करती हैं| प्रेरणादायक प्रसंग / शिक्षण अनुभाग: जो विद्यार्थी को जीवन के गहरे अर्थ और उद्देश्य की ओर ले जाते हैं|

विश्लेषण की पद्धति

हर पाठ, कहानी में समाहित मूल्यों की पहचान की गई|

उन मूल्यों को सार्वभौमिक मूल्यों की श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया (जैसे - शांति, प्रेम, करुणा, सत्य, सहिष्णुता आदि)| विद्यार्थियों पर इन मूल्यों के संभावित प्रभावों की विवेचना की गई|

B. द्वितीयक स्रोत (Secondary Sources)

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020)

इस नीति में मूल्य-आधारित शिक्षा को विशेष प्राथमिकता दी गई है|

मूल्य-शिक्षा को विद्यालय शिक्षा के हर स्तर पर अनिवार्य बनाने की अनुशंसा की गई है|

NEP 2020 में उल्लिखित “सामाजिक, नैतिक और भावनात्मक शिक्षा” के उद्देश्यों का “आनन्द सभा” पाठ्यक्रम से मिलान किया गया|

2. यूनिवर्सल ह्यूमन वैल्यूज (Universal Human Values) से संबंधित पुस्तकें व शोध-पत्र

AICTE द्वारा प्रकाशित UHV (Universal Human Values) की पुस्तकें और प्रशिक्षण सामग्री जैसे: "A Foundation Course in Human Values and Professional Ethics" ,UHV-II Modules (AICTE / UHV Trust / uhv.org.in),इन स्रोतों से यह समझा गया कि मानव मूल्यों को कैसे परिभाषित, वर्गीकृत और व्यावहारिक रूप में शिक्षित किया जा सकता है। 3. पूर्ववर्ती शोध और शैक्षिक नीति दस्तावेज (Previous research and educational policy documents)मूल्य-शिक्षा से संबंधित पूर्व प्रकाशित शोध-पत्र, शोध-प्रबंध, शैक्षिक समीक्षाएँ, यूनिसेफ एनसीईआरटी की रिपोर्ट्स आदि। इनका उपयोग "आनन्द सभा" पाठ्यक्रम की तुलना अन्य मूल्य-आधारित शैक्षिक प्रयासों से करने हेतु किया गया।

3.5 डेटा विश्लेषण की प्रक्रिया:-

सभी अध्यायों को गहराई से पढ़कर मूल्यों की सूची तैयार की गई। सारणी (टैबुलेशन) की गई कि किस अध्याय में कौन-कौन से मूल्य निहित हैं।पाठ्यपुस्तक की सामग्री और द्वितीयक स्रोतों में वर्णित सार्वभौमिक मूल्यों के बीच तुलनात्मक विश्लेषण किया गया। विषयों की पुनरावृत्ति, उनका संदर्भ और विद्यार्थियों में अपेक्षित प्रभावों का अवलोकन किया गया। इस शोध में प्राथमिक स्रोत के रूप में "आनन्द सभा" पाठ्यपुस्तक का केंद्रीय विश्लेषण किया गया जबकि द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से इस विश्लेषण को नीति, सिद्धांत और शोध दृष्टिकोण से पुष्टि प्रदान की गई। इस प्रकार, यह डेटा संग्रहण प्रक्रिया शोध को वैचारिक गहराई और सैद्धांतिक वैधता प्रदान करती है।

1.पाठ्यपुस्तक के प्रत्येक अध्याय का गहन पाठ विश्लेषण:

प्रथम चरण में, पुस्तक के सभी 11 अध्यायों (जैसे अध्याय 1: मूल्यों की शिक्षा को समझना, अध्याय 4: सुख और समृद्धि, अध्याय 8: श्रद्धा, ममता, प्रेम,) आदि को ध्यानपूर्वक पढ़ा गया।

प्रत्येक पाठ के संदेश, कथानक, उदाहरण, प्रश्नोत्तरी व अभ्यास गतिविधियों का विवेचनात्मक अध्ययन किया गया। विश्लेषण करते समय यह देखा गया कि कौन-से मूल्य स्पष्ट रूप से तथा कौन-से अप्रत्यक्ष रूप से प्रस्तुत हैं।

उदाहरण: अध्याय 4 "सुख और समृद्धि को समझना" में मूल भाव:

- ✧ आत्म-संतोष
- ✧ विवेकपूर्ण जीवन
- ✧ भौतिक संसाधनों पर न्यूनतम निर्भरता
- ✧ नैतिक जीवन की प्राथमिकता

2.प्रत्येक पाठ में अंतर्निहित नैतिक/सामाजिक/सांस्कृतिक मूल्यों की पहचान : हर अध्याय में प्रस्तुत विचारों और गतिविधियों के पीछे निहित मूल्यों की पहचान की गई। इस प्रक्रिया में

जिन मूल्यों को सबसे अधिक प्रमुखता मिली, वे हैं:
सत्यनिष्ठा (Honesty)

करुणा (Compassion)

सह-अस्तित्व (Coexistence)

स्वावलंबन (Self-reliance)

सहयोग (Cooperation)

प्रेम व मैत्री (Love and Friendship)

श्रद्धा व कृतज्ञता (Respect and Gratitude)

उदाहरण: अध्याय 6 “स्वयं में व्यवस्था” आत्म-अवलोकन और मन की स्थिरता पर बल देता है - जिससे आत्मनियंत्रण और मानसिक अनुशासन का मूल्य स्पष्ट होता है। NEP 2020, UNESCO, UHV (Universal Human Values) आदि द्वारा स्वीकृत सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों की सूचियों से तुलना की गई: NEP 2020 द्वारा उल्लिखित मूल्य: समानता, समावेशिता, न्याय, स्वतंत्रता, सहयोग, करुणा, वैश्विक नागरिकता आदि। UNESCO की दृष्टि से: Peace, Human dignity, Tolerance, Respect for others, Equity, आनंद सभा पाठ्यक्रम में इन सभी मूल्यों की किसी न किसी रूप में उपस्थिति देखी गई।

अध्याय	**मुख्य मूल्य**	**सार्वभौमिक मूल्य से संबंध**
अध्याय 5	आत्म-अवलोकन, संयम	आत्मनियंत्रण, आत्मज्ञान
अध्याय 8 (अ)	ममता, वात्सल्य, श्रद्धा	करुणा, प्रेम, आदर
अध्याय 10	पर्यावरणीय संतुलन	प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व, सह-अस्तित्व

*विश्लेषण के आधार पर सारणीकरण और वर्गीकरण (Tabulation and Classification)

सभी अध्यायों के प्रमुख मूल्यों को एक तालिका में वर्गीकृत किया गया, जैसे:

सारणी: अध्याय अनुसार मूल्यों का वर्गीकरण

अध्याय संख्या	अध्याय का नाम	प्रमुख मूल्य	सार्वभौमिक श्रेणी
1	मूल्यों की शिक्षा को समझना	नैतिकता, विवेक, उद्देश्यपूर्ण शिक्षा	शिक्षा में मूल्यबोध
3	मूल चाहनाएँ	सुख, समृद्धि, संतुलित जीवन	जीवनदर्शन
6	स्वयं में व्यवस्था	आत्मनियंत्रण, कल्पनाशीलता	व्यक्तिगत अनुशासन
8 (अ)	श्रद्धा, ममता, कृतज्ञता	प्रेम, आदर, भावनात्मक जुड़ाव	मानव-मानव संबंध
10	प्रकृति व अस्तित्व की व्यवस्था	पर्यावरणीय चेतना, सहअस्तित्व	प्रकृति के प्रति दायित्व

"आनन्द सभा" पाठ्यक्रम के अध्यायों में निहित मूल्यों का विश्लेषण स्पष्ट रूप से यह दर्शाता है कि यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों की समझ, अनुभूति, और व्यावहारिकता को विकसित करता है। यह प्रक्रिया पाठ्य-सामग्री की गहराई से व्याख्या, मूल्यों की पहचान, तुलनात्मक अध्ययन, और सार्थक वर्गीकरण पर आधारित हैं

यह ढाँचा NEP 2020, UNESCO, और UHV द्वारा स्वीकार किए गए मूल्यों पर आधारित है।

3.6 नैतिक विचार:-

1. मानवीय गरिमा का सम्मान : विद्यार्थियों और शिक्षकों के दृष्टिकोण, अनुभव, आस्थाओं का पूरा सम्मान किया गया हैं | आनंद सभा पाठ्यक्रम मानता है कि हर व्यक्ति में चेतना और आत्मसम्मान होता है; इसलिए शोधकर्ता भी सहभागियों की गरिमा बनाए रखी है|

2. हानि रहितता का सिद्धांत: कोई भी गतिविधि विद्यार्थियों के मानसिक, भावनात्मक या सामाजिक स्वास्थ्य को प्रभावित नहीं करती|

Universal Human Values जैसे प्रेम, शांति, न्याय, करुणा - विद्यार्थियों में सकारात्मक ऊर्जा लाने वाली है भय या अपराधबोध नहीं।

संवेदनशीलता और सांस्कृतिक आदर: आनंद सभा पाठों में आत्मा, शरीर, प्रकृति, सामाजिक व्यवहार आदि पर चर्चा होती है – इसमें किसी की धार्मिक या सांस्कृतिक मान्यताओं को ठेस न पहुँचे यह पूर्ण प्रायस किया गए है ,शोधकर्ता ने सांस्कृतिक विविधता और विद्यार्थियों की भावनात्मक अवस्था का ध्यान रखा है | पक्षपात से बचाव, Universal Values जैसे सत्य, न्याय, समानता शोधकर्ता से अपेक्षा करते हैं कि वह निष्पक्ष रहे। न तो अपने व्यक्तिगत धार्मिक, सामाजिक या वैचारिक झुकाव थोपे, और न ही विषयों के चुनाव में भेदभाव करे।

Alignment with NEP 2020 Principles

आनंद सभा पाठ्यक्रम, NEP 2020 की आत्मा के अनुरूप है: holistic development, value-based education, critical thinking। इसलिए किसी भी अध्ययन या विश्लेषण को नीति की इन्हीं नैतिक प्राथमिकताओं के अनुरूप होना चाहिए। Ethical Considerations सुनिश्चित करते हैं कि: अध्ययन केवल शैक्षणिक नहीं, नैतिक रूप से उत्तरदायी भी हो। Universal Human Values केवल विषय नहीं, शोध पद्धति का भी आधार बनें।विद्यार्थी केवल रिसर्च सब्जेक्ट नहीं, सम्मानित और जागरूक मानव इकाई समझे जाएँ।

अध्याय 4

सामग्री विश्लेषण

इसके अंतर्गत अध्याय विश्लेषण निहित है -पुस्तक सामग्री विश्लेषण (Book Content Analysis) एक व्यवस्थित तकनीक है जिसके माध्यम से किसी पुस्तक की सामग्री का विश्लेषण कर यह समझा जाता है कि उसमें कौन से विषय, मूल्य, विचार, भावनाएँ, दृष्टिकोण, या संदेश प्रस्तुत किए गए हैं, और वे कैसे पाठक या पाठ्यक्रम को प्रभावित करते हैं।

मुख्य उद्देश्य–

पुस्तक की विचारधारा या मूल्य-तंत्र को समझना,भाषा, शैली व संरचना का मूल्यांकन करना,लेखक के उद्देश्य, दृष्टिकोण व प्रभाव की पहचान करना,पुस्तक में मौजूद सामाजिक, सांस्कृतिक या शैक्षिक संदेशों का विश्लेषण करना

पाठ्यक्रम/शिक्षा नीति के अनुरूपता की जाँच करना, पुस्तक सामग्री विश्लेषण के प्रमुख तत्व:

विवरण	**विश्लेषण पक्ष**
विषयवस्तु (Themes)	पुस्तक में प्रमुख विषय कौन-कौन से हैं? जैसे – शिक्षा, नैतिकता, समाज, राजनीति आदि।
मूल्य (Values)	क्या पुस्तक में नैतिक, सांस्कृतिक या सार्वभौमिक मूल्य दर्शाए गए हैं?
शैली (Style)	भाषा की सरलता, भावाभिव्यक्ति, कथा की प्रवाहिता आदि का मूल्यांकन
संरचना (Structure)	पुस्तक के अध्यायों का संगठन, पाठों का क्रम, चित्र/संदर्भ का प्रयोग

शिक्षा नीति से सामंजस्य	क्या पुस्तक नई शिक्षा नीति (NEP 2020) जैसे दस्तावेज़ों से मेल खाती है?

पुस्तक सामग्री विश्लेषण करने की प्रक्रिया:

पुस्तक का चयन - अध्ययन हेतु उपयुक्त पुस्तक चुनना (जैसे "आनंद सभा पाठ्यक्रम")

उद्देश्य निर्धारण - विश्लेषण किस दृष्टिकोण से करना है? (जैसे - नैतिक मूल्य)

कोडिंग (Coding) - विषयों/मूल्यों को वर्गीकृत करना जैसे - करुणा, समानता, न्याय

सामग्री का वर्गीकरण - पाठों में कौन-कौन से मूल्य कितनी बार या किस तरह प्रस्तुत हुए

विश्लेषण और व्याख्या - डेटा का विश्लेषण कर सार्थक निष्कर्ष निकालना

रिपोर्ट लेखन - अध्ययन के आधार पर निष्कर्ष और सुझाव प्रस्तुत करना

"आनंद सभा पाठ्यक्रम" का सामग्री विश्लेषण कर रहे हैं और उद्देश्य है – "सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों का पता लगाना",तब पाठ या गतिविधि को पढ़कर यह नोट करेंगे कि:

कौन-कौन से मूल्य उसमें हैं (जैसे करुणा, सह-अस्तित्व)?

वे मूल्य अध्याय कहानी या गतिविधि में कैसे व्यक्त हुए हैं?

क्या वह मूल्य स्पष्ट रूप से बच्चों तक पहुँचता है?

पुस्तक सामग्री विश्लेषण: एक वैज्ञानिक व शैक्षणिक तकनीक है जो पुस्तक की सामग्री को मात्रात्मक (Quantitative) और गुणात्मक (Qualitative) दोनों दृष्टियों से समझने में सहायक होती है। यह विशेष रूप से तब महत्वपूर्ण होती है जब किसी पाठ्यपुस्तक या शैक्षिक सामग्री के मूल्य, प्रभाव, या नीति-संगति का अध्ययन करना हो।

कवर पृष्ठ - आनंद सभा सार्वभौमिक मूल्यों से आनन्द की ओर -(सार्वभौमिक मानवीय मूल्य)

पाठ्यपुस्तक (कक्षा 10)

मुख्य शीर्षक और टैगलाइन: "आनंद सभा - सार्वभौमिक मूल्यों से आनंद की ओर (सार्वभौमिक मानवीय मूल्य)" , संकेत और संदेश: यह स्पष्ट रूप से बताता है कि यह पुस्तक केवल शैक्षणिक विषयवस्तु नहीं बल्कि एक जीवन दृष्टिकोण (Way of Living) सिखाने के लिए बनाई गई है।

“आनंद की ओर” वाक्यांश का अर्थ है – छात्र केवल ज्ञान ही नहीं, आंतरिक सुख और संतुलन की दिशा में भी आगे बढ़ें|

रंग योजना और डिज़ाइन:

तत्व	विश्लेषण
गुलाबी-गेरुआ पृष्ठभूमि	यह रंग संयोजन शांति, उत्साह और आत्मचिंतन का प्रतीक है| यह मन को स्थिर और सकारात्मक करता है|
ब्रश स्ट्रोक डिजाइन	यह एक रचनात्मकता और खुली सोच का प्रतीक है, जो दर्शाता है कि यह पाठ्यक्रम कोई जड़ या रटने वाली बात नहीं, बल्कि व्यक्तिगत अनुभव और खोज पर आधारित है|
सरल लेकिन औपचारिक फॉन्ट	विषय को गंभीरता और सम्मान देने वाला| यह छात्रों को विषय की महत्ता समझाता है|

प्रकाशक और सहयोगी संस्थाएँ: राज्य आनंद संस्थान (म.प्र. शासन) और AICTE, नई दिल्ली - यह इस पाठ्यक्रम की गंभीरता और अधिकारिकता को दर्शाता है|जब विद्यार्थी यह देखता है कि इसे राज्य और राष्ट्रीय स्तर की संस्थाएं मान्यता दे रही हैं, तो उसे भरोसा और प्रेरणा मिलती है|

छात्रों पर पड़ने वाला प्रभाव:

पहलू	प्रभाव
मनोवैज्ञानिक प्रभाव	कवर पृष्ठ एक शांत, सौम्य और जिज्ञासा जगाने वाला माहौल बनाता है। विद्यार्थी इसे देखकर विषय में रुचि ले सकता है।
शैक्षिक संदेश	यह यह बताता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल अंक लाना नहीं बल्कि मानव बनने की प्रक्रिया को अपनाना है।
नैतिक और मूल्यपरक प्रेरणा	“सार्वभौमिक मानवीय मूल्य” जैसे शब्द बच्चों में विचारों की गहराई उत्पन्न करते हैं – जैसे कि सभी के लिए प्रेम, करुणा, अहिंसा आदि।
सकारात्मकता की ओर झुकाव	“आनंद” शब्द स्वयं में एक सकारात्मक शक्ति है जो छात्र को पाठ्यक्रम की ओर आकर्षित करता है।

पुस्तक के प्रथम पृष्ठ पर राष्ट्रगान तथा राष्ट्रीय ध्वज की छवि अंकित की गई है जिसमे ध्वज और राष्ट्रगान का विस्तृत विवरण विद्यार्थियों की जानकारी के लिए प्रस्तुत किया है । जिससे परिलक्षित होता है कि विद्यार्थियों में देशभक्ति और राष्ट्र चेतना का भाव और सम्मान रोपित और विकसित किया जा सके।

किताब के अन्तिम पृष्ठ पर भारत का संविधान भाग 4 क

नागरिकों के मूल कर्त्तव्य ,अनुच्छेद 51 क अंकित किये गए है जिसके मूल भाव विद्यार्थियों को ज़िम्मेदार नागरिक बनाना जिससे छात्र अपने कर्त्तव्यों के प्रति भी जागरूक और ज़िम्मेदार रहें । **“**आनंद सभा” पाठ्यपुस्तक का कवर पृष्ठ न केवल एक आकर्षक डिज़ाइन है, बल्कि यह एक स्पष्ट और गहरा संदेश देता है –यह कवर छात्रों के मन में आत्मनिरीक्षण, जागरूकता और आत्मिक विकास की भावना पैदा करता है, जो कि NEP 2020 के उद्देश्यों और सार्वभौमिक मूल्यों के बिल्कुल अनुरूप है। पुस्तक में निहित सभी अध्याय प्रस्ताव के रूप में वर्णित है जिनमे किसी प्रकार का मूल्यांकन सही या गलत के रूप में ना हो कर केवल प्रस्ताव स्वरूप दिया जाता है । जिसमे विद्यार्थी अपनी सहज स्वीकृती के आधार पर स्व अन्वेक्षण और स्वयं में प्रस्ताव को जाँच परख करके दिखने के बाद ही प्रस्तावो को मान्य या अमान्य करने हेतु स्वतंत्र है । इस पुस्तक में कुल 11 अध्याय समाहित है । प्रत्येक अध्याय

का अपना एक मूल्य है जिसके द्वारा विद्यार्थी स्व प्रेरणा से मूल्यों को समझने और जीवन में अपनाने की ओर अग्रसर होता है। इन अध्यायों द्वारा श्रोता धीरे धीरे अपने भीतर एक संवाद प्रक्रिया के माध्यम से सहज स्वीकृति के आधार पर जांचना प्रारम्भ करते है।'जैसे आप है' और 'जैसा होना आपको सहज स्वीकार्य है'| इस पुस्तक में दिए गए समस्त प्रस्तावों का ध्यान आकर्षण केवल श्रोताओं को स्वयं में स्व अन्वेक्षण स्व अध्यापन की प्रक्रिया शुरू करने में सहयोग करने हेतु है। स्व अन्वेक्षण की इस प्रक्रिया में श्रोता इन मूल्यों को स्वयं में देख सकेंगे जो प्राकृतिक रूप से उनमें अंतर्निहित है।यह सभी प्रस्ताव स्व विकास अर्थात आत्म विकास की ओर ले जाएंगे, जिसके परिणाम स्वरुप उनके मूल चाहना के पूर्ति हो पाएगी।

अध्याय 1: मूल्यों शिक्षा को समझना

मुख्य विचार: तृप्तिपूर्ण जीवन, मूल्य और कौशल की पूरकता, नैतिक दृष्टि का विकास।समग्र दृष्टि के साथ जीने के कार्यक्रम की स्पष्टता, वर्तमान समस्याओं का समाधान|

मूल्य शिक्षा , शिक्षा का वह हिस्सा जय जो मानव की बड़ी व्यवस्था में भागीदारी की समझ और वैसा ही जीने को सुनिश्चित करता है,मूल्य शिक्षा की विषयवस्तु में मानव के जीने के सभी स्तर एवं मानव के जीने के सभी आयाम सम्मिलित हो |मानव में नैतिक योग्यता के विकास से व्यावसायिक नैतिकता सुनिश्चित होती है

विश्लेषण: यह अध्याय शिक्षा को केवल रोज़गार या जानकारी तक सीमित न रखते हुए जीवन जीने की कला के रूप में प्रस्तुत करता है। मूल्य शिक्षा की प्रक्रिया के लिए स्व अन्वेक्षण की प्रक्रिया आवश्यक है।स्व अन्वेक्षण की प्रक्रिया में सहज स्वीकृति के आधार पर स्वयं में जाँच और उसको जीने में प्रयोग करके आने वाले परिणामों को जाँचना सम्मिलित है। यह स्पष्ट करता है कि मानवीय मूल्यों के बिना व्यावसायिक कौशल अधूरा है। अंत में स्व समझ हेतु स्व मूल्यांकन के लिए प्रश्न तथा स्व- अन्वेषण के लिए अभ्यास दिए गए है जिनके माध्यम से विद्यार्थी स्वयं से सहज स्वीकृति के आधार पर अपना निर्णय लेने में सक्षम हो पाते है|

समझ: इस अध्याय के बाद छात्र में छोटी छोटी भागीदारी के साथ सुखी होने का अभ्यास और अनुभूति हो पाती है । उसकी भागीदारी का निर्वाह करने की योग्यता विकसित करने का प्रयास है और यही स्वतंत्रता और सुख है । अध्याय के अंत में "आपके प्रश्न" के माध्यम से छात्र और श्रोता उनके प्रश्न और शंका को अपनी नोटबुक में लिख कर दिए गए प्रस्तावों पर सहज स्वीकृति के आधार पर निर्णय और समझ के साथ उत्तर प्राप्त कर पाने की योग्यता रख पाते है ।

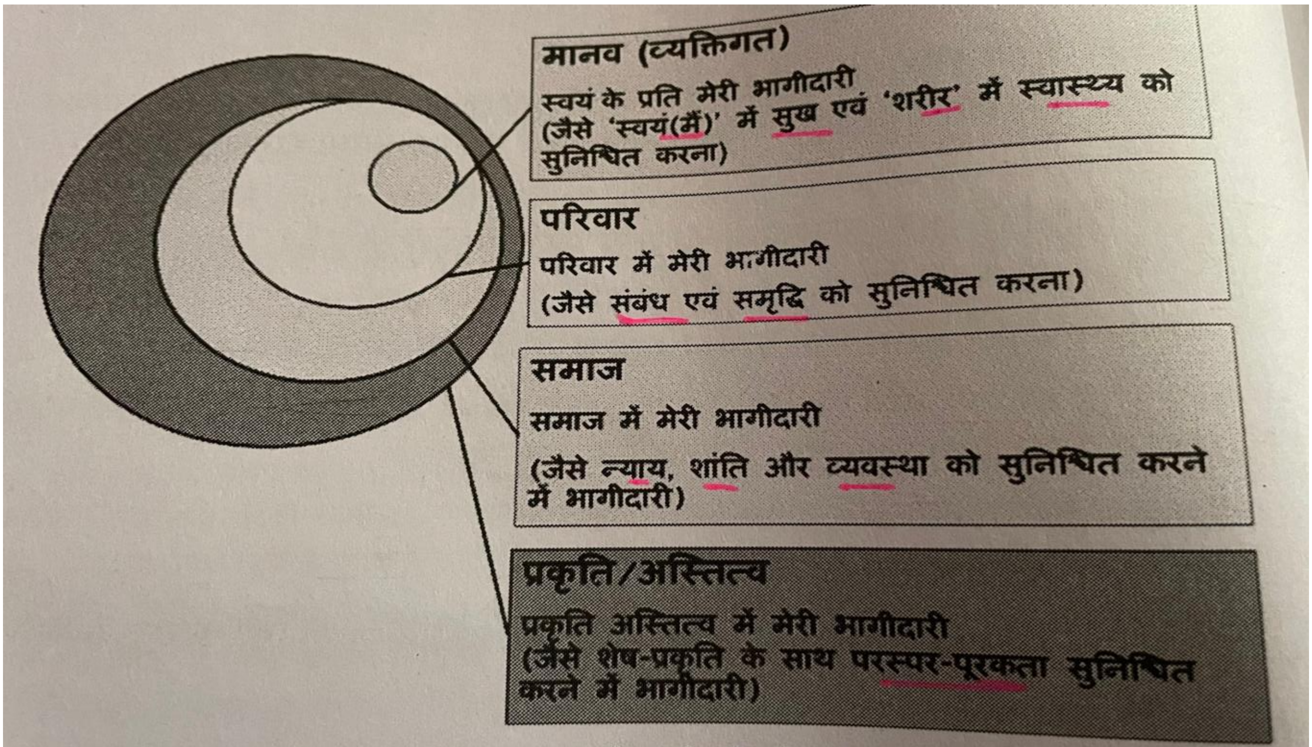

चित्र. 1-1. बड़ी व्यवस्था में भागीदारी और अंतर्संबंध

अध्याय 2: स्व-अन्वेषण – मूल्य शिक्षा की प्रक्रिया

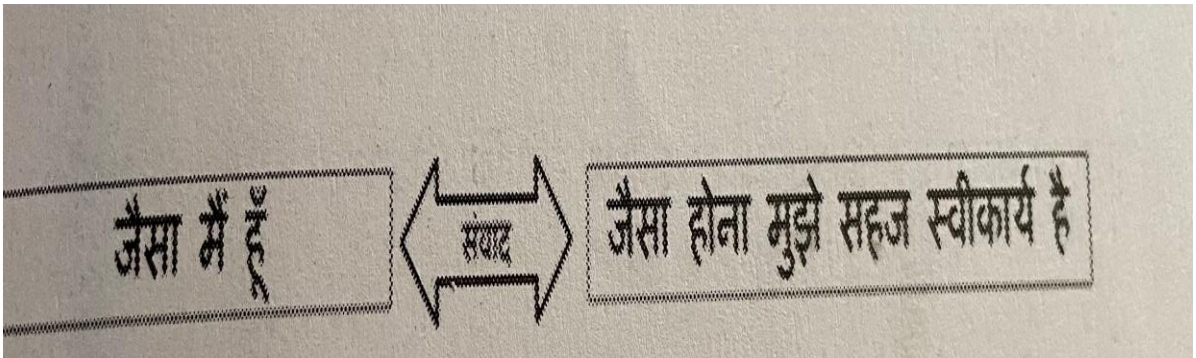

चित्र. 2-1. स्वयं में संवाद

मुख्य विचार: स्वयं को जानने की प्रक्रिया, आत्मनिरीक्षण, दृष्टिकोण की स्पष्टता।

स्वयं को जान ने की प्रक्रिया स्वयं में संवाद से प्रारंभ होती है. मेरे इच्छा, विचार, आशा, कल्पनाशीलता पर निर्णय या मेरी सहज स्वीकृती पर निर्णय लेना इस अध्याय में निहित है

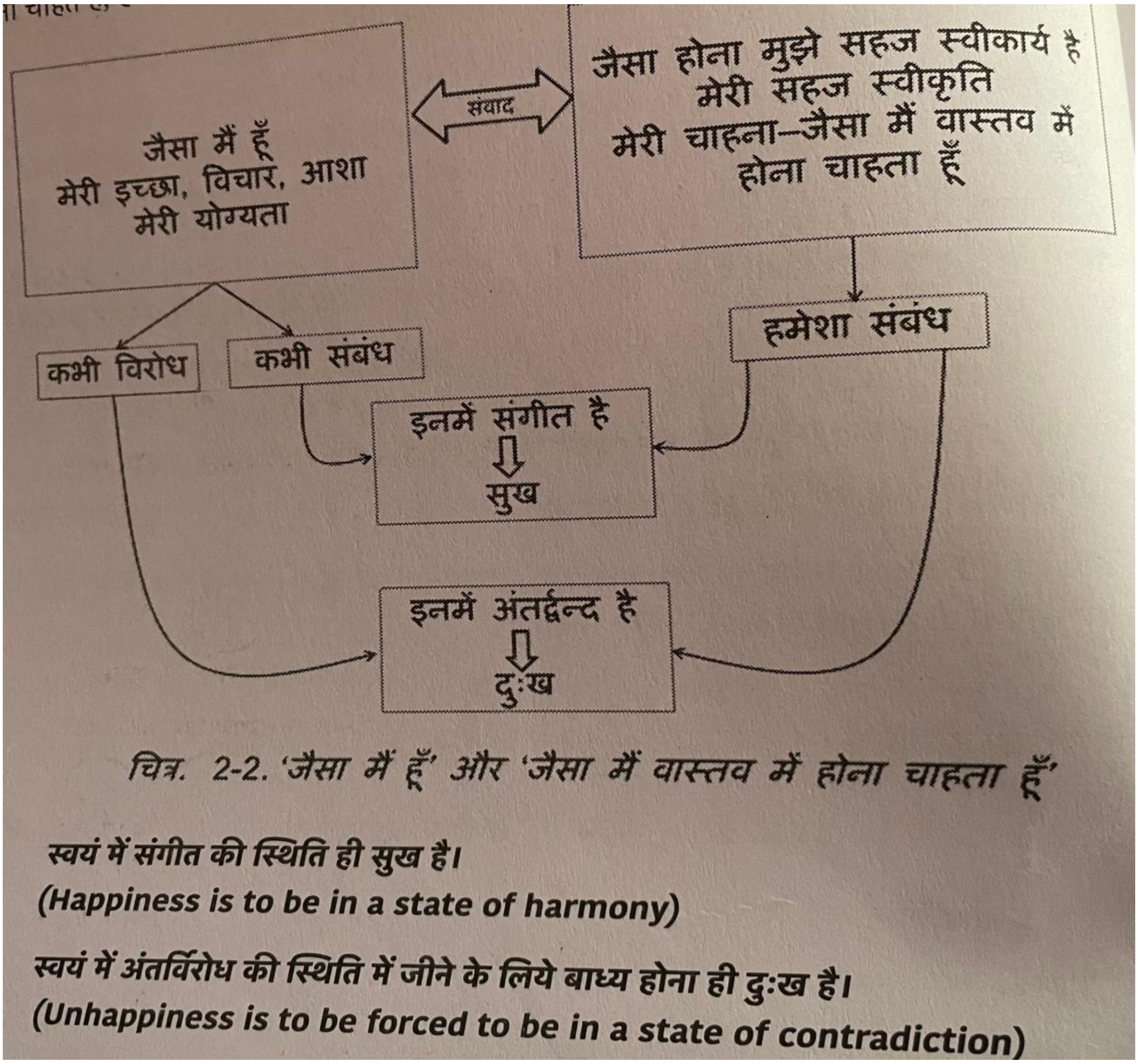

चित्र. 2-2. 'जैसा मैं हूँ' और 'जैसा मैं वास्तव में होना चाहता हूँ'

स्वयं में संगीत की स्थिति ही सुख है।
(Happiness is to be in a state of harmony)

स्वयं में अंतर्विरोध की स्थिति में जीने के लिये बाध्य होना ही दुःख है।
(Unhappiness is to be forced to be in a state of contradiction)

यह चित्र (चित्र 2-2)

'स्व' (self) और 'स्वभाविक इच्छा' (natural acceptance) के बीच के संबंध को स्पष्ट करता है। इसे सार्वभौमिक मानव मूल्यों के दृष्टिकोण से समझा जा सकता है।

मुख्य संरचना: * 'जैसा मैं हूँ' इसमें व्यक्ति की इच्छा, विचार, आशा और योग्यता आती है। यह वह स्थिति है जो व्यक्ति वास्तव में अभी अनुभव करता है।

'जैसा होना मुझे सहज स्वीकार्य है'

यह वह स्थिति है जिसे व्यक्ति सहज रूप से स्वीकारता है, यानि भीतर से सही और उपयुक्त मानता है। इसमें व्यक्ति की सहज स्वीकृति और चाहत होती है।
इन दोनों के बीच संवाद होता है, और तब तीन स्थितियाँ बनती हैं:

हमेशा संबंध (संगीत) → सुख

कभी संबंध, कभी विरोध (आंशिक sangeet) → आंशिक सुख या संघर्ष

कभी विरोध (विरोधाभास/असंगति) → दुःख

प्रमुख अवधारणाएँ:

संगीत: जब 'जैसा मैं हूँ' और 'जैसा मैं होना चाहता हूँ' में मेल होता है, तो सुख उत्पन्न होता है।
यह आंतरिक सामंजस्य की स्थिति है।

विरोध / अंतरविरोध: जब दोनों में टकराव या विरोधाभास होता है, तो दुःख होता है।यह आत्म-संघर्ष की स्थिति है।

शिक्षाशास्त्रीय और मूल्यपरक विश्लेषण: उपयोगिता: यह आरेख छात्रों को स्व-चिंतन, आत्ममूल्यांकन और आत्मसंगति के लिए प्रेरित करता है। Universal Human Values की नींव इस बात पर है कि व्यक्ति अपने भीतर और बाहर संगति बनाए।

विकास और निर्णय-निर्माण में उपयोग:- जब विद्यार्थी अपने विचार और मूल्यों का विश्लेषण करते हैं, तो वे सही निर्णय लेने में सक्षम बनते हैं। यह आत्म-ज्ञान (self-awareness) की ओर पहला कदम है।

. Universal Human Values के संदर्भ में व्याख्या:

मानव आकांक्षा (Basic Aspiration): हर व्यक्ति सुख चाहता है – यह स्थिति तभी संभव है जब आत्म के स्तर पर संगति हो। मानव मूल्य (Human Values): स्वभाविक स्वीकृति के अनुसार जीने से ही मानव-मूल्यों का विकास होता है। यह चित्र दर्शाता है कि सच्चा सुख केवल बाहरी परिस्थितियों से नहीं, बल्कि अंतर्मन की संगति से उत्पन्न होता है। यदि व्यक्ति की वर्तमान स्थिति उसके भीतर की स्वीकृति से मेल खाती है, तो वही स्थायी सुख है।

मूल्य: आत्मचिंतन, ईमानदारी, स्वीकृति, शांति।

विश्लेषण: यह अध्याय भीतर की यात्रा को केंद्र में रखता है, जिससे विद्यार्थी स्वयं से संवाद कर सकें। यह आत्म-समझ से मूल्य शिक्षा को जोड़ता है।
प्रस्ताव: जो भी कहा जा रहा है या पढ़ाया जा रहा है, वह एक प्रस्ताव है – न कि अंतिम सत्य। छात्र को यह कहा जा रहा है कि किसी भी विचार को सही या गलत मानने के बजाय पहले जाँचना चाहिए।

यह सोच की स्वतंत्रता और व्यक्तिगत अनुभव के महत्व को दर्शाता है।
~स्वान्वेषण की दो प्रमुख अवस्थाएँ:

(1) जांच – अपनी सहज स्वीकृति के आधार पर:

कोई भी प्रस्ताव (statement/idea) हमें पहले भीतर से जाँचना चाहिए कि क्या यह हमारे भीतर सही लगता है?

यह भीतरी संवाद (inner dialogue) और आत्मनिरीक्षण (introspection) का हिस्सा है।

(2) प्रायोगिक सत्यापन – व्यवहार में जी कर देखना:

प्रस्ताव को केवल विचार स्तर पर नहीं, व्यवहार और कार्य में उतार कर परखना चाहिए।

यह दो शाखाओं में विभाजित है:

(2a) व्यवहार में, मानव के साथ:

यदि यह समझ मानव संबंधों में सुख पैदा करती है → तो यह सही समझ है।

(2b) कार्य में, शेष-प्रकृति के साथ:

यदि यह समझ प्रकृति के साथ समृद्धि लाती है → तो यह भी सही समझ मानी जाती है।

परिणाम: सही समझ

इन दोनों स्तरों (भीतर और बाहर) पर यदि एक प्रस्ताव को सही पाया गया, तो यह हमारी 'सही समझ' बन जाती है।

फिर यह समझ हमारे जीवन का आधार बनती है।

शैक्षिक और नैतिक महत्व:

यह प्रक्रिया छात्रों को आज्ञाकारिता नहीं, विवेकपूर्ण स्वीकृति की ओर ले जाती है।

इसमें क्रिटिकल थिंकिंग (critical thinking), मूल्यांकन (evaluation) और अनुभव से सीखने पर बल है।

यह 'आनंद सभा' पाठ्यक्रम की मूल आत्मा है – हर छात्र खुद से प्रश्न करे, स्वयं जाँचे और जीवन में उतारे।

Universal Human Values के दृष्टिकोण से:

सुख और समृद्धि को जीवन का लक्ष्य मानते हुए यह प्रक्रिया बताती है कि सही समझ मानव के साथ व्यवहार में सुख और प्रकृति के साथ कार्य में समृद्धि दिलाती है।

यह मूल्य-आधारित शिक्षा की प्रक्रिया को वैज्ञानिक और व्यक्तिगत दोनों दृष्टिकोण से सशक्त बनाती है। यह चित्र दिखाता है कि ज्ञान थोपने की वस्तु नहीं है, बल्कि स्वतंत्र खोज और परीक्षण का विषय है।

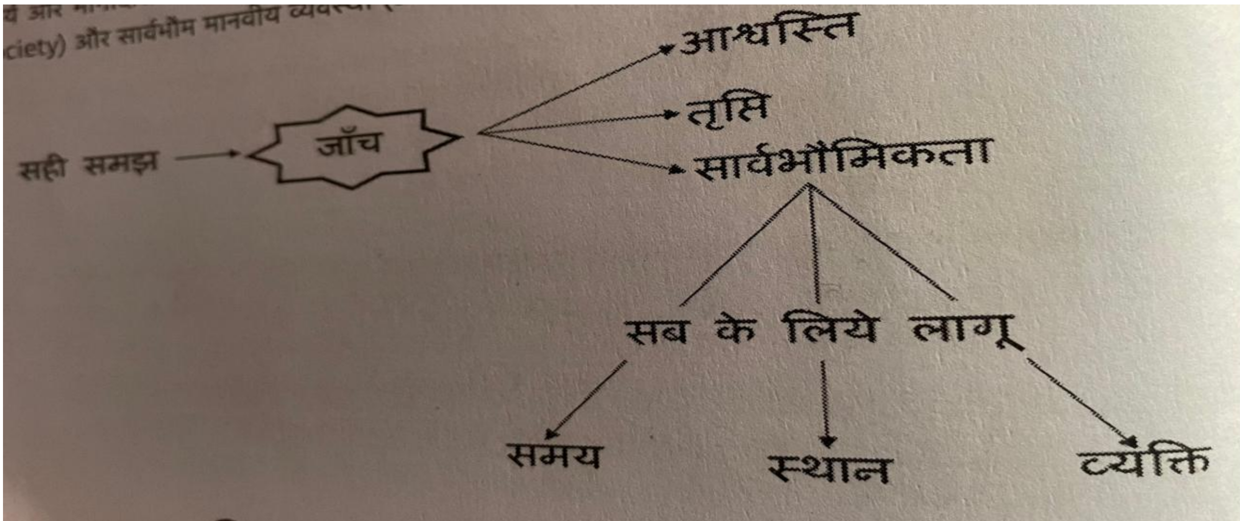

चित्र. 2-5. सही समझ की विशेषतायें

इस अध्याय अनुसार छात्रों को हर प्रस्ताव को स्वयं जांचने, परखने और समझने का अवसर दिया जाना चाहिए, जिससे उसकी उपरोक्तानुसार सही समझ विकसित हो सके तथा वे स्थायी सुख और समृद्धि की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

सीख- सही समझ के निर्णय एक पीढ़ीसे दूसरी पीढ़ी में पहुँच कर पीढ़ी दर पीढ़ी निरन्तर आगे बढ़ती रहे तेहा इसके द्वारा प्रत्येक मानव के लिए निरंतर सुख और समृद्धि पूर्वक जीने की मानवीय परंपरा का उद्भव हो।

अध्याय 3: मानव की मूल चाहना और उसकी पूर्ति :- मूल चाहना से तृप्ति पूर्वक जीने की और अग्रसर होते है

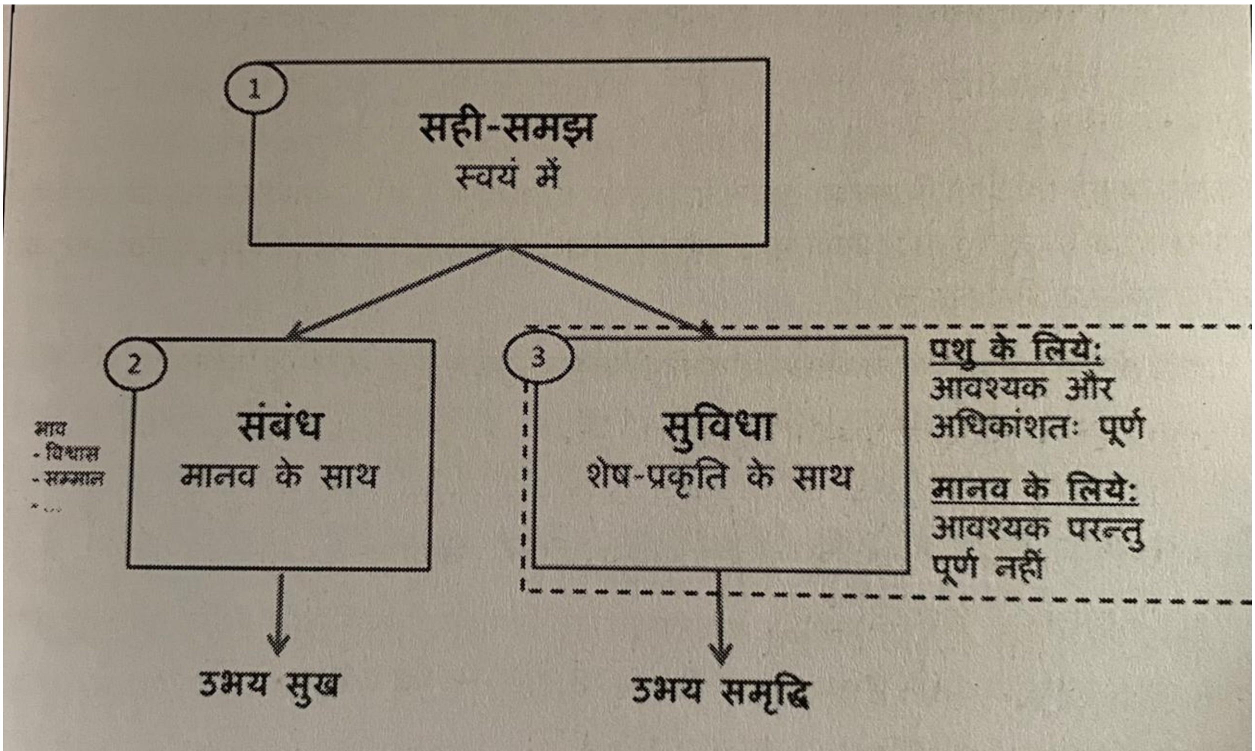

चित्र. 3-5. सही-समझ, संबंध और सुविधा के वरीयता क्रम में जीता हुआ मानव

सही समझ + संबंध –> उभय सुख

सही समझ + सुविधा –> उभय समृद्धि

यह चित्र 3-5 “सही-समझ, संबंध और सुविधा के दरियता क्रम में जीता हुआ मानव” नामक अवधारणा को स्पष्ट करता है| यह Universal Human Values (UHV) और आनंद सभा पाठ्यक्रम में एक अत्यंत महत्वपूर्ण बिंदु है, जो यह बताता है कि एक समग्र मानव जीवन के लिए किन प्राथमिकताओं का क्रम होना चाहिए|

(1) सही-समझ: यह स्वयं में होती है – यानी मनुष्य के भीतर|

सही समझ जीवन, अस्तित्व, उद्देश्य, रिश्तों और प्रकृति के प्रति स्पष्टता लाती है|

यह आधार है जिससे आगे के सभी निर्णय, संबंध और कार्य प्रेरित होते हैं|

(2) संबंध: यह सही समझ से उत्पन्न होता है|

संबंध में विश्वास, सम्मान, स्नेह, ममता, आदि शामिल हैं|

सही समझ के साथ यदि मानव के साथ संबंध बनते हैं तो "उभय सुख" (mutual happiness) होता है।

(3) सुविधा: – शेष प्रकृति के साथ संबंध:

इसमें भोजन, वस्त्र, आवास, उपकरण आदि भौतिक आवश्यकताएं आती हैं।

यदि सही समझ के साथ भौतिक संसाधनों का उपयोग किया जाए, तो इससे "उभय समृद्धि" प्राप्त होती है – यानी मानव और प्रकृति दोनों का कल्याण होता है।

तुलनात्मक विवेचना:

मुख्य विचार: सुख और समृद्धि की मूल आवश्यकता, उनकी निरंतरता।

मूल्य: संतोष, न्याय, स्थायित्व।

विश्लेषण: यह अध्याय बताता है कि मनुष्य की वास्तविक चाहतें क्षणिक भौतिक सुख नहीं, बल्कि निरंतर सुख और समृद्धि होती हैं।

तत्व	मानव के लिए	पशु के लिए
संबंध	आवश्यक	नहीं
सुविधा	आवश्यक, लेकिन पूर्ण नहीं	आवश्यक और लगभग पूर्ण
सही समझ	मूलभूत, सर्वोच्च	नहीं

इससे स्पष्ट होता है कि मनुष्य के लिए केवल सुविधा पर्याप्त नहीं है। उसे संबंध और सही समझ भी चाहिए।

सही क्रम (Priority Order):

सही समझ →

संबंध (मानव से) →

सुविधा (प्रकृति से)

यही क्रम "जीता हुआ मानव" (fulfilled human being) का है।

यह अध्याय यह सिखाता है कि शिक्षा का उद्देश्य केवल सुविधा जुटाना नहीं, बल्कि सही समझ और संबंधों की स्थापना है। विद्यार्थी जब इस क्रम को समझते हैं, तो वे संतुलित जीवन की ओर अग्रसर होते हैं। यह चित्र हमें बताता है कि यदि किसी मानव के पास केवल सुविधा है, पर सही समझ और संबंध नहीं हैं, तो वह पूर्ण सुखी और समृद्ध नहीं हो सकता।

केवल “सही समझ + सुविधा” से समृद्धि संभव है,

और केवल “सही समझ + संबंध” से सुख संभव है।

लेकिन तीनों होने पर ही पूर्णता (fulfilment) आती है।

शिक्षा-संस्कार की भूमिका (Role of Education-Sanskar)

शिक्षा की भूमिका, निश्चित मानवीय आचरण से जीने की योग्यता का विकास अर्थात् मानव-चेतना का विकास करना है। इसके लिये, शिक्षा-संस्कार से निम्न को सुनिश्चित करना होगा:

1. प्रत्येक बच्चे में सही-समझ

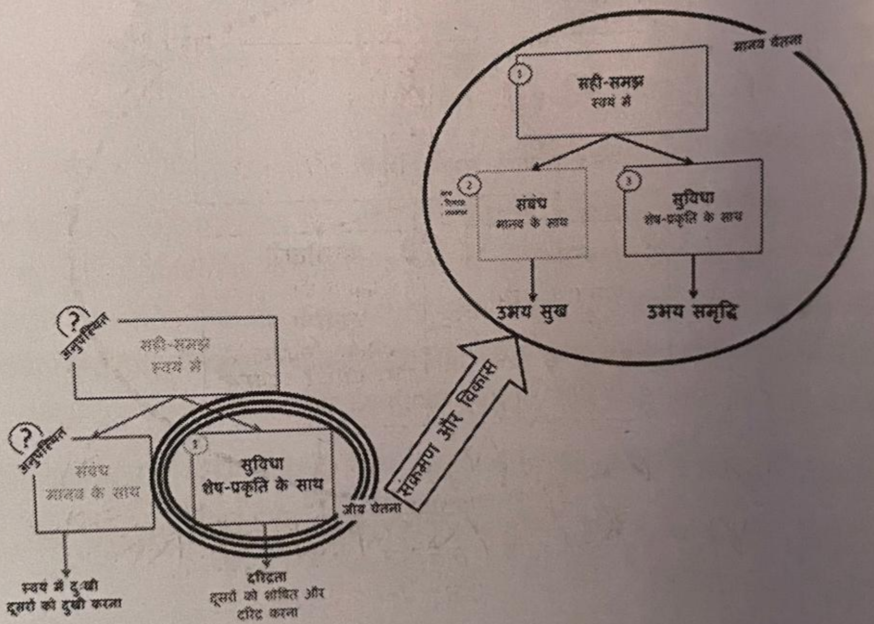

चित्र. 3-6. संक्रमण, विकास-क्रम, विकास

2. दूसरे मानव के साथ संबंध पूर्वक जीने की योग्यता तथा
3. भौतिक सुविधाओं की आवश्यकता की पहचान करने की योग्यता, जितनी आवश्यकता है उससे अधिक उत्पादन करने के लिये आवर्तन शील विधि का अभ्यास एवं कौशल, जिससे समृद्धि का भाव सुनिश्चित हो सके।

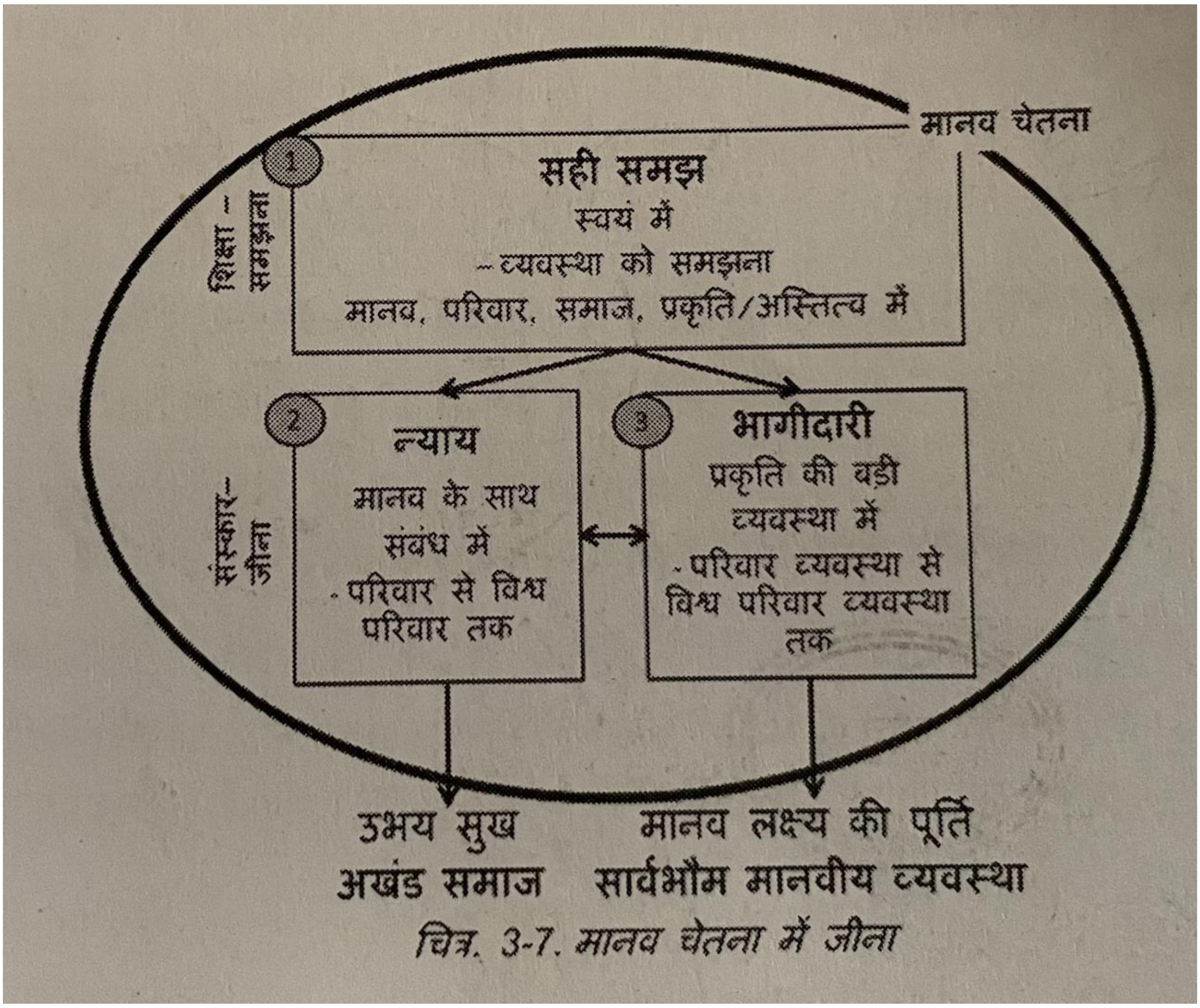

चित्र 3-6: शिक्षा की भूमिका

शिक्षा को यह सुनिश्चित करना चाहिए:

-हर बच्चे में सही समझ|

-दूसरे मनुष्यों के साथ सद्भाव से रहने की क्षमता|

- वास्तविक भौतिक ज़रूरतों को पहचानने और बिना किसी अतिशयता के उसके अनुसार उत्पादन करने की क्षमता|

-आरेख दर्शाता है कि:

सही समझ के साथ, व्यक्ति को मिलता है:

-उभरती हुई खुशी (संबंधों से)

- उभरती हुई समृद्धि (प्रकृति से)

शिक्षा को समग्र विकास को बढ़ावा देना चाहिए, न कि केवल कैरियर प्रशिक्षण - जिसका उद्देश्य मानव चेतना का विकास करना है|

चित्र 3-7: मानव चेतना के साथ जीना

एक जागरूक मानव समाज का विकास

मॉडल में शामिल हैं:

1. सही समझ: सिस्टम (स्वयं, परिवार, समाज, प्रकृति) को समझना

2. न्याय: न्याय पर आधारित संबंध स्थापित करना (परिवार से दुनिया तक)

3. भागीदारी: प्रकृति और समाज की बड़ी प्रणालियों में भागीदारी से

उभरती हुई खुशी और मानवीय लक्ष्यों की पूर्ति

सार्वभौमिक मानव व्यवस्था की स्थापना : मानव चेतना में जीने के लिए सिस्टम को समझना, संबंधों में न्याय और समाज और प्रकृति में जिम्मेदार भागीदारी की आवश्यकता होती है।

ये आरेख मिलकर समग्र शिक्षा का मूल्य-आधारित मॉडल बनाते हैं, जहाँ:

- आंतरिक स्पष्टता (सही समझ) आधार है।
- रिश्तों और सुविधाओं को समझा जाता है और तदनुसार प्रबंधित किया जाता है।
- शिक्षा और संस्कृति का उद्देश्य मानवीय चेतना, न्याय और सद्भाव का पोषण करना है।
- इससे केवल भौतिक समृद्धि ही नहीं, बल्कि सच्चा मानव विकास होता है।

इस अध्याय के माध्यम से विद्यार्थियों में सही समझ सम्बंध और सुविधा की सही समझ विकसित किए जाने के प्रस्ताव दिए गए है ।

अध्याय 4: सुख और समृद्धि को समझना-इनकी निरंतरता एवं पूर्ति के लिए कार्यक्रम

मुख्य विचार: सुख की व्याख्या, भ्रम और वास्तविकता का अंतर, समृद्धि के आयाम|

मूल्य: संतुलन, विवेक, आत्म-नियंत्रण|

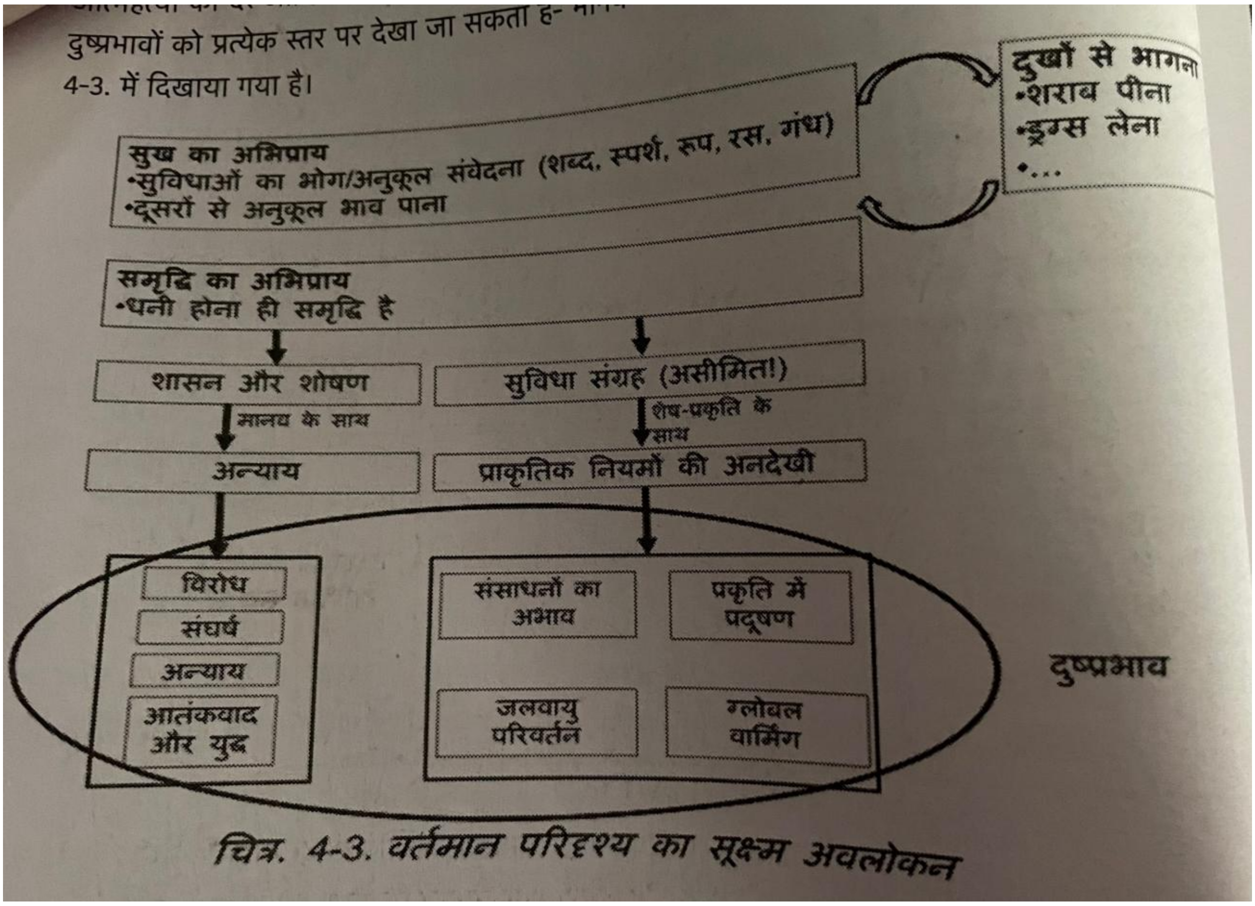

चित्र 4-3: वर्तमान परिप्रेक्ष्य का सूक्ष्म अवलोकन

यह चित्र वर्तमान समाज में व्याप्त ग़लत धारणाओं, असंतुलन, और दुष्परिणामों को एक श्रृंखला के रूप में दर्शाता है|

1.सुख का अभिप्राय: यह एक संवेदनात्मक और बाह्य परिभाषा है, जो व्यक्ति को आत्मनिर्भर नहीं बनाती बल्कि दूसरों और भोग पर निर्भर करती है|

2. समृद्धि का अभिप्राय: यह धारणा असीमित संग्रह और अविवेकपूर्ण उपभोग को जन्म देती है, जो प्राकृतिक असंतुलन का कारण बनता है|

इन गलत धारणाओं के दुष्परिणाम (Consequenses)

मानव के साथ

शासन और शोषण → दूसरों पर वर्चस्व और दबाव।

1. अन्याय → असमानता और सामाजिक तनाव।

2. विरोध, संघर्ष, आतंकवाद, युद्ध → हिंसा और असुरक्षा का माहौल।

प्रकृति के साथ: सुविधा संग्रह (असीमित) → संसाधनों का अत्यधिक दोहन।
प्राकृतिक नियमों की अनदेखी → पारिस्थितिकीय असंतुलन।

परिणाम: संसाधनों की कमी
प्रकृति में प्रदूषण
जलवायु परिवर्तन
ग्लोबल वॉर्मिंग

दुःख से भागना:

यह चित्र बताता है कि कैसे मानव की गलत समझ, विशेषकर सुख और समृद्धि की भ्रामक परिभाषाएँ, समाज और प्रकृति – दोनों में गंभीर संकट उत्पन्न करती हैं।

इन समस्याओं के समाधान के लिए आवश्यक है: सही समझ (Right Understanding) का विकास।संतुलित जीवन, जहाँ:सुख का स्रोत: संबंधों और आत्मसंतोष में हो।

समृद्धि का अर्थ: आवश्यक संसाधनों की पर्याप्तता और विवेकपूर्ण उपभोग।

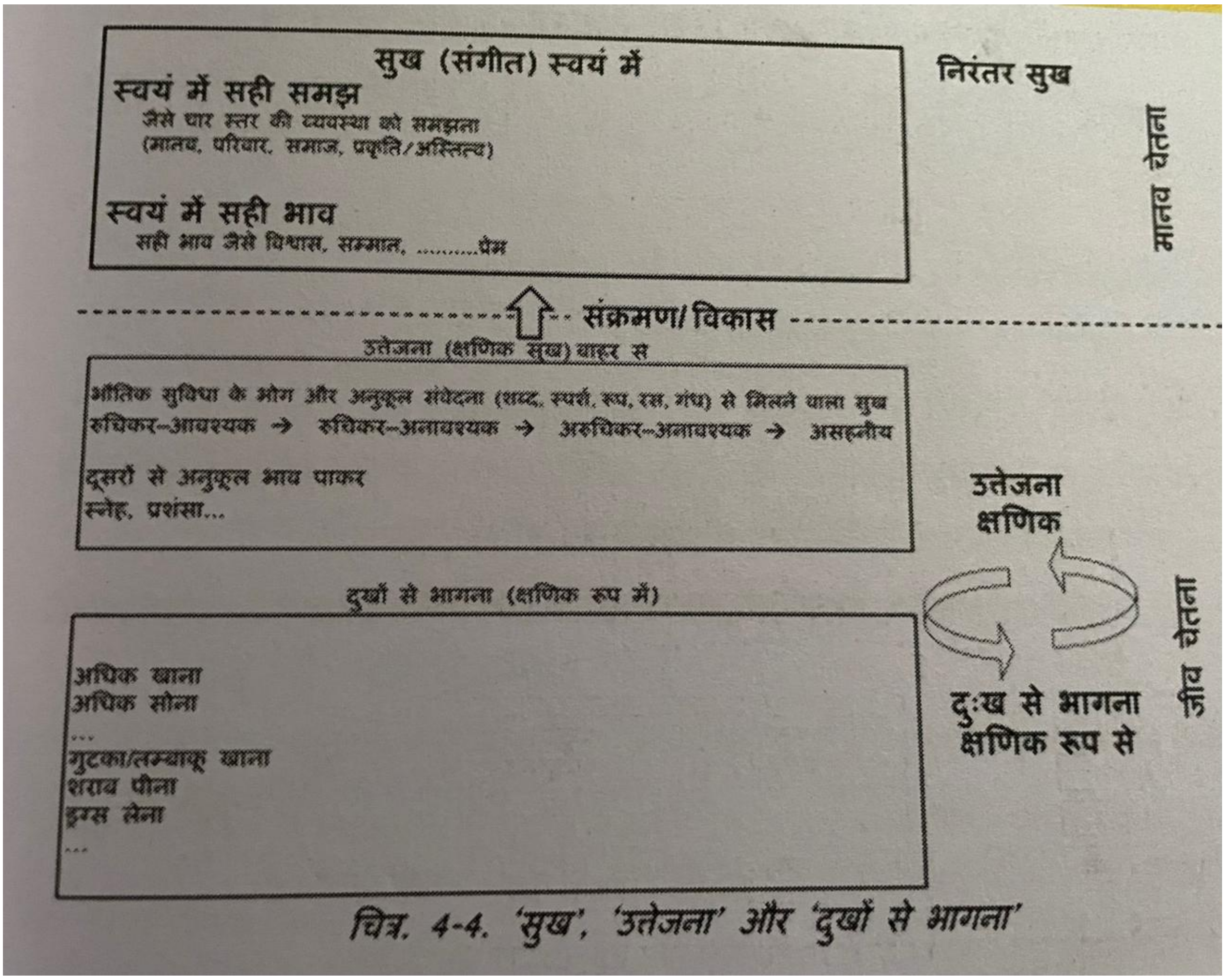

चित्र 4-4: 'सुख', 'उत्तेजना' और 'दुखों से भागना' –

यह चित्र तीन प्रमुख अवस्थाओं के माध्यम से मानव चेतना की स्थिति को समझाने का प्रयास करता है:

1. 'सुख' की सही समझ (संगीत स्वरूप), सुख (निरंतर सुख) का आधार:

प्रमुख तत्व: स्वयं में सही समझ:
जीवन की व्यवस्था (मानव, परिवार, समाज, प्रकृति/अस्तित्व) को समझना।

स्वयं में सही भाव: जैसे विश्वास, सम्मान, प्रेम, सौहार्द, करुणा आदि।
यह स्थिति व्यक्ति को निरंतर सुख की ओर ले जाती है – जो स्थायी, आंतरिक, और शांति पूर्ण होता है।

2. उत्तेजना (क्षणिक सुख)

उत्तेजना का स्रोत:

चक्रवृद्धि प्रवृत्ति:

सुविधाओं का अधिक भोग → आवश्यकता का भ्रम → लालसा → असंतोष।

दूसरों से अनुमोदन (प्रशंसा, मान्यता) की इच्छा → पराश्रयता।

1. यह एक अस्थायी और क्षणिक स्थिति है, जो उत्तेजना और फिर थकावट की स्थिति में ले जाती है।

3. दुखों से भागना

जब उत्तेजना टिकाऊ न रहे तो क्या होता है?

व्यवहार: अधिक खाना/सोना व्यसन: नशा, शराब, ड्रग्स

इंटरनेट/टीवी/मीडिया का अत्यधिक उपयोग

➡️ यह स्थिति व्यक्ति को अस्थायी राहत देती है परंतु दीर्घकाल में और अधिक दुख व निर्भरता उत्पन्न करती है।

अवस्था	विशेषता	प्रभाव
सुख (संगीत रूप में)	आंतरिक संतुलन, सही समझ व भाव	स्थायी और निरंतर सुख
उत्तेजना	बाहरी वस्तुओं पर आधारित	क्षणिक सुख, असंतोष
दुख से भागना	उत्तेजना के बाद का भ्रम और पलायन	और अधिक दुख, व्यसन, अशांति

इस चित्र से स्पष्ट होता है कि शिक्षा-संस्कार का मूल उद्देश्य यह होना चाहिए कि व्यक्ति में:

सही समझ (ज्ञानात्मक स्तर पर)

सही भाव (भावनात्मक स्तर पर) का विकास हो, जिससे वह निरंतर सुख की अवस्था में जी सके।

विश्लेषण: यह अध्याय समाज में प्रचलित सुख की धारणाओं को चुनौती देता है और संतुलित, मूल्य आधारित जीवन की ओर निर्देशित करता है।अध्याय में इच्छा सम्बन्धी स्व अन्वेषण अभ्यास दिए गए जिससे छात्र स्व मूल्यांकन कर पाएगा।

अध्याय 5: मानव को स्वयं और शरीर के सह-अस्तित्व के रूप में समझना:-मुख्य विचार: शरीर और 'स्व' का अंतर, चेतना और जड़ के संबंध|

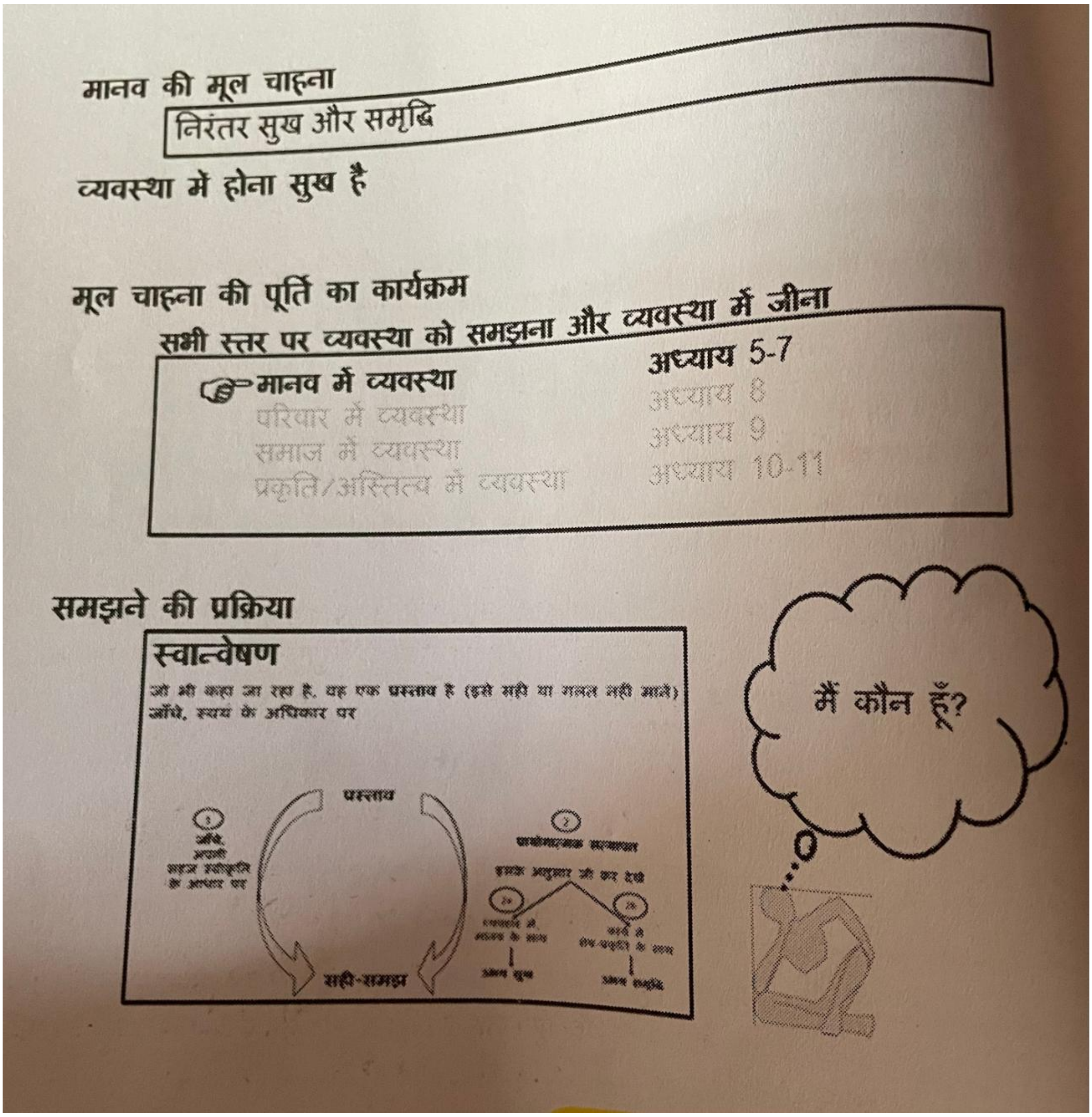

1.

चित्र विश्लेषण - "मानव की मूल चाहना और समझने की प्रक्रिया"

1. मानव की मूल चाहना:

सुख का अर्थ:

आत्मिक संतोष और आंतरिक शांति|

समृद्धि का अर्थ: आवश्यक संसाधनों की उपलब्धता – परिवार और समाज में संतुलनपूर्वक जीने के लिए।

2. व्यवस्था में होना ही सुख है:

3. मूल चाहना की पूर्ति का कार्यक्रम: इसमें चार स्तरों की व्यवस्था शामिल है:

स्तर	**अध्याय**
मानव में व्यवस्था	अध्याय 5-7
परिवार में व्यवस्था	अध्याय 8
समाज में व्यवस्था	अध्याय 9
प्रकृति/अस्तित्व में व्यवस्था	अध्याय 10-11

यह क्रमशः स्वयं से लेकर अस्तित्व तक के संबंधों की समझ को स्पष्ट करता है।

4. समझने की प्रक्रिया: 'स्वात्वबोध और स्वविवेक' द्वारा स्वात्वबो: कोई प्रस्ताव (जैसे "मानव स्वभावतः विवेकशील है") आता है।

हम उसे अपने जीवन में जांचते हैं:

क्या यह बात मेरे अनुभव में सही लगती है?

क्या यह बात सार्वभौमिक है?

क्या यह समय-काल-संस्कृति से परे है?
अगर उत्तर "हाँ" है तो वह बात सही समझ बनती है।

5. मुख्य प्रश्न जो आत्म-अवलोकन को प्रेरित करता है:

इस चित्र में मानव की मूल चाहना से लेकर जीवन के विभिन्न स्तरों पर व्यवस्था की समझ तक का व्यवस्थित खाका प्रस्तुत किया गया है। साथ ही यह बताया गया है कि किसी भी विचार को आंख मूंदकर न मानें, बल्कि स्वानुभव द्वारा जांचें, जिससे सही समझ का विकास हो।

मूल्य: आत्मबोध, सम्मान, समझ।

विश्लेषण: यह अध्याय मानवीय अस्तित्व के द्वैध रूप - 'स्व' और 'शरीर' की स्पष्टता लाता है और उनके सामंजस्य की आवश्यकता पर बल देता है।

अध्याय 6: स्वयं में व्यवस्था - 'स्व' (मैं) को समझना

(Harmony in the Self- Understanding Myself)

मुख्य विचार: कल्पनाशीलता, प्रेरणा-स्रोत, स्वतंत्रता बनाम परतंत्रता।

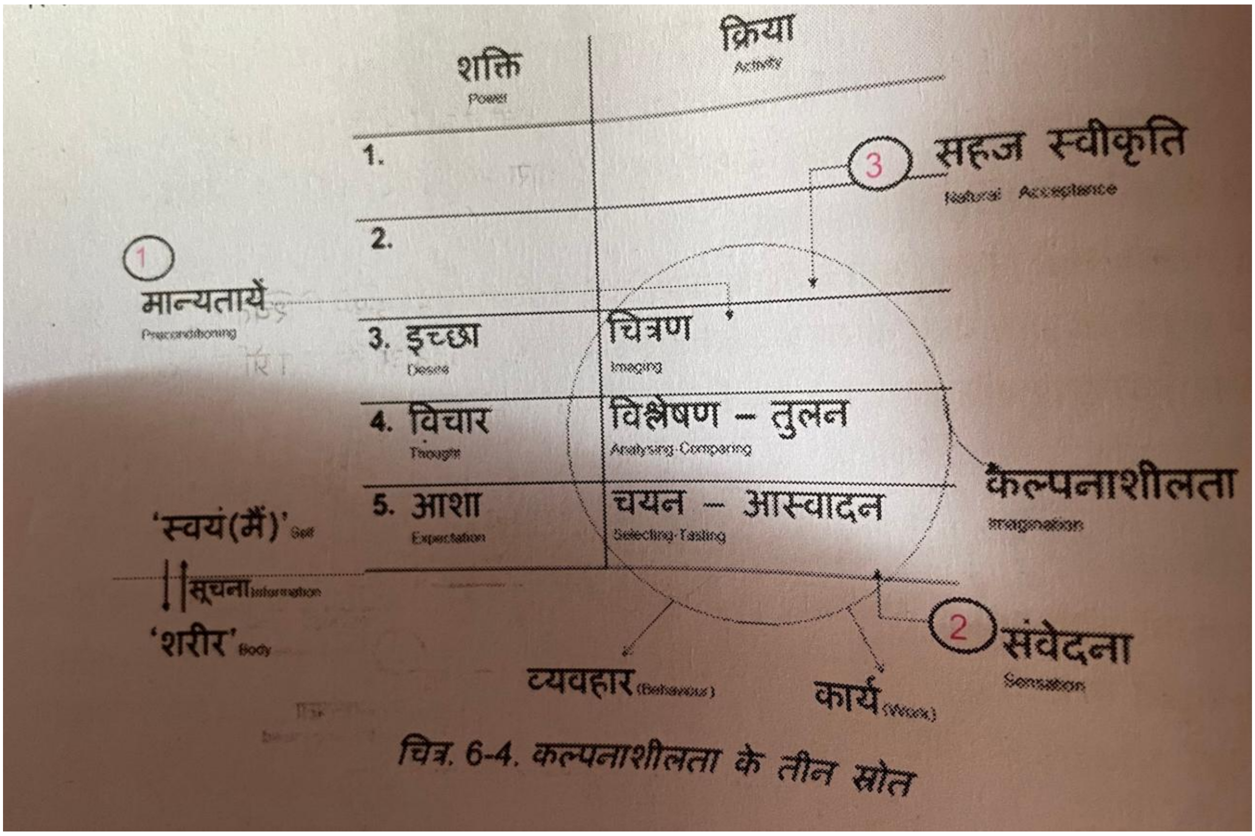

चित्र 6.4 - कल्पनाशीलता के तीन स्रोत:

यह चित्र मानव की कल्पनाशीलता (Imagination) के तीन प्रमुख स्रोतों को दर्शाता है। यह "स्वयं (मैं)" और "शरीर" के बीच की अंतःक्रिया को स्पष्ट करता है, तथा यह दिखाता है कि हमारे विचार, इच्छाएँ, आशाएँ आदि कैसे उत्पन्न होती हैं और उनका आधार क्या होता है।

1. मान्यताएँ (Preconditioning)

यह पहला स्रोत है जो हमारी इच्छाओं, विचारों और आशाओं को प्रभावित करता है।

ये मान्यताएँ हमें समाज, परिवार, परंपरा, शिक्षा, मीडिया आदि से प्राप्त होती हैं।

कई बार हम बिना जांचे-परखे इन्हें सच मान लेते हैं और उसी आधार पर निर्णय लेते हैं।

~ मान्यताएँ → इच्छा → विचार → आशा → व्यवहार/कार्य

2. संवेदना (Sensation)

यह हमारे शरीर के माध्यम से आने वाले अनुभव हैं, जैसे – स्वाद, गंध, स्पर्श, दृश्य और ध्वनि। ये अनुभव हमें क्षणिक सुख देते हैं और बाह्य सुख की खोज को बढ़ाते हैं। यह भी एक प्रमुख स्रोत है जो हमारी इच्छाओं को जन्म देता है और हमें उत्तेजनात्मक जीवन शैली की ओर ले जाता है।
~संवेदना → इच्छा → विकल्प → चयन → कार्य

3. सहज स्वीकृति (Natural Acceptance)

यह मैं (स्वयं) का गुण है – एक स्वाभाविक बोध कि क्या सही है और क्या गलत। यह पूर्वाग्रहों से मुक्त होती है और समय, स्थान, परिस्थिति से परे होती है।

जब हम इस आधार पर कार्य करते हैं, तो वह स्थायी सुख और संतुलन की ओर ले जाता है।

~सहज स्वीकृति → सही विचार → सही आशा → सही व्यवहार

तत्व	अर्थ
स्वयं (मैं)	चेतन इकाई जो जानने, समझने, अनुभव करने की क्षमता रखती है।
शरीर	भौतिक इकाई, जो क्रियाएं करता है और संवेदनाओं को ग्रहण करता है।
शक्ति और क्रिया	शक्ति (Power) वह क्षमता है जो किसी क्रिया को संभव बनाती है; क्रिया (Activity) वह प्रक्रिया है जो परिणाम देती

है।

कल्पनाशीलता का कार्य: कल्पनाशीलता के माध्यम से हम –चिन्तन (सोचते हैं),विश्लेषण और तुलना (तर्क करते हैं), चयन और आस्वादन (फैसला लेते हैं) करते हैं। यह सारी प्रक्रिया ‘स्वयं’ में होती है, और इसका प्रभाव हमारे व्यवहार और कार्य पर पड़ता है।

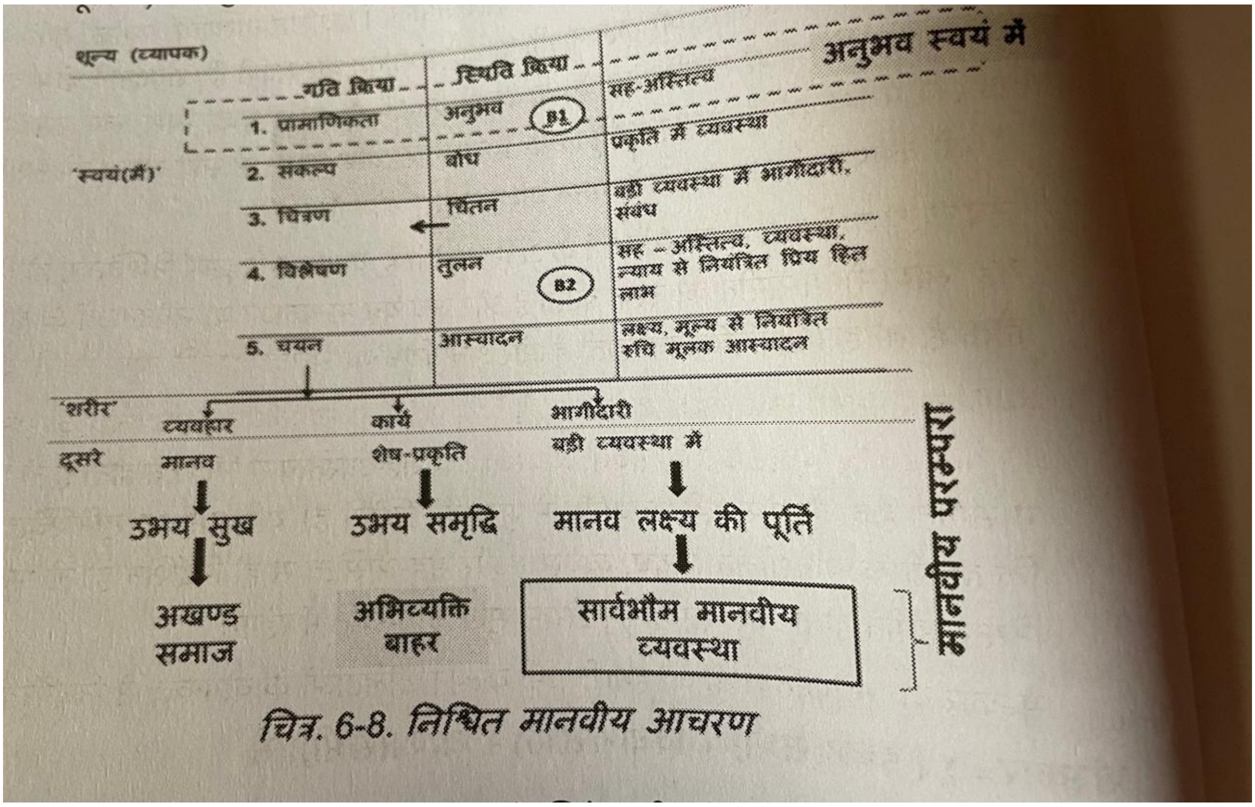

चित्र. 6-8. निश्चित मानवीय आचरण

चित्र 6.8: निश्चित मानवीय आचरण -

यह चित्र मानव के आंतरिक क्रियाकलापों और बाहरी व्यवहार के बीच के संबंध को दर्शाता है। इसका उद्देश्य यह बताना है कि हम कैसे अपने स्वयं (मैं) के भीतर के अनुभव के आधार पर मानवीय उद्देश्य (उद्देश्यपूर्ण सुख और समृद्धि) की प्राप्ति कर सकते हैं, जिससे एक सार्वभौमिक मानवीय व्यवस्था की स्थापना होती है।

1. ‘स्वयं’ (मैं) में क्रियाएँ:

यह वह चेतन इकाई है जो अनुभव करती है, सोचती है और निर्णय लेती है।

अनुक्रम	**क्रिया**	**व्याख्या**

1. प्रज्ञात्मकता	अनुभव (B1)	सही-असली अनुभव, जो समग्र दृष्टि से आता है।
2. संकल्प	बोध	सही व्यवस्था का बोध, मूल्य की पहचान
3. चिन्तन	चिन्तन	व्यवस्था और व्यवहार में स्थिरता, एकरूपता
4. विश्लेषण	तुलना (B2)	मूल्य आधारित विवेचन, सही-गलत का निर्णय
5. चयन	आस्वादन	सही विकल्प का चुनाव और उसका आस्वादन

2. 'शरीर' से जुड़ा व्यवहार:

शरीर उपकरण की तरह काम करता है, यह "स्वयं" द्वारा निर्देशित होता है। जब "स्वयं" में सही अनुभव और सही सोच होती है, तब शरीर से सही कार्य होते हैं।

व्यवहार और उसके परिणाम:

क्षेत्र	**उद्देश्य**	**अंतिम लक्ष्य**
दूसरे मानव से	उचित सुख	अखण्ड समाज
शेष प्रकृति से	उचित समृद्धि	अभिव्यक्ति बाहर में संतुलन
समग्र व्यवस्था में	मानवीय लक्ष्य की पूर्ति	सार्वभौमिक मानवीय व्यवस्था

अनुभव 'स्वयं' में: चित्र में दर्शाया गया है कि सही अनुभव का केंद्र "स्वयं" होता है। जब हम स्वयं में अनुभव करते हैं (B1), तब हम सही मूल्य को पहचानते हैं।जब हम तुलना करते हैं (B2), तो सही-मूल्य आधारित चुनाव करते हैं।

जब व्यक्ति अपने भीतर (स्वयं) में मूल्य की सही समझ और अनुभव विकसित करता है, तो उसका व्यवहार – मानव के प्रति सुखद होता है,प्रकृति के प्रति समृद्धिपूर्ण होता है,और यह मिलकर एक सार्वभौमिक मानवीय व्यवस्था की ओर ले जाते हैं। इस चित्र से यह स्पष्ट होता

है कि मानव की सोच और कार्य केवल बाहरी प्रभाव (संवेदना) या परंपरागत मान्यताओं पर आधारित नहीं होनी चाहिए। यदि हम सहज स्वीकृति को आधार बनाएँ, तो हमारी कल्पनाशीलता सही दिशा में उपयोग होती है, और हम संतुलित व मूल्य आधारित जीवन जी सकते है। यह अध्याय मान्यताओं, संवेदनाओं और स्वीकृति के माध्यम से हमारी कल्पनाओं को दिशा देने की बात करता है। यह स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता को मूल्यों से जोड़ता है।

अध्याय 7: 'शरीर' के साथ 'स्वयं(मैं)'की व्यवस्था - संयम और स्वास्थ्य को समझना

मुख्य विचार: शरीर और 'स्व' की परस्पर व्यवस्था, स्वास्थ्य की परिभाषा।

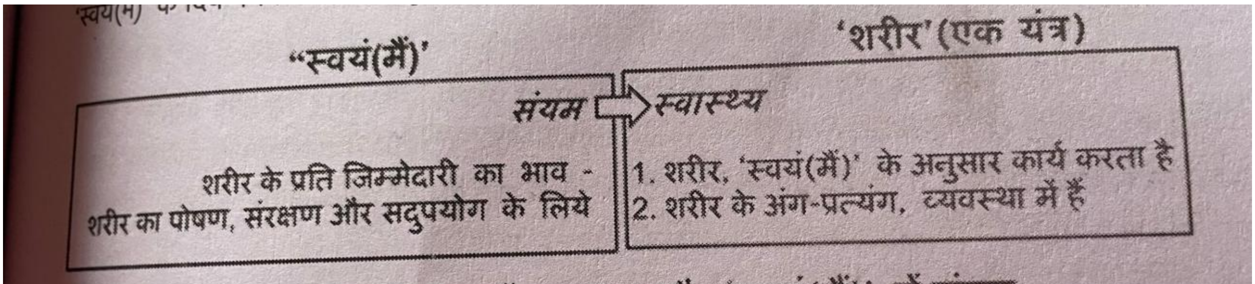

चित्र. 7-3. 'शरीर' में स्वास्थ्य और 'स्वयं(मैं)' में संयम

यह चित्र 'शरीर' और 'स्वयं' के बीच संबंध को दर्शाता है. यह बताता है कि कैसे 'संयम' के माध्यम से 'स्वास्थ्य' को बनाए रखा जा सकता है.

चित्र में दो मुख्य भाग हैं:

'स्वयं': यह भाग शरीर के प्रति जिम्मेदारी की भावना को दर्शाता है. यह शरीर के पोषण, संरक्षण और सदुपयोग के महत्व पर प्रकाश डालता है. 'शरीर' (एक यंत्र): यह भाग बताता है कि शरीर 'स्वयं' के अनुसार कार्य करता है. इसमें शरीर के अंग-प्रत्यंग व्यवस्था में हैं. चित्र यह भी दर्शाता है कि 'संयम' इन दोनों भागों को जोड़ता है. संयम का पालन करके, विद्यार्थी अपने शरीर और स्वास्थ्य दोनों को बेहतर बनाए रख सकता है. इस चित्र में दी गई जानकारी का उपयोग करके, व्यक्ति अपने जीवन में संयम का महत्व समझ सकता है और एक स्वस्थ जीवन शैली अपना सकता है ।

मूल्य: संयम, उत्तरदायित्व, अनुशासन।

विश्लेषण: यह अध्याय दर्शाता है कि जब व्यक्ति 'स्व' के दृष्टा, कर्ता और भोक्ता रूप को पहचानता है, तभी वह शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य का संतुलन बना सकता है।

अध्याय 8 (अ): मानव-मानव सम्बन्ध में मूल्य - ममता और वात्सल्य :-मुख्य विचार: ममता, वात्सल्य,आत्मीयता, श्रद्धा, कृतज्ञता।

श्रेष्ठता

व्यवस्था को समझना और
व्यवस्था में जीना

↓

निरंतर सुख

हमारे जीने के सभी स्तरों पर

1. व्यक्तिगत रूप में
2. परिवार के एक सदस्य के रूप में
3. समाज के एक सदस्य के रूप में
4. प्रकृति/अस्तित्व की एक इकाई के रूप में

चित्र. 8-10. श्रेष्ठता

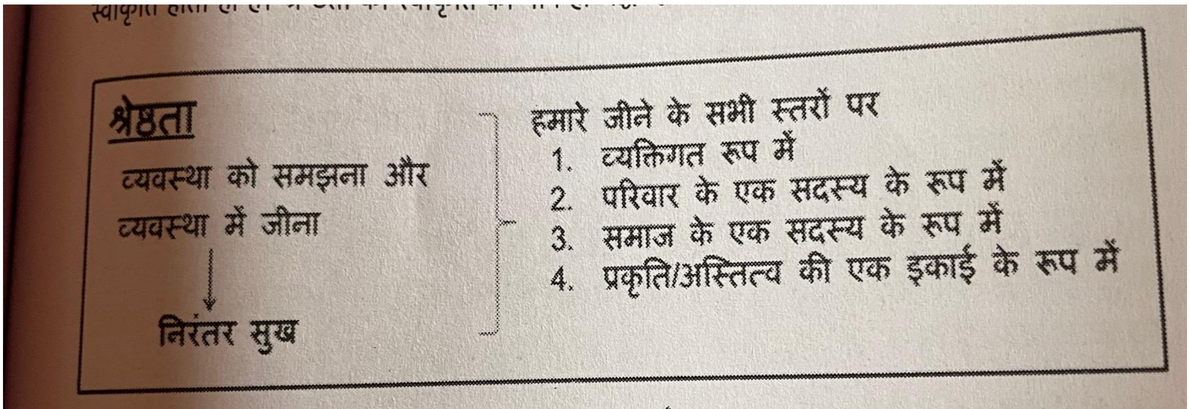

चित्र. 8-10. श्रेष्ठता

मूल्य: ममता, विश्वास, आदर।

विश्लेषण: संबंधों में जो गुणात्मक तत्व होते हैं जैसे - अपनापन, आदर, गौरव, उनका शिक्षार्थियों में विकास आवश्यक है। यह अध्याय इसी पर केंद्रित है।

अध्याय 8 (ब): मानव-मानव सम्बन्ध में पूर्ण मूल्य - प्रेम

मुख्य विचार: प्रेम की पूर्णता, अपेक्षा रहित संबंध, न्याय।

मूल्य: प्रेम, निष्कपटता, करुणा।

विश्लेषण: प्रेम को सर्वश्रेष्ठ मानवीय मूल्य के रूप में प्रस्तुत करते हुए यह अध्याय बताता है कि प्रेम केवल भावना नहीं बल्कि कर्तव्य और न्याय का संतुलन भी है।अध्याय में सम्बन्धी के

प्रति प्रेम और विश्वास के भाव को सही समझ और जिम्मेदारी के साथ पूर्ण करने की सीख दी गई है| उदाहरण के माध्यम से पति-पत्नी के टूटते रिश्ते को संभालने के वृतांत है जिससे मानवीय सम्बन्ध की पूर्ति और समझ विकसित होती है

अध्याय 9: समाज में व्यवस्था - सार्वभौमिक मानवीय व्यवस्था

मुख्य विचार: यह अध्याय इस बात पर केन्द्रित है कि समाज में कैसी व्यवस्था होनी चाहिए जिससे हर व्यक्ति सुख और समृद्धि के साथ जीवन जी सके| समाज का उद्देश्य केवल व्यक्तियों की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं, बल्कि उनके आत्मिक, नैतिक व संबंधपरक संतुलन को सुनिश्चित करना है|संपूर्ण मानव लक्ष्य: अध्याय में बताया गया है कि मानव का लक्ष्य सुख और समृद्धि है, जो केवल व्यक्तिगत नहीं बल्कि सामाजिक स्तर पर भी पूर्ण होनी चाहिए| सह-अस्तित्व: एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था की आवश्यकता है जहाँ सभी का स्थान और भूमिका सुनिश्चित हो और एक-दूसरे का सम्मान बना रहे – यह न्याय और पारस्परिकता के सार्वभौमिक मूल्यों से जुड़ा है| वर्तमान सामाजिक समस्याएँ: वर्तमान में समाज में असमानता, हिंसा, भ्रष्टाचार जैसी समस्याएँ हैं जिनका समाधान केवल कानून या तकनीक नहीं बल्कि मूल्य-आधारित शिक्षा द्वारा संभव है|

अध्याय 10: प्रकृति में व्यवस्था - पारस्परिकता और नियंत्रण

अंतःसंबंध, स्व-नियंत्रण और पारस्परिक पूरकता को समझना

यह अध्याय प्रकृति की व्यवस्था को समझने के लिए प्रेरित करता है कि प्रकृति में सभी घटक जैसे - पृथ्वी, जल, वायु, वनस्पति - परस्पर एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं| प्रकृति की पारस्परिक पूरकता: चार श्रेणियाँ - पृथ्वी/जल/वायु (जड़), वनस्पति, पशु, मानव - एक-दूसरे के पूरक हैं| यह सह-अस्तित्व का सिद्धांत है, जो NEP 2020 में भी पर्यावरणीय चेतना से जुड़ता है| स्व-नियंत्रण: प्रकृति अपने भीतर स्व-नियंत्रित है| यह सिखाता है कि मानव को भी अपने व्यवहार को संतुलित और अनुशासित रखना चाहिए – संयम, संतुलन और कर्तव्यबोध जैसे मूल्य इस पर आधारित हैं| मानव का दायित्व: मानव को अन्य इकाइयों के साथ सम्मानजनक संबंध बनाना चाहिए, न कि उनका शोषण| यह विचार प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व (environmental responsibility) को दर्शाता है|

अध्याय 11: अस्तित्व में व्यवस्था - सह-अस्तित्व की संपूर्णता

यह अध्याय अस्तित्व को एक समग्र इकाई के रूप में देखने की प्रेरणा देता है जहाँ सब कुछ परस्पर जुड़ा है|

विभिन्न घटक इकाइयाँ (जड़, वनस्पति, जीव, मानव) सह-अस्तित्व में हैं – यह अखंडता (wholeness) का बोध कराता है| विविधता में एकता: सभी इकाइयाँ विविध होने के बावजूद एक संपूर्ण व्यवस्था का हिस्सा हैं, जो मानव को सर्वांगीण दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करती है| संपूर्णता की चेतना: यह अध्याय बताता है कि केवल व्यक्तिगत भला नहीं बल्कि समष्टिगत कल्याण ज़रूरी है – यह सर्वभूत हिताय की भावना को मजबूत करता है| समाधान की दिशा: जब तक मानव अस्तित्व के इस दृष्टिकोण को नहीं समझेगा, तब तक समस्याएँ बनी रहेंगी| बोध, सम्मान, कर्तव्य, और पारस्परिकता जैसे मूल्य इससे विकसित होते हैं| समाज में सहभागिता, न्याय, मानव लक्ष्य|

मूल्य: सामाजिक जिम्मेदारी, सहयोग, समानता|

यह अध्याय व्यक्ति से समाज तक के यात्रा को दर्शाता है जहाँ हर व्यक्ति की सहभागिता एक नैतिक जिम्मेदारी बन जाती है|

आनंद सभा' पाठ्यक्रम का उद्देश्य केवल नैतिकता सिखाना नहीं, बल्कि जीवन को समग्रता में समझकर जीना सिखाना है|यह प्रत्येक अध्याय के माध्यम से विद्यार्थियों में नीचे दिए गए Universal Values का निर्माण करता है:

दृश्य गतिविधियों और एक कहानी का प्रतिनिधित्व: चित्रण (Visuals / Representations) स्वयं और शरीर के बीच के संबंध को दर्शाने वाले चित्र: “स्वयं (चेतन इकाई)” और “शरीर (जड़ इकाई)” को अलग-अलग परिभाषित करने वाले चित्रों के माध्यम से यह स्पष्ट किया गया है कि मानव सिर्फ शरीर नहीं है, बल्कि चेतना भी है|

प्रकृति और अस्तित्व के सह-अस्तित्व को दर्शाने वाले चार स्तरों (Order) के चित्र:

Material Order (पदार्थ), Plant/Bio Order (वनस्पति), Animal Order (प्राणि), और Human Order (मानव) के बीच परस्पर पूरकता| मानवीय मूल चाहतें जैसे सुख और समृद्धि को ग्राफ़ और डायग्राम से समझाया गया है, जो अस्थायी भौतिक संसाधनों और आत्मिक स्थायित्व में भेद करते हैं|

गतिविधियाँ (Activities)

हर अध्याय के अंत में “स्व-मूल्यांकन”, “स्व-अन्वेषण” और “प्रोजेक्ट तथा मॉडलिंग अभ्यास” शामिल हैं, जैसे:

स्व-अन्वेषण की गतिविधियाँ:

“स्वयं को देखने” का अभ्यास: दर्पण के सामने बैठकर स्वयं के स्वरूप को पहचानना|

“हर क्षण में स्वयं को देखना”: अपनी भावनाओं, विचारों और प्रतिक्रियाओं को नोट करना|

सह-अस्तित्व आधारित प्रोजेक्ट्स: प्राकृतिक संसाधनों का सतत उपयोग - अपने समुदाय में जल, ऊर्जा आदि के उपयोग पर रिपोर्ट बनाना|सम्मान और संवेदनशीलता का अभ्यास - अपने घर और विद्यालय में व्यवहार के विश्लेषण पर कार्य| मॉडलिंग अभ्यास: समूह चर्चा के ज़रिए मूल्यों पर आधारित निर्णय लेना|

दैनिक जीवन की घटनाओं को मूल्यों के संदर्भ में जांचना|

कहानियाँ और दृष्टांत: हालाँकि पूरी पाठ्यपुस्तक मुख्यतः अवधारणात्मक और अभ्यास-आधारित है, इसमें लघु दृष्टांत, अनुभव कथन और परिचर्चा-आधारित प्रसंग मौजूद हैं, जैसे: श्रद्धा, ममता, कृतज्ञता, प्रेम आदि पर आधारित जीवन प्रसंग - जिनसे विद्यार्थियों को आत्म-अन्वेषण हेतु प्रेरणा मिलती है| शरीर और स्वयं के द्वंद्व को दर्शाने वाले दृष्टांत - जैसे, लालच और संयम के बीच संघर्ष| मानव और प्रकृति का संबंध दर्शाने वाले प्रसंग - उदाहरणस्वरूप, “पौधों की देखभाल” को व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी से जोड़ना|“आनंद सभा” पाठ्यक्रम में पाठ्य-वस्तु को केवल सैद्धांतिक न रखकर, व्यावहारिक, दृश्यात्मक और अनुभवात्मक रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिससे छात्र न केवल मूल्यों को समझ सकें, बल्कि उन्हें अपने दैनिक जीवन में आत्मसात कर सकें|

स्रोत: [Class Xth Anand Sabha Text Book 2024.pdf]|

अध्याय 5

चर्चाएँ और सुझाव

5.1 चर्चाएँ

वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी का हस्तांतरण नहीं, बल्कि छात्र के समग्र व्यक्तित्व का निर्माण भी है। शिक्षा को मानव के अंदर नैतिकता, मूल्यों और सही जीवन दृष्टि को विकसित करने का माध्यम माना जा रहा है। इसी दिशा में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने मूल्य-आधारित शिक्षा पर विशेष बल दिया है।

'आनंद सभा' एक ऐसा अभिनव पाठ्यक्रम है जो विद्यार्थियों में आत्मचिंतन, संवाद, सह-अस्तित्व और सार्थक जीवन जीने की समझ को विकसित करने का प्रयास करता है। यह पाठ्यक्रम न केवल छात्र के मानसिक और भावनात्मक पक्ष को छूता है, बल्कि उसके चारित्रिक विकास और नैतिक मूल्यों की स्थापना में भी सहायक है।

'आनंद सभा' के अंतर्गत प्रस्तुत विषय-वस्तु में सामाजिक सद्भाव, कृतज्ञता, करुणा, सहानुभूति, उत्तरदायित्व, सत्यनिष्ठा जैसे सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों को गहरे रूप में उकेरा गया है। इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य केवल नैतिक बातें बताना नहीं है, बल्कि छात्र के 'स्व' में मूल्य की स्पष्टता और जीवन दृष्टि की स्थिरता को उत्पन्न करना है।

यह लघु शोध 'आनंद सभा' पाठ्यक्रम की सामग्री का विश्लेषण करके यह समझने का प्रयास करता है कि उसमें निहित विचारधारा और गतिविधियाँ किस प्रकार से छात्रों में सार्वभौमिक मानवीय मूल्य (Universal Human Values) को विकसित करने में सहायक हैं। यह अध्ययन इस दिशा में एक प्रयास है कि मूल्य आधारित शिक्षा को किस प्रकार से प्रभावी और अनुभव आधारित बनाया जा सकता है।इस अध्याय में "आनन्द सभा" पाठ्यक्रम में निहित सार्वभौमिक नैतिक मूल्यों की उपस्थिति एवं प्रस्तुति का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। पाठ्य सामग्री के माध्यम से विद्यार्थियों में किस प्रकार मानव गरिमा, सह-अस्तित्व, सत्य, करुणा, सहानुभूति, आत्म-जागरूकता आदि मूल्यों का विकास होता है, इस पर चर्चा की गई है। साथ ही, पाठ्यक्रम के प्रभावों और सीमाओं की भी विवेचना की गई है।

सार्वभौमिक मूल्यों की व्याख्या विद्यार्थियों की भाषा में आनंद सभा पाठ्यक्रम में मूल्यों की व्याख्या जटिल धार्मिक या दार्शनिक भाषा में नहीं, बल्कि सरल, सहज और वैज्ञानिक तरीके से की गई है, जो कक्षा 10 के विद्यार्थियों के स्तर के अनुसार है। इससे विद्यार्थी व्यक्तिगत जीवन से लेकर सामाजिक संबंधों तक में इन मूल्यों को व्यवहार में उतारने में सक्षम हो पाते हैं। ज्ञान, समझ और अनुभव आधारित संरचना यह पाठ्यक्रम केवल सैद्धांतिक ज्ञान नहीं देता, बल्कि विद्यार्थियों को स्वयं अनुभव करके समझने का अवसर देता है – जैसे "स्व-अन्वेषण",

“प्रश्नोत्तरी”, “समूह चर्चा”। इस प्रक्रिया में विद्यार्थी स्वयं के साथ संवाद करना सीखते हैं, जिससे अंदरूनी स्पष्टता और स्थायी सीख मिलती है।

मानव चेतना और नैतिकता को आधार मानना पाठ्यक्रम यह मानता है कि प्रत्येक व्यक्ति के भीतर चेतना और मूल्य-बोध पहले से निहित है – उसे केवल जाग्रत करने की आवश्यकता है, न कि बाहर से आरोपित करने की। यह सोच NEP 2020 के उस दृष्टिकोण से मेल खाती है, जहाँ शिक्षा को चरित्र निर्माण और आत्म-प्रकाशन का माध्यम माना गया है।

व्यवहार में परिवर्तन की संभावना:- पाठ्यक्रम के बाद विद्यार्थी में आत्म-संवाद, संबंधों की समझ, संतुलित दृष्टिकोण और नैतिक निर्णय लेने की क्षमता का विकास देखा गया है। यह व्यवहार परिवर्तन, शिक्षा के मूल उद्देश्य – “संपूर्ण व्यक्तित्व विकास” – को साकार करता है। NEP 2020 के उद्देश्यों से सीधा जुड़ाव:-यह पाठ्यक्रम NEP 2020 के कई मूल विचारों से जुड़ता है, जैसे:मानवीय और संवेदनशील नागरिक बनाना| जीवन-कौशल और मूल्यों का समावेश | न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व जैसे संवैधानिक मूल्यों का पोषण |पूर्ण मानव क्षमता की प्राप्ति |

5.2 मुख्य निष्कर्ष:

मूल्यों को अनुभव से जोड़ने पर बल पाठ्यक्रम केवल सैद्धांतिक नहीं, बल्कि आत्म-अवलोकन, अभ्यास और अनुभव के माध्यम से प्रत्येक छात्र में मूल्यों की अंतर्निष्ठ स्थापना करता है। सभी गतिविधियाँ सार्वभौमिक मूल्यों पर केंद्रित हैं - जैसे: सत्य, प्रेम, करुणा, श्रद्धा, कृतज्ञता, न्याय, सह-अस्तित्व, आदि - ये किसी धर्म, जाति, या संस्कृति तक सीमित नहीं, बल्कि हर मानव के लिए समान हैं। छात्रों की आंतरिक यात्रा को प्रेरित करता है: पाठ्यक्रम ‘स्वयं’ (चेतना) और ‘शरीर’ के अंतर को समझा कर यह स्पष्ट करता है कि सच्ची शांति और खुशी केवल बाहरी संसाधनों से नहीं, आंतरिक संतुलन से आती है।पर्यावरण और समाज के साथ तालमेल का प्रशिक्षण:- प्रकृति और समाज के साथ सह-अस्तित्व की भावना को विकसित करता है जो कि सतत विकास और शांति के लिए आवश्यक है।

सामाजिकता और उत्तरदायित्व का विकास:-‘सामूहिक प्रोजेक्ट’, ‘आभार लेखन’, ‘सहयोग’ जैसी गतिविधियों से छात्रों में सामाजिक समरसता और कर्तव्यों के प्रति जागरूकता बढ़ती है।

प्रायोगिक मूल्य शिक्षा:-मूल्य केवल पढ़ाए नहीं जाते, बल्कि अभ्यासों और आत्म-निरीक्षण से जीने का अवसर दिया गया है। सार्वभौमिक मूल्यों की गहराई से समझ पाठ्यक्रम ‘स्वयं’ और ‘शरीर’ के द्वैत, सुख व समृद्धि की खोज, और प्रकृति-सहजीवन की शिक्षा देता है।आत्मिक विकास की ओर उन्मुखता छात्र केवल जानकारी नहीं लेते, बल्कि आत्म-निरीक्षण, ध्यान और व्यवहार सुधार की ओर प्रेरित होते हैं।

कहानी और दृश्य के ज़रिए प्रभावशाली संप्रेषण कहानी और दृष्टांत छात्रों को मूल्य की सजीव अनुभूति कराते हैं।

समाज, प्रकृति, परिवार के साथ समरसता का प्रशिक्षण पाठ्यक्रम छात्र को ज़िम्मेदार नागरिक बनाने की दिशा में ठोस कदम है।

NEP 2020 और मूल्यदृष्टि का समन्वय:राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि 'समग्र मानव विकास' है। इसमें शिक्षा को मूल्य-आधारित, कौशल-सम्पन्न, और संवेदनशील बनाने पर बल दिया गया है। 'आनन्द सभा' जैसे पाठ्यक्रम NEP 2020 के इसी उद्देश्य को मूर्त रूप प्रदान करते हैं। विकास और विरासत 2047 की दिशा में:भारत सरकार द्वारा प्रस्तुत "भारत@2047" विजन में ऐसा राष्ट्र निर्मित करने की कल्पना है जो आधुनिक विज्ञान व तकनीक से सम्पन्न हो, परंतु अपनी सांस्कृतिक, नैतिक और आध्यात्मिक जड़ों से भी जुड़ा हो। 'आनन्द सभा' पाठ्यक्रम, विशेषकर सार्वभौमिक मानव मूल्य दृष्टि, इस संकल्प को शिक्षण-शास्त्र में साकार करता है।

पुरातन और आधुनिक का समन्वय:'आनन्द सभा' पाठ्यक्रम में "मैं कौन हूँ", "सह-अस्तित्व", "सतत् सुख", "स्वभाव और धर्म", जैसे शाश्वत मूल्य भारतीय दर्शन की विरासत से लिए गए हैं, किंतु उन्हें आज की भाषा, शिक्षण विधियों और बच्चों के अनुभव से जोड़ा गया है। इससे पाठ्यक्रम न तो केवल परंपरा-आधारित रह जाता है और न ही केवल आधुनिकतावादी–यह दोनों के बीच सेतु बनाता है।

शिक्षा में आधुनिकीकरण का सकारात्मक प्रभाव:NEP 2020 के तहत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डिजिटल लर्निंग, इंटरडिसिप्लिनरी शिक्षा जैसे तत्वों के साथ अगर आनंद सभा जैसे मूल्य शिक्षा कार्यक्रमों को भी सशक्त किया जाए, तो शिक्षा केवल आर्थिक या तकनीकी दक्षता तक सीमित नहीं रह जाएगी, बल्कि मानवीय संवेदना, नैतिक विवेक और आत्म-जागरूकता को भी विकसित करेगा ।सार्वभौमिक मूल्यों की अभिव्यक्ति: पाठों में जैसे - सहयोग, संवेदना, आत्मनियंत्रण, श्रम का सम्मान, कृतज्ञता, सत्यनिष्ठा आदि मूल्यों को विभिन्न कहानियों और अनुभवात्मक गतिविधियों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।आत्मबोध और चिंतन: पाठ्यक्रम में "मैं कौन हूँ", "सही समझ", "स्वयं में सुख" जैसी अवधारणाएँ विद्यार्थियों को आत्म-निरीक्षण के लिए प्रेरित करती हैं।

अनुभवात्मक शिक्षण: आनंद सभा विद्यार्थियों को केवल नैतिक उपदेश न देकर उन्हें अनुभव आधारित शिक्षण द्वारा मूल्यों को "जीने" का अवसर देती है। इससे सिद्धांत और व्यवहार में पुल बनता है।आज के भौतिकवादी समय में यह पाठ्यक्रम मानसिक स्वास्थ्य, सह-अस्तित्व और नैतिकता के लिए एक क्रांतिकारी शैक्षिक साधन बन सकता है।

मूल्य शिक्षा को औपचारिक पाठ्यक्रम में इस तरह सम्मिलित करना एक सकारात्मक शैक्षिक परिवर्तन है।

शिक्षकों की भूमिका निर्णायक है - यदि वे स्वयं मूल्यों को अपनाएं, तो छात्र भी सीखते हैं।

यह पाठ्यक्रम न तो धार्मिक है, न सांस्कृतिक रूप से पूर्वाग्रही - यह संपूर्ण मानवता को केंद्र में रखता है। मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता और समकालीन प्रासंगिकता : पाठ्यक्रम की सृजनात्मक रचना आनंद सभा पाठ्यक्रम में न केवल मूल्य बताए गए हैं, बल्कि उन्हें अनुभव करने के लिए मूल्य-आधारित प्रश्न, व्यक्तिगत अभ्यास, और समूहीय परियोजनाएँ दी गई हैं - जो इसे सक्रिय और प्रभावी बनाती हैं। शिक्षकों की भूमिका निर्णायक यह पाठ्यक्रम तभी प्रभावी होगा जब शिक्षक स्वयं इन मूल्यों को जिएं और छात्र के साथ एक सहभागी के रूप में जुड़ें।
पाठ्यक्रम की सर्वसमावेशिता - यह किसी विशिष्ट धर्म, वर्ग या दृष्टिकोण को नहीं थोपता, बल्कि सभी विद्यार्थियों के आत्मिक और नैतिक विकास को समान दृष्टि से देखता है। आगे की संभावनाएं - इस पाठ्यक्रम को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए स्थानीय भाषा, दृश्य माध्यम (वीडियो, कहानियाँ) और सामुदायिक सहभागिता को जोड़ा जा सकता है।

"आनंद सभा" पाठ्यक्रम एक मूल्यनिष्ठ, अनुभवात् और सार्वभौमिक दृष्टिकोण से परिपूर्ण शैक्षिक सामग्री है, जो छात्रों को केवल परीक्षा-उत्तीर्णता की नहीं, बल्कि एक श्रेष्ठ मानव बनने की दिशा में मार्गदर्शन करती है। इसमें 'जीवन के साथ शिक्षा' का साकार प्रयास दिखाई देता है। - आज के भौतिकवादी और प्रतिस्पर्धात्मक युग में सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों की शिक्षा विद्यार्थियों को मानसिक संतुलन, नैतिकता और आत्म-ज्ञान की ओर ले जाती है।

5.3 सुझाव (Suggestions):-

प्रथम सुझाव: आनंद सभा पाठ्यक्रम मूल्य चेतन मूल्य दृष्टि और मूल्य बोध की समझ को एक व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करता है अपेक्षा यह है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा के जो स्तर सुझाए गए हैं उनके अनुसार इस पाठ्यक्रम को और प्रभावी रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। फाऊंडेशनल स्टेज प्रिपेरटॉरी स्टेज मिडिल स्टेज और सेकेंडरी स्टेज के अनुसार किस प्रकार की मूल्य की समझ अपेक्षित है और उसके अनुसार कौन सी गतिविधियां विद्यार्थियों को कराई जानी चाहिए इस संबंध में अनुसंधान कर इस पाठ्यक्रम को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

दूसरा सुझाव: आनंद सभा पाठ्यक्रम को प्रभावी रूप से विद्यार्थियों के जीवन में उतरने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षकों का व्यापक स्तर पर शिक्षक प्रशिक्षण किया जाए और उन्हें उन तकनीकों और कौशलों में तैयार किया जाए जिनके माध्यम से विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों का विकास किया जा सके।

तीसरा सुझाव: आनंद सभा पाठ्यक्रम में बहुत ही रोचक और अनुभवात्मक गतिविधियां दी गई है यदि इन गतिविधियों को मध्य प्रदेश के सभी अंचलों के संदर्भ में और स्थानीय भाषाओं के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया जाए तो और अधिक रुचिकर होगा।स्थानीय भाषा और उससे जुड़ी संस्कृति को प्रस्तुत करने से बच्चे और अध्यापक इस पाठ्यक्रम के साथ अपना जुड़ाव अनुभव कर सकेंगे।

चौथा सुझाव: आनंद सभा पाठ्यक्रम के संबंध में समय-समय पर स्थानीय स्तर पर अभिभावकों को भी प्रशिक्षण दिया जा सकता है उनका ओरियंटेशन इस दृष्टि से किया जा सकता है कि बच्चों के दैनिक जीवन में कौन से ऐसे मूल्य हैं जिन्हें अभिभावकों की दृष्टि से विशेष महत्व है इस विषय पर उनके साथ चर्चा करके उनको भी इस पहल से जोड़ा जा सकता है।

पांचवा सुझाव: इस प्रकार की पहल यदि किसी और राज्य द्वारा भी की गई है तो इस पर उनकी बेस्ट प्रैक्टिसेज अर्थात श्रेष्ठ अभ्यासन का अध्ययन करने के लिए मध्य प्रदेश के शिक्षकों को, विशेष करके आनंद सभा पाठ्यक्रम का निर्माण करने वाले विद्वानों को अन्य राज्यों के साथ संवाद करने का अवसर दिया जा सकता है जिससे कि आनंद सभा पाठ्यक्रम में आने वाले समय में गुणात्मक सुधार किए जा सके।

अध्याय -6
निष्कर्ष और अनुशंसाएं

6.1 भविष्य हेतु संकेत (Implications for Future Study):- आनंद सभा पाठ्यक्रम के दीर्घकालिक प्रभावों पर अनुवर्ती (longitudinal) अध्ययन किया जा सकता है| विभिन्न राज्यों/भाषाओं में इस पाठ्यक्रम के प्रभाव की तुलनात्मक अध्ययन पद्धति अपनाई जा सकती है| डिजिटल मूल्य शिक्षा व 'आनन्द सभा' का समन्वय भविष्य में संभावित शोध क्षेत्र हो सकता है|

विविध शैक्षणिक स्तरों पर अध्ययन: प्राथमिक, उच्च प्राथमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तरों पर "सार्वभौमिक मूल्यों" की प्रस्तुति का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है|

आनंद सभा पाठ्यक्रम के दीर्घकालिक प्रभावों पर अनुवर्ती (longitudinal) अध्ययन किया जा सकता है|

. निरंतर मूल्यांकन और नीति-निर्माण से जुड़ाव हो|

यह जरूरी है कि राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर इस पाठ्यक्रम के प्रभाव का मूल्यांकन किया जाए, और NEP 2020 की मूल भावना ,संतुलित, नैतिक और समरस समाज का निर्माण को ध्यान में रखते हुए पुनरावलोकन एवं अद्यतन होते रहें| आनंद सभा पाठ्यक्रम, NEP 2020 की उस कल्पना को मूर्त रूप देता है जिसमें शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार नहीं, बल्कि जीवन को सार्थक, संतुलित और मानवतापूर्ण बनाना है| यदि इस पाठ्यक्रम को नीति निर्माताओं और शिक्षकों द्वारा गंभीरता से अपनाया जाए, तो यह भारत को "वसुधैव कुटुम्बकम्" के आदर्श की ओर ले जा सकता है|

शिक्षकों की भूमिका पर शोध:- यह अध्ययन किया जा सकता है कि शिक्षक का दृष्टिकोण व व्यवहार "आनन्द सभा" के प्रभाव में किस तरह बदलता है|विद्यार्थियों के दृष्टिकोण में परिवर्तन: पाठ्यक्रम के प्रभाव से विद्यार्थियों के भावनात्मक, सामाजिक और नैतिक व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों पर शोध किया जा सकता है| अंतर-सांस्कृतिक तुलना: विभिन्न राज्यों या भाषाओं में "आनन्द सभा" जैसे कार्यक्रमों के तुलनात्मक अध्ययन से क्षेत्रीय प्रभावों को समझा जा सकता है| अधिकतम विद्यालयों में इस पाठ्यक्रम को अनिवार्य किया जाना चाहिए| स्थानीय अनुभव और कहानियों को जोड़कर इसे और प्रासंगिक बनाया जा सकता है| शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाएं ताकि वे मूल्यों को आत्मसात करके विद्यार्थियों को दिशा दे सकें| आनंद सभा पाठ्यक्रम न केवल एक मूल्य-शिक्षा कार्यक्रम है, बल्कि यह छात्रों के सम्पूर्ण

व्यक्तित्व विकास और सामाजिक चेतना के निर्माण की एक सशक्त नींव है, जो उन्हें एक बेहतर मानव और जिम्मेदार नागरिक बनने में समर्थ बनाता है|

6.2 सिफारिशें (Recommendations):

1. शिक्षकों के लिए मूल्य-आधारित प्रशिक्षण अनिवार्य हो:-यदि शिक्षक स्वयं मूल्यों को केवल रटकर नहीं, बल्कि समझकर और जीकर विद्यार्थियों के सामने प्रस्तुत करें, तभी विद्यार्थी वास्तविक रूप से प्रभावित होते हैं| इसके लिए UHV (Universal Human Values) आधारित शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जाने चाहिए – जो NEP 2020 के उस बिंदु को साकार करता है जिसमें कहा गया है कि "शिक्षक समाज निर्माण के प्रमुख स्तंभ हैं|"

2. इस पाठ्यक्रम का राष्ट्रीय स्तर पर विस्तार हो:-NEP 2020 शिक्षा को एक समान, समावेशी और मूल्य-आधारित बनाने की बात करता है| चूंकि आनंद सभा पाठ्यक्रम ने सकारात्मक परिणाम दिए हैं, इसलिए इसे अन्य राज्यों की शालाओं और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या में भी समाहित किया जाना चाहिए|

3. मूल्यांकन प्रणाली में नवाचार लाया जाए:-पारंपरिक परीक्षा केवल जानकारी मापती है, न कि समझ, व्यवहार या दृष्टिकोण| इसलिए इस पाठ्यक्रम के लिए स्व-मूल्यांकन, प्रोजेक्ट, व्यवहारिक गतिविधियों और केस स्टडी आधारित मूल्यांकन को अपनाया जाए| इससे NEP 2020 में सुझाए गए "समग्र मूल्यांकन" (Holistic Assessment) की भावना पूरी होगी|

4. स्थानीय संस्कृति और भाषा का समावेश हो:- NEP 2020 मातृभाषा और स्थानीय संदर्भ में शिक्षा देने पर बल देता है| आनंद सभा में सार्वभौमिक मूल्यों को यदि स्थानीय कहानियों, उदाहरणों और बोलियों के माध्यम से जोड़ा जाए, तो उनका प्रभाव और अधिक गहराई से पड़ेगा|

5. परिवार और समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित की जाए:- पाठशाला में सीखे गए मूल्य तब स्थायी बनते हैं जब उनका अभ्यास घर और समाज में भी हो| आनंद सभा संवाद, माता-पिता कार्यशाला, और सामुदायिक गतिविधियों के माध्यम से परिवार और समाज को इस प्रक्रिया में शामिल करना आवश्यक है| यह NEP के "Whole Community Participation" दृष्टिकोण से जुड़ा है|

6. निरंतर मूल्यांकन और नीति-निर्माण से जुड़ाव हो:- यह जरूरी है कि राज्य व राष्ट्रीय स्तर पर इस पाठ्यक्रम के प्रभाव का मूल्यांकन किया जाए, और NEP 2020 की मूल भावना – संतुलित, नैतिक और समरस समाज का निर्माण – को ध्यान में रखते हुए पुनरावलोकन एवं अद्यतन होते रहें|

आनंद सभा पाठ्यक्रम, NEP 2020 की उस कल्पना को मूर्त रूप देता है जिसमें शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार नहीं, बल्कि जीवन को सार्थक, संतुलित और मानवतापूर्ण बनाना है। यदि इस पाठ्यक्रम को नीति निर्माताओं और शिक्षकों द्वारा गंभीरता से अपनाया जाए, तो यह भारत को "वसुधैव कुटुम्बकम्" के आदर्श की ओर ले जा सकता है।

शिक्षकों के लिए विशेष प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन किया जाए ताकि वे आनंद सभा पाठ्यक्रम की गहराई को समझ सकें- •आनंद सभा पाठ्यक्रम केवल एक नैतिक शिक्षा का कार्यक्रम नहीं है, बल्कि यह भारतीय जीवन-दृष्टि, सर्वभौमिक मानवीय मूल्यों और मानव चेतना के दर्शन पर आधारित है।

•अधिकतर शिक्षक इसे केवल एक शिष्टाचार या नैतिकता की कक्षा समझते हैं। अतः उन्हें यह समझाना आवश्यक है कि यह पाठ्यक्रम बच्चों के विवेक, संवेदना और आत्म-अनुशीलन को जागृत करने का माध्यम है।

•प्रशिक्षण कार्यशालाओं में निम्नलिखित बिंदुओं को शामिल किया जा सकता है:

•'सह-अस्तित्व', 'मानव आकांक्षा', 'संतुलित जीवन' आदि अवधारणाओं का अर्थ और महत्व

•केस स्टडी, रिफ्लेक्शन एक्टिविटीज़ और संवाद आधारित शिक्षण

•दार्शनिक पाठों की सरल भाषा में व्याख्या कैसे की जाए।

•ये कार्यशालाएँ NEP 2020 के शिक्षक-प्रशिक्षण उद्देश्यों से भी मेल खाती हैं, जो शिक्षक को "फैसिलिटेटर" के रूप में विकसित करने की बात करती हैं।

2. पाठों में स्थानीय और जीवन से जुड़े उदाहरणों का समावेश बढ़ाया जाए•छात्रों के लिए पाठ तभी प्रभावशाली बनता है जब वह उनके प्रारंभिक अनुभव संसार से जुड़ा हो। यदि उदाहरण बहुत अमूर्त, दार्शनिक या ऐतिहासिक होंगे, तो छात्र केवल रटकर उत्तर देंगे, लेकिन अनुभव आधारित समझ विकसित नहीं होगी।

•उदाहरण के लिए:-"सह-अस्तित्व" को पड़ोसी की मदद, पेड़ों का योगदान, या परिवार में एकता जैसे स्थानीय उदाहरणों से जोड़ना।

•"सत्य" या "धैर्य" जैसे मूल्यों को स्कूली जीवन की घटनाओं, जैसे परीक्षा की तैयारी या टीम वर्क के अनुभव से जोड़ना। •यह प्रक्रिया छात्रों के अंदर "values in action" यानी व्यावहारिक मूल्यों की समझ को प्रोत्साहित करेगी।

3. मूल्यांकन पद्धति को चिंतनशील, संवादात्मक और गतिविधि आधारित बनाया जाए।

•वर्तमान में यदि मूल्यांकन केवल लिखित उत्तरों या परिभाषाओं पर आधारित है, तो यह पाठ्यक्रम की मूल भावना को समाप्त कर देता है|

•मूल्यांकन को reflective और process-oriented बनाना चाहिए, जिससे छात्र न केवल जानें, बल्कि आत्म-मंथन करें| उदाहरण:- •'आज आपने कौन-से मूल्य का अभ्यास किया?' - इस प्रकार के जर्नल या डायरी लेखन से चिंतनशीलता बढ़ेगी| मूल्यांकन छात्रों में अभ्यंतर बदलाव (inner transformation) को माप सकता है, केवल बाहरी प्रदर्शन को नहीं| समानुभूति, संवाद, सह-अस्तित्व जैसे मूल्यों के व्यावहारिक पहलुओं को छात्रों के अनुभवों से जोड़ा जाए|सार्वभौमिक मूल्य जैसे समानुभूति (empathy), संवाद (dialogue) और सह-अस्तित्व (co-existence) छात्रों के अंदर तभी विकसित होंगे जब उन्हें अपने दैनिक जीवन में इन मूल्यों को महसूस करने और अभ्यास करने का अवसर मिलेगा| स्कूल में "शांतिपूर्ण संवाद सत्र" आयोजित करना जहाँ छात्र बिना विवाद के एक-दूसरे के विचार सुनें और साझा करें| "सहयोग परियोजनाएँ" जिनमें छात्र मिलकर किसी सामाजिक समस्या का हल खोजें| कथाएँ और वास्तविक जीवन घटनाएँ जो इन मूल्यों को उजागर करती हों, उन्हें साझा करना और उस पर चर्चा कराना| जब छात्र स्वयं महसूस करेंगे कि इन मूल्यों से उनका जीवन बेहतर हो सकता है, तभी वे उन्हें आत्मसात करेंगे|

1.शिक्षण पद्धति में एकरूपता का अभाव:- यदि शिक्षक स्वयं पाठ्यक्रम के उद्देश्य, सार्वभौमिक मूल्यों और "मानव दृष्टि" के दर्शन को गहराई से नहीं समझते, तो वे उसे केवल नैतिक शिक्षा की तरह प्रस्तुत करते हैं|

2.पाठ्य सामग्री का प्रस्तुतीकरण अधिक दार्शनिक या अमूर्त हो सकता है:-किशोरावस्था में छात्र अधिक ठोस और व्यावहारिक उदाहरणों से जुड़ते हैं, जबकि आनंद सभा में कुछ प्रसंग विचार प्रधान हैं

3.मूल्यांकन की प्रक्रिया केवल पुनरुत्पादन पर केंद्रित हो सकती है:- छात्रों में चिंतनशीलता अपेक्षाकृत कम विकसित होती|

6.3 आनंद सभा पाठ्यक्रम की उपयोगिता / सारांश- यह शोध 'आनंद सभा' पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों में सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के बोध, विकास और व्यवहारिक क्रियान्वयन की क्षमता का अध्ययन करता है| अध्ययन के दौरान राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, AICTE द्वारा प्रस्तुत Universal Human Values (UHV) दृष्टिकोण और कक्षा 10वीं की पाठ्यपुस्तक का विश्लेषण किया गया| शिक्षा का उद्देश्य और आनंद सभा का स्थान :NEP 2020 के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल विषय आधारित ज्ञान प्रदान करना नहीं है, बल्कि पूर्ण मानव क्षमता के विकास और एक न्यायसंगत, समावेशी तथा मूल्यनिष्ठ समाज की स्थापना करना है | आनंद

सभा पाठ्यक्रम इसी उद्देश्य के अनुरूप कार्य करता है|यह पाठ्यक्रम विद्यार्थी को जीवन के प्रति गहराई से सोचने, स्व-अन्वेषण करने, तथा स्वयं में नैतिक और मानवीय गुणों को पहचानने और विकसित करने का अवसर देता है |

सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों की उपस्थिति 'आनंद सभा' पाठ्यक्रम सत्य, प्रेम, करुणा, शांति, अहिंसा, सह-अस्तित्व जैसे सार्वभौमिक मूल्यों पर आधारित है| यह पाठ्यक्रम न केवल विद्यार्थियों को संबंधों के महत्व, आत्म-परख एवं आत्म-उत्कर्ष का बोध कराता है, बल्कि उन्हें जीवन में नैतिक दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रेरित करता है |UHV और मानवमूल्य आधारित शिक्षा की भूमिका UHV (Universal Human Values) के सिद्धांतों से साम्यता AICTE और UGC द्वारा प्रस्तुत UHV दृष्टिकोण में शिक्षा को तीन स्तरों पर देखा गया है:समग्र जीवन-दृष्टि (Holistic Worldview),सार्थक मूल्यों का अभ्यास, और व्यावहारिक जीवन-कौशल का विकास | 'आनंद सभा' पाठ्यक्रम इन्हीं तीन स्तंभों पर आधारित है| यह विद्यार्थियों को "स्वयं को समझो - और समाज व प्रकृति से अपने संबंध को पहचानो" की प्रक्रिया से परिचित कराता है|

AICTE के Universal Human Values (UHV) ढांचे में शिक्षा को तीन स्तरों पर देखा गया है:

जीवन-दृष्टि (Holistic Worldview),मानवीय मूल्यों की समझ, और जीवन कौशलों की अभ्यासात्मक शिक्षा |

UHV यह स्पष्ट करता है कि व्यक्ति, परिवार, समाज और प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन ही मानवीय मूल्यों की सर्वोच्च परिणति है| 'आनंद सभा' पाठ्यक्रम इन्हीं तीन स्तंभों पर आधारित है| यह विद्यार्थियों को "स्वयं को समझो - और समाज व प्रकृति से अपने संबंध को पहचानो" की प्रक्रिया से परिचित कराता है|

"आनंद सभा पाठ्यक्रम" की उपयोगिता और संदर्भ - नई शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में NEP 2020 बार-बार इस बात पर बल देती है कि शिक्षा का उद्देश्य है – चरित्र निर्माण, संवेदनशील नागरिक का निर्माण, और मानवीय गुणों की प्रतिष्ठा | आनंद सभा पाठ्यक्रम इन लक्ष्यों को आधार बनाकर विद्यार्थियों को आत्म-निर्भर, विचारशील और जिम्मेदार नागरिक बनने की दिशा में प्रशिक्षित करता है|

NEP 2020 में शिक्षा को "पूर्ण मानव क्षमता के विकास", "नैतिकता एवं संवेदनशीलता", और "सामाजिक समरसता" का माध्यम माना गया है | 'आनंद सभा' पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तक और शिक्षक-प्रशिक्षण में इन्हीं आयामों को उभारता है|"आनंद सभा" पाठ्यक्रम को विद्यालयी शिक्षा में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के उद्देश्य से शामिल किया गया है| यह पाठ्यक्रम नैतिक, सामाजिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक मूल्यों को जागृत करने हेतु एक अभिनव प्रयास है| नई शिक्षा नीति 2020 में शिक्षा को केवल ज्ञान प्रदान करने का माध्यम नहीं, बल्कि नैतिक

और जीवन मूल्यों को विकसित करने वाला साधन माना गया है। इस संदर्भ में आनंद सभा पाठ्यक्रम अत्यंत प्रासंगिक है ।नई शिक्षा नीति 2020 के प्रमुख बिंदु और आनंद सभा की संगति

एनईपी 2020 के बिंदु	**आनंद सभा पाठ्यक्रम की संगति**
नैतिक और मानवतावादी मूल्यों पर बल	पाठों के माध्यम से करुणा, सत्य, सहिष्णुता, अहिंसा, सेवा, और सहानुभूति जैसे मूल्य सिखाए जाते हैं।
बाल-केंद्रित और अनुभवजन्य शिक्षा	कहानियाँ, गतिविधियाँ और चर्चा आधारित शिक्षण विद्यार्थियों की सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करते हैं।
समावेशी और समान शिक्षा	पाठों में सामाजिक न्याय, समानता, और सभी वर्गों के प्रति आदर के भाव को बढ़ावा दिया गया है।
आत्म-जागरूकता और जीवन कौशल विकास	विद्यार्थियों को आत्मनिरीक्षण, संवाद, सहयोग और आत्म-अनुशासन के लिए प्रेरित किया जाता है।
स्थानीय और वैश्विक मूल्यों का समन्वय	पाठों में भारतीय संस्कृति की जड़ों के साथ-साथ सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों का समावेश है।

मूल्यनिष्ठ नागरिक निर्माण में सहायक विद्यार्थियों में सामाजिक जिम्मेदारी और नैतिक चेतना का विकास होता है। भावनात्मक साक्षरता (Emotional Literacy) पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को अपनी भावनाओं को समझने और उन्हें सकारात्मक रूप से व्यक्त करने की क्षमता देता है।
विद्यालय के वातावरण में सकारात्मकता आनंद सभा की गतिविधियाँ विद्यालय में सहयोग, सौहार्द्र और अनुशासन का वातावरण बनाती हैं।

शिक्षकों की भूमिका का विस्तार शिक्षक केवल विषय विशेषज्ञ न होकर एक मानव मूल्य संवाहक की भूमिका निभाते हैं। “आनंद सभा” पाठ्यक्रम, नई शिक्षा नीति 2020 के समग्र, समावेशी, मूल्यनिष्ठ और बाल-केंद्रित शिक्षा के लक्ष्य को 具 रूप देता है। यह विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए एक आवश्यक उपकरण बनकर उभरता है। जीवन के हर स्तर पर उपयोगी सार्वभौमिक मूल्यों का सशक्त समावेश इसे वर्तमान समय की एक अत्यंत प्रासंगिक और प्रभावशाली शैक्षिक पहल बनाता है। ‘पंच प्रण’ के आलोक में ‘आनंद सभा’ की भूमिका इस पाठ्यक्रम की उपयोगिता यदि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में प्रस्तुत पंच प्राणों के सन्दर्भ में देखें, तो इसकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्ध होती है।

पंच प्राण और आनंद सभा पाठ्यक्रम की उपयोगिता:

1.विकसित भारत का निर्माण: पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्रों में स्वयं की पहचान, संतोषपूर्ण जीवन और समग्र विकास (holistic development) की भावना विकसित की जाती है। उदाहरण: अध्याय 1 “मूल्यों शिक्षा को समझना” और अध्याय 4 “सुख और समृद्धि को समझना” छात्रों को जीवन के उद्देश्यों के बारे में सोचने और उन्हें प्राप्त करने के उपाय सुझाते हैं।
➡ यह युवाओं को केवल आर्थिक विकास की नहीं, बल्कि नैतिक, सामाजिक और आंतरिक विकास की दिशा में प्रशिक्षित करता है।

2.गुलामी की सोच से मुक्ति: पाठ्यक्रम उपभोगवाद, प्रतिस्पर्धा और अंधानुकरण की मानसिकता से बाहर निकलकर आत्मावलोकन, आत्म-जागरूकता और स्वतंत्र सोच पर बल देता है। उदाहरण: अध्याय 2 “स्व-अन्वेषण” में विद्यार्थियों को स्वयं के भीतर झाँकने और अपनी मान्यताओं को जांचने का अवसर मिलता है। यह औपनिवेशिक मानसिकता और पाश्चात्य अनुकरण से मुक्त करने में सहायक है।

3.विरासत पर गर्व: आनंद सभा पाठ्यक्रम में भारतीय दार्शनिक परंपरा, सामाजिक मूल्यों और प्राकृतिक संतुलन को महत्व दिया गया है। यह भारतीय ज्ञान परंपरा के समग्र दृष्टिकोण (Integral Vision) पर आधारित है।

1. उदाहरण: अध्याय 11 “अस्तित्व में व्यवस्था” और अध्याय 10 “प्रकृति में पारस्परिकता” भारतीय दृष्टिकोण की वैज्ञानिकता को उजागर करते हैं। यह विद्यार्थियों को अपनी सांस्कृतिक विरासत से जोड़ता है और उसमें गर्व का भाव भरता है।

1. एकता और एकजुटता: पाठ्यक्रम में समभाव, सह-अस्तित्व, पारस्परिक सम्मान, प्रेम, करुणा और न्याय की अवधारणाओं को प्रमुख स्थान मिला है। उदाहरण: अध्याय 8 (अ) “ममता, वात्सल्य और श्रद्धा” व अध्याय 8 (ब) “प्रेम और पूरकता” मानवीय संबंधों में

समरसता को बढ़ावा देते हैं। यह समाज में समावेशन, सहिष्णुता और विविधता में एकता की भावना को प्रोत्साहित करता है।

1. नागरिकों के कर्तव्यों का पालन: पाठ्यक्रम स्वयं के प्रति, शरीर के प्रति, परिवार, समाज और प्रकृति के प्रति उत्तरदायित्व की समझ विकसित करता है। उदाहरण: अध्याय 7 "स्वास्थ्य और संयम", अध्याय 9 "समाज में व्यवस्था" - इन अध्यायों के माध्यम से विद्यार्थी जीवन में संतुलन, अनुशासन और दायित्व को अपनाना सीखते हैं। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्र निर्माण के प्रति सक्रिय भागीदारी की भावना जगाता है। आनंद सभा पाठ्यक्रम केवल एक वैकल्पिक पाठ नहीं, बल्कि एक राष्ट्र निर्माण का उपकरण है जो पंच प्राणों की संकल्पना को व्यवहार में लाने की दिशा में कार्य करता है। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में चेतना, आत्मनिर्भरता, सांस्कृतिक गर्व और सामाजिक समरसता का ऐसा वातावरण निर्मित करता है जो भारत को "विकसित भारत" बनाने के संकल्प को यथार्थ में बदलने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

पंच प्रण	**आनंद सभा से संबंध**
1. विकसित भारत का संकल्प	पाठ्यक्रम विद्यार्थियों में सकारात्मक दृष्टिकोण, आत्मनिर्भरता और नैतिक नेतृत्व की भावना जगाता है।
2. गुलामी की हर सोच से मुक्ति	'आत्म-निर्भरता', 'स्व-विवेक' और 'भारतीय दर्शन' पर आधारित पाठ्यविषय इस दिशा में कार्य करता है।
3. हमारी विरासत पर गर्व	पाठ्यक्रम में भारतीय ज्ञान प्रणाली, मूल्य-परंपरा, और संस्कृति को सशक्त रूप से प्रस्तुत किया गया है।

4. एकता और एकजुटता	सह-अस्तित्व, संवाद और आपसी सम्मान की भावना पाठ्यक्रम के केंद्र में है।
5. नागरिकों के कर्तव्य	विद्यार्थी को अपने कार्य, संबंध, समाज व पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार बनाने का प्रयास किया जाता है।

इस प्रकार, 'आनंद सभा' न केवल व्यक्तिगत स्तर पर बल्कि राष्ट्रीय दृष्टिकोण से भी विद्यार्थियों को तैयार करती है, जो पंच प्रण के मूल को चरितार्थ करता है।

यह विद्यार्थियों को जीवन की सही दिशा पहचानने, अपने भीतर छिपे नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों को जागृत करने,

और एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में भारत के "विकसित राष्ट्र" बनने की यात्रा में योगदान देने हेतु तैयार करता है।

"आनंद सभा" पाठ्यक्रम की सैद्धांतिक संगतता (theoretical alignment) व सैद्धांतिक जुड़ाव यदि हम राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020) से प्रेरित दो महत्त्वपूर्ण दस्तावेजों – National Curriculum Framework for School Education (NCFSE 2023) और National School Foundation Stage (NSF-FS) – के साथ देखें, तो यह स्पष्ट होता है कि यह पाठ्यक्रम इन दोनों ढाँचों की मूल भावना, उद्देश्यों और दृष्टिकोण के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। नीचे इस संगतता और जुड़ाव को विश्लेषित किया गया है:

NCFSE 2023 के साथ सैद्धांतिक संगतता: NCFSE की मूल अवधारणाएँ- बाल-केंद्रित और अनुभवात्मक अधिगम (Learner-centric and Experiential Learning), समग्र विकास (Holistic Development), मूल्यों आधारित शिक्षा (Values-based education) शिक्षा का भारतीयकरण और स्थानीयकरण (Contextualisation & Indian Knowledge Systems), नैतिक, भावनात्मक और सामाजिक शिक्षा (Social-Emotional-Moral Learning) आनंद सभा पाठ्यक्रम में संगत बिंदु अनुभवजन्य अधिगम: पाठ्यक्रम में "स्व-अन्वेषण", "स्व-मूल्यांकन", "प्रोजेक्ट कार्य", और "मॉडेलिंग अभ्यास" जैसे खंड छात्रों को केवल जानकारी नहीं, बल्कि जीवन के अनुभव से सीखने का अवसर देते हैं – यह पूरी तरह NCFSE के learner-centric pedagogy के अनुकूल है। समग्र विकास अध्यायों में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक संतुलन की बात की गई है (जैसे अध्याय 4 "सुख और समृद्धि", अध्याय 7 "स्वास्थ्य और संयम") – यह समग्र शिक्षा की अवधारणा को दर्शाता है। मूल्यों की शिक्षा पूरा पाठ्यक्रम

मूल्यों पर आधारित है – जैसे ममता, श्रद्धा, प्रेम, न्याय, कृतज्ञता, संयम, सह-अस्तित्व आदि – जो NCFSE द्वारा प्रस्तावित Life Skills और Ethics से जुड़ा है। भारतीय दर्शन व ज्ञान प्रणाली का समावेश: जैसे अध्याय 5 "स्वयं और शरीर", अध्याय 6 "स्वयं में व्यवस्था", और अध्याय 11 "अस्तित्व में व्यवस्था" – सभी अध्याय भारतीय चिंतन प्रणाली (holistic vision of self, family, society and nature) को केंद्र में रखते हैं। भावनात्मक और सामाजिक शिक्षा पाठ्यक्रम संबंधों, सम्मान, सहभागिता और आत्म-निरीक्षण को बढ़ावा देता है – जो NCFSE के Social-Emotional Learning (SEL) उद्देश्य से सीधा मेल खाता है। NSF-FS (National School Foundation Stage) के साथ संगतता "Play-based, activity-based, inquiry-based" अधिगम दृष्टिकोण: आनंद सभा में चर्चा, स्व-अन्वेषण, समूह कार्य, कथाएँ, भूमिका-नाट्य आदि के माध्यम से यही शैली कक्षा 9-12 तक विस्तारित की गई है। प्रेम, सुरक्षा, संबंध और नैतिक विकास: NSF-FS में 'emotional nurturing and positive environment' को महत्त्व दिया गया है; आनंद सभा में यह उच्चतर कक्षाओं के लिए नैतिक बौद्धिक परिपक्वता तक विस्तारित है। स्वयं के प्रति चेतना का विकास: NSF-FS जहाँ "knowing myself and others" जैसी प्राथमिक अवधारणाओं पर काम करता है, वहीं आनंद सभा में 'स्व-अन्वेषण', 'स्व-शरीर का समझना', 'अस्तित्व में सहअस्तित्व' जैसे गहन रूपों में यह अवधारणा विकसित होती है।

सैद्धांतिक आधार का निष्कर्ष:

पहलू	**NCFSE 2023**	**आनंद सभा पाठ्यक्रम**
अधिगम का उद्देश्य	समग्र मानव विकास	तृप्तिपूर्ण जीवन और सहअस्तित्व के लिए शिक्षा
अधिगम की प्रक्रिया	अनुभवात्मक, खोज आधारित	स्व-अन्वेषण, स्वयं की चेतना आधारित
मूल्य शिक्षा	नैतिकता, समावेशन, जीवन कौशल	सार्वभौमिक मानव मूल्य (प्रेम, न्याय, सौहार्द)

भारत केंद्रित दृष्टिकोण	भारतीय ज्ञान परंपरा का समावेश	भारतीय चिंतन, दर्शन और जीवन शैली पर आधारित
सामाजिक-भावनात्मक शिक्षा	SEL को पाठ्यक्रम में एकीकृत करना	आत्म-संवाद, सम्मान, परिवारिक-सामाजिक सहभागिता

"आनंद सभा" पाठ्यक्रम न केवल NEP 2020 के पंच प्राणों से प्रेरित है, बल्कि यह NCFSE और NSF-FS दोनों के साथ पूर्णतः सैद्धांतिक रूप से संगत है। यह एक ऐसा पाठ्यक्रम है जो मूल्य-आधारित, भारतीय परंपरा-सम्मत, अनुभवात्मक और आत्म-चेतन शिक्षण दृष्टिकोण को उच्च माध्यमिक स्तर पर व्यवहार में लाता है। यह पाठ्यक्रम विद्यार्थियों को न केवल आत्म-जागरूक बनाता है, बल्कि उन्हें समाज, राष्ट्र और प्रकृति के प्रति उत्तरदायी बनने की प्रेरणा देता है। इसकी दृष्टि पूर्ण रूप से NEP 2020 की आत्मा के अनुरूप है।

पाठ्यक्रम का समाज से जुड़ाव (सामाजिक सहभागिता, उत्तरदायित्व, और नागरिक चेतना के स्तर पर) आनंद सभा पाठ्यक्रम और पंच प्राण का अंतर्संबंध विकसित भारत का संकल्प यह पाठ्यक्रम "स्वयं" को जानने, आत्मशिक्षा, संतुलित जीवन और सामाजिक उत्तरदायित्व की समझ प्रदान करता है – जो समग्र रूप से विकसित भारत के लिए जागरूक, सशक्त और मूल्यों पर आधारित नागरिक तैयार करने का आधार बनता है। अध्याय 1, 2, 4, 5 में "स्व" और "समाज" की भूमिका को समझकर छात्र आत्मनिर्भर और उद्देश्यपूर्ण बनते हैं। गुलामी की मानसिकता से मुक्ति यह पाठ्यक्रम पश्चिमी अनुकरण, प्रतियोगी दृष्टिकोण या केवल उपभोग पर आधारित जीवन-दृष्टि को चुनौती देता है। इसके स्थान पर यह भारत की अपनी ज्ञान परंपरा पर आधारित सोच – जैसे कि सह-अस्तित्व, समता, न्याय और प्रेम – को स्थापित करता है। अध्याय 6, 8 (ब) "प्रेम और न्याय" की भारतीय अवधारणा को स्थापित करता है। अपनी विरासत पर गर्व यह पाठ्यक्रम भारतीय दर्शन, संस्कृति और लोक मूल्यों पर आधारित है। इसमें प्रकृति, परिवार, समाज और आत्मा के बीच सामंजस्य को समझाया गया है – जिससे विद्यार्थी अपनी सांस्कृतिक विरासत को न केवल जानता है, बल्कि उस पर गर्व करना भी सीखता है। अध्याय 10, 11 "प्रकृति और अस्तित्व की व्यवस्था" भारतीय दृष्टिकोण में गर्व करने योग्य ज्ञान हैं।एकता और एकजुटता पाठ्यक्रम में "प्रेम, श्रद्धा, ममता, न्याय, समता" जैसे सार्वभौमिक मूल्यों को प्राथमिकता दी गई है। ये मूल्य समाज में सौहार्द, समरसता और एकता को सुदृढ़ करते हैं। अध्याय 8 (अ), 9 में समाज के भीतर न्याययुक्त संबंध और सामाजिक सहभागिता पर बल दिया गया है।नागरिकों के कर्तव्यों

का पालन:पाठ्यक्रम “कर्तव्य-बोध” को केवल उपदेशात्मक ढंग से नहीं, बल्कि अभ्यास-आधारित पद्धति से विद्यार्थियों में विकसित करता है| स्वास्थ्य, संयम, पर्यावरण के प्रति उत्तरदायित्व, समाज में न्याय का निर्वाह – ये सब कर्तव्य-आधारित नागरिकता की ओर संकेत करते हैं|अध्याय 7 “स्वास्थ्य और संयम” तथा अध्याय 9 “समाज में व्यवस्था” इस बिंदु को स्पष्ट करते हैं| आनंद सभा पाठ्यक्रम का समाज से जुड़ाव: सामाजिक सहभागिता:पाठ्यक्रम प्रोजेक्ट वर्क, सामूहिक अभ्यास, आत्म-अवलोकन और सामाजिक गतिविधियों के माध्यम से छात्रों को सक्रिय सामाजिक सहभागिता में भाग लेने के लिए प्रेरित करता है|इसमें “मेरा योगदान समाज को क्या हो सकता है?” जैसे प्रश्नों से छात्रों में सामाजिक चेतना विकसित होती है| नैतिक और मानवीय संबंध:अध्याय 8 (ब) प्रेम, न्याय और पारस्परिकता की समझ छात्रों को समाज में संबंधों को निभाने की मूल दृष्टि देता है|पाठ्यक्रम यह समझाने की कोशिश करता है कि अच्छे समाज की नींव “समझ और आत्मीयता” पर होती है, न कि केवल कानून और दंड पर| पर्यावरणीय व सामाजिक उत्तरदायित्व:अध्याय 10 और 11 में प्रकृति और अस्तित्व के साथ पारस्परिकता की व्याख्या, विद्यार्थियों में पर्यावरणीय चेतना और पृथ्वी के प्रति दायित्व की भावना उत्पन्न करता है|आनंद सभा पाठ्यक्रम “पंच प्राण” के हर आयाम को सशक्त रूप से प्रतिबिंबित करता है| यह पाठ्यक्रम केवल व्यक्तिगत विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक जिम्मेदारी, सांस्कृतिक चेतना, पर्यावरणीय संतुलन और नागरिक सहभागिता को भी मजबूती से जोड़ता है| इस तरह यह पाठ्यक्रम भारत के समग्र विकास (Holistic National Development) के लिए एक मूल्यनिष्ठ एवं व्यवहारिक आधार प्रदान करता है| राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (NEP 2020),पंचकोषीय विकास (Fivefold personality development), आनंद प्राप्ति,अदिति-बौद्धिक-प्रयोगात्मक-प्रसारात्मक विधियाँ,आनंद सभा पाठ्यक्रम सार्वभौमिक नैतिक मूल्य (universal moral values) NEP 2020 और पंचकोषीय विकास NEP 2020 के अनुसार शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं, बल्कि बालक के “समग्र विकास” को सुनिश्चित करना है| यह समग्र विकास पाँच कोशों में वर्णित है जिसे “पंचकोष” कहा जाता है:अन्नमय कोष (शारीरिक विकास), प्राणमय कोष (ऊर्जा/जीवन शक्ति),मनोमय कोष (भावनात्मक/मानसिक विकास), विज्ञानमय कोष (बौद्धिक/तर्कपूर्ण विकास), आनन्दमय कोष (आत्मिक/आनंद आधारित विकास) आनंद सभा पाठ्यक्रम: पंचकोषीय विकास का माध्यम-“आनंद सभा” पाठ्यक्रम, कक्षा 9-12 के लिए तैयार किया गया एक नैतिक और मूल्य-आधारित पाठ्यक्रम है जो इन सभी कोष के संतुलित विकास को संबोधित करता है:अन्नमय कोष: अध्याय 7 - “स्वास्थ्य और संयम”, शरीर और व्यवहार के स्तर पर संतुलन प्राणमय कोष: अध्याय 5 - “स्वयं और शरीर की व्यवस्था” मनोमय कोष: अध्याय 8 - “प्रेम, ममता, कृतज्ञता” जैसे भावनात्मक मूल्यों का पोषण विज्ञानमय कोष: अध्याय 2, 3, 6 - आत्मपरीक्षण, तर्कशीलता, विवेक विकास

आनन्दमय कोष: अध्याय 4, 9, 11 - सह-अस्तित्व, समाज में न्याय और प्रकृति से संतुलन आनंद सभा पाठ्यक्रम आत्म-अन्वेषण और नैतिक जागरूकता के माध्यम से आनंदमय कोश को जाग्रत करता है, जो कि पंचकोषीय विकास का चरम है| अदिति, बौद्धिक, प्रयोगात्मक, प्रसारात्मक विधियों का प्रयोग NEP 2020 की मुख्य शिक्षण विधियाँ जो आनंद सभा पाठ्यक्रम में भी स्पष्ट हैं: अदिति (Reception / संवेदनशीलता) छात्र अनुभव आधारित शिक्षण के द्वारा मूल्यों को "अनुभव" करते हैं, जैसे - मूक समय, आत्मनिरीक्षण| प्रत्येक अध्याय में छात्र स्वयं की मान्यताओं और धारणाओं पर प्रश्न करते हैं| प्रोजेक्ट, मॉडलिंग अभ्यास और दैनिक जीवन से उदाहरण के माध्यम से छात्र मूल्य व्यवहार में लाते हैं|छात्रों को अपने अनुभवों, विचारों और निष्कर्षों को समूह में साझा करने के अवसर मिलते हैं (जैसे - आनंद क्लब, पोस्टर निर्माण, चर्चा आदि)| यह चारों विधियाँ मिलकर केवल ज्ञान नहीं, बल्कि मूल्य की "अनुभूति", "अन्वेषण", और "अनुप्रयोग" को संभव बनाती हैं| सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के संदर्भ मेंआनंद सभा पाठ्यक्रम निम्न सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों पर आधारित है:सत्य, प्रेम, न्याय, करुणा, ममता, कृतज्ञता, संयम, सहयोग, सह-अस्तित्व पाठ्यक्रम में यह मूल्य "व्यवहार-आधारित" और "संदर्भ-आधारित" दोनों रूपों में आते हैं:

अध्याय 8 (अ) - ममता, वात्सल्य, श्रद्धा (मनोमय कोष)

अध्याय 4 - सुख और समृद्धि की संकल्पना (विज्ञानमयकोष)

अध्याय 10 - प्रकृति के साथ सामंजस्य (प्राणमय और आनन्दमयकोष)

ये मूल्य केवल उपदेश नहीं, बल्कि छात्र की जीवन दृष्टि का हिस्सा बनते हैं| आनंद सभा और आनंद प्राप्ति- NEP 2020 में "आनंद" केवल "खुशी" नहीं, बल्कि आत्मिक तृप्ति, उद्देश्यपूर्ण जीवन और संतुलित दृष्टिकोण को दर्शाता है| "आनंद सभा" पाठ्यक्रम: मैं और शरीर के सह अस्तित्व को समझाता है

परिवार में सम्बंधों का महत्व व स्व की भूमिका बताता है ,समाज में न्याय और संतुलन सिखाता है,प्रकृति और समाज के साथ सह-अस्तित्व का अभ्यास कराता है,यह सब मिलकर छात्र को 'आनन्दमय कोश' की प्राप्ति की ओर अग्रसर करता है|

तत्व	**आनंद सभा पाठ्यक्रम की भूमिका**
पंचकोष	पंचकोष का संतुलित विकास
अधिति-बौद्धिक-प्रयोग-प्रसार	चारों शिक्षण विधियाँ उपयोग में लाई जाती हैं

सार्वभौमिक नैतिक मूल्य	पाठों और अभ्यासों के माध्यम से मूल्यों की अनुभूति
समाज और प्रकृति से जुड़ाव	सह-अस्तित्व, न्याय, प्रेम, कर्तव्य का अभ्यास
आनंद प्राप्ति	आत्म-ज्ञान, समरसता और जीवन की गहराई में उतरने का मार्ग

सार्वभौमिक मूल्यों की व्याख्या विद्यार्थियों की भाषा में आनंद सभा पाठ्यक्रम में मूल्यों की व्याख्या जटिल धार्मिक या दार्शनिक भाषा में नहीं, बल्कि सरल, सहज और वैज्ञानिक तरीके से की गई है, जो कक्षा 10 के विद्यार्थियों के स्तर के अनुसार है। इससे विद्यार्थी व्यक्तिगत जीवन से लेकर सामाजिक संबंधों तक में इन मूल्यों को व्यवहार में उतारने में सक्षम हो पाते हैं। ज्ञान, समझ और अनुभव आधारित संरचना यह पाठ्यक्रम केवल सैद्धांतिक ज्ञान नहीं देता, बल्कि विद्यार्थियों को स्वयं अनुभव करके समझने का अवसर देता है – जैसे "स्व-अन्वेषण", "प्रश्नोत्तरी", "समूह चर्चा"। इस प्रक्रिया में विद्यार्थी स्वयं के साथ संवाद करना सीखते हैं, जिससे अंदरूनी स्पष्टता और स्थायी सीख मिलती है। मानव चेतना और नैतिकता को आधार मानना पाठ्यक्रम यह मानता है कि प्रत्येक व्यक्ति के भीतर चेतना और मूल्य-बोध पहले से निहित है – उसे केवल जाग्रत करने की आवश्यकता है, न कि बाहर से आरोपित करने की। यह सोच NEP 2020 के उस दृष्टिकोण से मेल खाती है, जहाँ शिक्षा को चरित्र निर्माण और आत्म-प्रकाशन का माध्यम माना गया है। व्यवहार में परिवर्तन की संभावना पाठ्यक्रम के बाद विद्यार्थी में आत्म-संवाद, संबंधों की समझ, संतुलित दृष्टिकोण और नैतिक निर्णय लेने की क्षमता का विकास देखा गया है। यह व्यवहार परिवर्तन, शिक्षा के मूल उद्देश्य – "संपूर्ण व्यक्तित्व विकास" – को साकार करता है।

यह पाठ्यक्रम NEP 2020 के कई मूल विचारों से जुड़ता है, जैसे:

- मानवीय और संवेदनशील नागरिक बनाना
- जीवन-कौशल और मूल्यों का समावेश
- न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व जैसे संवैधानिक मूल्यों का पोषण
- पूर्ण मानव क्षमता की प्राप्ति

मूल्यों को अनुभव से जोड़ने पर बल:- पाठ्यक्रम केवल सैद्धांतिक नहीं, बल्कि आत्म-अवलोकन, अभ्यास और अनुभव के माध्यम से प्रत्येक छात्र में मूल्यों की अंतर्निष्ठ स्थापना करता है। सभी गतिविधियाँ सार्वभौमिक मूल्यों पर केंद्रित हैं:- जैसे: सत्य, प्रेम, करुणा, श्रद्धा, कृतज्ञता, न्याय, सह-अस्तित्व, आदि - ये किसी धर्म, जाति, या संस्कृति तक सीमित नहीं, बल्कि हर मानव के

लिए समान हैं। छात्रों की आंतरिक यात्रा को प्रेरित करता है:- पाठ्यक्रम 'स्वयं' (चेतना) और 'शरीर' के अंतर को समझा कर यह स्पष्ट करता है कि सच्ची शांति और खुशी केवल बाहरी संसाधनों से नहीं, आंतरिक संतुलन से आती है। पर्यावरण और समाज के साथ तालमेल का प्रशिक्षण:- प्रकृति और समाज के साथ सह-अस्तित्व की भावना को विकसित करता है जो कि सतत विकास और शांति के लिए आवश्यक है। सामाजिकता और उत्तरदायित्व का विकास:- 'सामूहिक प्रोजेक्ट', 'आभार लेखन', 'सहयोग' जैसी गतिविधियों से छात्रों में सामाजिक समरसता और कर्तव्यों के प्रति जागरूकता बढ़ती है।प्रायोगिक मूल्य शिक्षा: - मूल्य केवल पढ़ाए नहीं जाते, बल्कि अभ्यासों और आत्म-निरीक्षण से जीने का अवसर दिया गया है।सार्वभौमिक मूल्यों की गहराई से समझ:- पाठ्यक्रम 'स्वयं' और 'शरीर' के द्वैत, सुख व समृद्धि की खोज, और प्रकृति-सहजीवन की शिक्षा देता है।आत्मिक विकास की ओर उन्मुखता:- छात्र केवल जानकारी नहीं लेते, बल्कि आत्म-निरीक्षण, ध्यान और व्यवहार सुधार की ओर प्रेरित होते हैं। पाठ्यक्रम छात्र को ज़िम्मेदार नागरिक बनाने की दिशा में ठोस कदम है। NEP 2020 और मूल्यदृष्टि का समन्वय:राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि 'समग्र मानव विकास' है। इसमें शिक्षा को मूल्य-आधारित, कौशल-सम्पन्न, और संवेदनशील बनाने पर बल दिया गया है। 'आनन्द सभा' जैसे पाठ्यक्रम NEP 2020 के इसी उद्देश्य को मूर्त रूप प्रदान करते हैं।

विकास और विरासत 2047: भारत सरकार द्वारा प्रस्तुत "भारत@2047" विजन में ऐसा राष्ट्र निर्मित करने की कल्पना है जो आधुनिक विज्ञान व तकनीक से सम्पन्न हो, परंतु अपनी सांस्कृतिक, नैतिक और आध्यात्मिक जड़ों से भी जुड़ा हो। 'आनन्द सभा' पाठ्यक्रम, विशेषकर सार्वभौमिक मानव मूल्य दृष्टि, इस संकल्प को शिक्षण-शास्त्र में साकार करता है। पुरातन और आधुनिक का समन्वय: 'आनन्द सभा' पाठ्यक्रम में "मैं कौन हूँ", "सह-अस्तित्व", "सतत् सुख", "स्वभाव और धर्म", जैसे शाश्वत मूल्य भारतीय दर्शन की विरासत से लिए गए हैं, किंतु उन्हें आज की भाषा, शिक्षण विधियों और बच्चों के अनुभव से जोड़ा गया है। इससे पाठ्यक्रम न तो केवल परंपरा-आधारित रह जाता है और न ही केवल आधुनिकतावादी–यह दोनों के बीच सेतु बनाता है। शिक्षा में आधुनिकीकरण का सकारात्मक प्रभाव NEP 2020 के तहत आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, डिजिटल लर्निंग, इंटरडिसिप्लिनरी शिक्षा जैसे तत्वों के साथ अगर आनंद सभा जैसे मूल्य शिक्षा कार्यक्रमों को भी सशक्त किया जाए, तो शिक्षा केवल आर्थिक या तकनीकी दक्षता तक सीमित नहीं रह जाएगी, बल्कि मानवीय संवेदना, नैतिक विवेक और आत्म-जागरूकता को भी विकसित करेगा ।सार्वभौमिक मूल्यों की अभिव्यक्ति पाठों में जैसे - सहयोग, संवेदना, आत्म-नियंत्रण, श्रम का सम्मान, कृतज्ञता, सत्यनिष्ठा आदि मूल्यों को विभिन्न कहानियों और अनुभवात्मक गतिविधियों के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।आत्मबोध और चिंतन पाठ्यक्रम में "मैं कौन हूँ", "सही समझ", "स्वयं में सुख" जैसी अवधारणाएँ विद्यार्थियों को आत्म-

निरीक्षण के लिए प्रेरित करती हैं| आनंद सभा विद्यार्थियों को केवल नैतिक उपदेश न देकर उन्हें अनुभव आधारित शिक्षण द्वारा मूल्यों को “जीने” का अवसर देती है| इससे सिद्धांत और व्यवहार में पुल बनता है|आज के भौतिकवादी समय में यह पाठ्यक्रम मानसिक स्वास्थ्य, सह-अस्तित्व और नैतिकता के लिए एक क्रांतिकारी शैक्षिक साधन बन सकता है| मूल्य शिक्षा को औपचारिक पाठ्यक्रम में इस तरह सम्मिलित करना एक सकारात्मक शैक्षिक परिवर्तन है|शिक्षकों की भूमिका निर्णायक है |यदि वे स्वयं मूल्यों को अपनाएं, तो छात्र भी सीखते हैं|यह पाठ्यक्रम न तो धार्मिक है, न सांस्कृतिक रूप से पूर्वाग्रही - यह संपूर्ण मानवता को केंद्र में रखता है|मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता और समकालीन प्रासंगिकता पाठ्यक्रम की सृजनात्मक रचना आनंद सभा पाठ्यक्रम में न केवल मूल्य बताए गए हैं, बल्कि उन्हें अनुभव करने के लिए मूल्य-आधारित प्रश्न, व्यक्तिगत अभ्यास, और समूहीय परियोजनाएँ दी गई हैं - जो इसे सक्रिय और प्रभावी बनाती हैं|

"मानव सिर्फ सुखी होना नहीं, बल्कि निरंतर सुखी होना चाहता है"

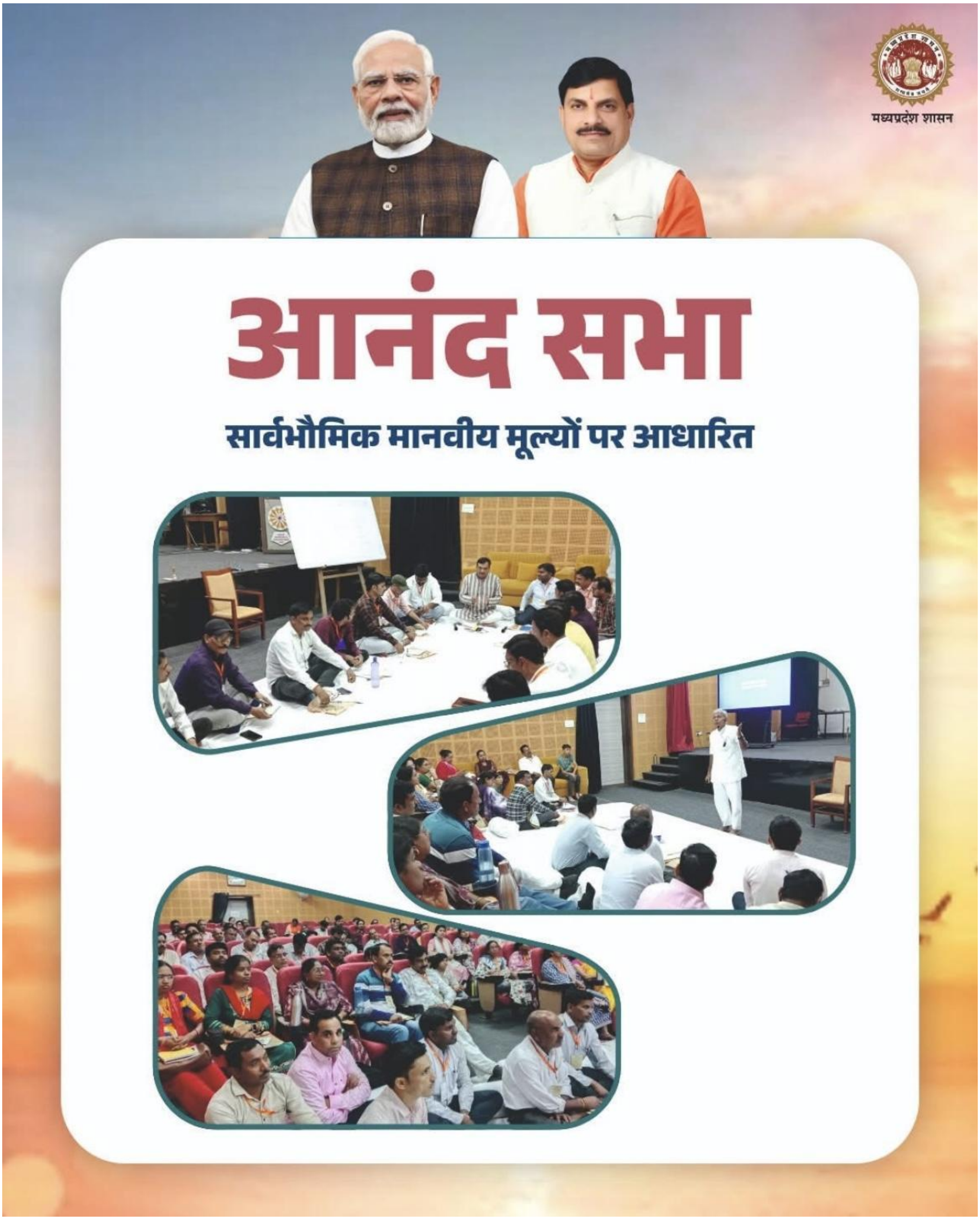
मध्यप्रदेश शासन
आनंद सभा
सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों पर आधारित

मानव के आचरण शिक्षा से जीने की कला ही आनंद सभा का उद्देश्य - पांडे

इंदौर(दस्तक)। मानव के आचरण शिक्षा से जीने की कला है आनंद सभा। अब तक शैक्षणिक दायित्व संभालने वाले विषय विशेषज्ञ अब नैतिक मूल्यों के संवाहक बनने की दिशा में भी अग्रसर हैं। इनके संरक्षण को लेकर भी वे आत्म चिंतन करेंगे और भविष्य में विद्यार्थियों में एक नई अनुभूति की रचना करेंगे।

इन दिनो स्थानीय शासकीय बाल विनय में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय स्कूल आफ एक्सीलेंस में राज्य आनंद सभा विभाग द्वारा छः दिवसीय आवासीय आनंद सभा का आयोजन किया जा रहा है इसमें प्रबोधनकार के रूप में विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ इंदौर संभाग के शिक्षक शिक्षिकाओं को विशेष प्रशिक्षण दे रहे हैं।

यहां प्रमुख प्रबोधनकार के रूप में प्रोफेसर आलोक पांडे लखनऊ अलका वारूडकर भोपाल मार्गदर्शन कर रहे हैं और इंदौर संभाग के खंडवा बुरहानपुर खरगोन बड़वानी अलीराजपुर धार झाबुआ के शिक्षक शिक्षिकाओं की विभिन्न जिज्ञासाओं को शांत कर उनके प्रश्नों के जवाब भी दे रहे हैं वही लीड वालंटियर के रूप में अवध प्रताप सिंह चौहान सुनील पाटीदार मंदसौर काजल इंदौरे खंडवा विजय मेवाड़ा इंदौर प्रशांत प्रिय गौर ग्वालियर अनिल कांबले कटनी अपनी सेवाएं दे रहे हैं।

अपने व्याख्यान में प्रोफेसर आलोक पांडे ने कहा कि व्यक्ति जीवन में विभिन्न स्थितियों में स्वीकृति और सहज स्वीकृति की बारीक रेखा को समझे यदि उसने इस स्थिति को समझ लिया तो मान लीजिए उसकी बहुत सारी मुश्किलें आसान हो सकती है। उसका जीवन और समय प्रसन्नता से भरा रह सकता है। अलका वारूडकर का कहना था कि इस प्रशिक्षण का उद्देश्य प्रशिक्षणार्थी शिक्षक शिक्षिकाओं में सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों से आनंद की ओर ले जाना तथा उनमें स्थानीय आनंद की अनुभूति करवाना है ताकि वैसा ही माहौल और वातावरण वह विद्यार्थियों को भी दे सके।

इस अवसर पर राघवेंद्र दुबे ने भी संबोधित किया। प्रबंधक प्राचार्य पूजा सक्सेना, संगीता विनायका, ज्योति लांभाते केदारे, शाहिद खान ने बताया कि प्रशिक्षण का यह तीसरा चरण है। प्रशिक्षणार्थी राजेश मावी, मनीष बैरागी, प्रमोद नायक, स्वाति मूलगांवकर, योगेश वर्तक का कहना है कि यह प्रशिक्षण प्रशिक्षणार्थियों के साथ विद्यार्थियों का भी भविष्य उज्जवल करेगा।

['आनंद सभा - सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों से आनंद की ओर' पाठ्यक्रम में शामिल]

["आनंद सभा" केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि आत्मिक विकास और सामूहिक प्रसन्नता का माध्यम है]

राज्य आनंद संस्थान, आनंद विभाग, मध्यप्रदेश के निर्देशन में 6 दिवसीय "आनंद सभा" प्रशिक्षण कार्यक्रम

शिक्षक बोले - सबसे पहले यह प्रशिक्षण हमारे लिए जरूरी

प्रशिक्षण संभाग के 100 शिक्षक केवल विषय विशेषज्ञ नहीं, बल्कि आत्मिक और नैतिक मूल्यों के संवाहक बनेंगे

बनेंगे आनंद के संवाहक, सीख रहे आत्मिक विकास के सूत्र

नईदुनिया प्रतिनिधि, उज्जैन: उज्जैन संभाग के 100 चयनित शिक्षक अब केवल विषय विशेषज्ञ नहीं, बल्कि आत्मिक और नैतिक मूल्यों के संवाहक बनने की दिशा में अग्रसर हैं। शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय माधव नगर में गुरुवार से प्रारंभ हुए छह दिवसीय आवासीय प्रशिक्षण शिविर में शिक्षक 'सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों से आनंद की ओर' विषय पर गहराई से आत्मचिंतन और संवाद कर रहे हैं। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य शिक्षकों को स्वयं में स्थायी प्रसन्नता और संतुलन की अनुभूति कराना है, ताकि वे छात्रों को खुशहाल और सकारात्मक जीवन जीने के लिए प्रेरित कर सकें।

प्रशिक्षण में शिक्षक संवाद की प्रक्रिया के माध्यम से यह समझ रहे हैं कि सच्चा आनंद क्या है और वह कैसे स्वयं, परिवार, समाज और प्रकृति के प्रति समर्पित जीवन से प्राप्त हो सकता है। प्रबोधकों के रूप में गाजियाबाद से रुद्रप्रताप सिंह, सिकंदराबाद की लिपिका मिश्रा और पुणे से महेश कोरे शिक्षकों को जीवन मूल्यों की व्यावहारिक समझ दे रहे हैं। यह शिविर अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद की यूनिवर्सल ह्यूमन वैल्यू टीम के मार्गदर्शन में संचालित हो रहा है।

संभागीय संयुक्त संचालक रमा नाहटे की निगरानी में चल रहे प्रशिक्षण का यह तीसरा चरण है। नोडल अधिकारी प्राचार्य मुकेश त्रिवेदी और सहयोगी प्राचार्य बीएमएस परिहार ने बताया कि यह पहल केवल शैक्षणिक नहीं, बल्कि एक सामाजिक और भावनात्मक क्रांति की शुरुआत है, जो आने वाली पीढ़ी को संपूर्ण और संतुलित नागरिक बनाने में सहायक होगी। प्रशिक्षित शिक्षक आगामी शिक्षा सत्र में प्रत्येक शनिवार को आयोजित 'आनंद सभा' में विद्यार्थियों को यही मूल्य सिखाएंगे। शिविर के समन्वयक आनंद विभाग से केसरीचंद पुरोहित हैं।

पाठ्य पुस्तक निर्माण की भी हो रही तैयारी

राज्य आनंद संस्थान इस विचारधारा को पाठ्यक्रम में भी शामिल करने की दिशा में कार्य कर रहा है। प्रशिक्षण के उपरांत चयनित मास्टर ट्रेनर संभाग के 3600 अन्य शिक्षकों को प्रशिक्षित करेंगे, जिससे हर विद्यालय में प्रशिक्षित शिक्षक की उपलब्धता सुनिश्चित हो सकेगी। पिछले शिक्षा सत्र में प्रदेश के 274 सीएम राइस स्कूल और 46 उत्कृष्ट विद्यालयों में आनंद सभा का संचालन हुआ था। इस वर्ष से यह प्रयास सभी शासकीय हाई और हायर सेकंडरी स्कूलों तक विस्तार पाएगा।

प्रशिक्षण लेने आए शिक्षकों के साथ संभागीय संयुक्त संचालक रमा नाहटे एवं प्राचार्यगण। • नईदुनिया

Ujjain- Anand Sabha Training May-2025

[जीवन में संतुलन और प्रसन्नता का माध्यम है- 'आनंद सभा']